A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 290 Subject PHILOSOPHY

Name of MSS सभाप्रकाश

Author हरिचरण दास

Period ______ Folios 170

Script DEVANAGIRI Source Prithipal Singh

Missing Folios 1-6, 88A-91, 143A-144



दोहा परेविषरमोतीधरैविनियरहै उत्ता
वनलाय गहेकरनकुच औरकैयाकीदी
ववचाय ५२ वार्ता एकतियकोकठावत
लायोलोकनिडा कूजीजेहा ५२ परकी
याल० दोहा गु[illegible]करेपरपुरुषकोअनुरा
गहजोनार परकीयातांकोकहेपंडतसो
गविचार ५२ वार्ता परायेपुरुषकेसनेह
कोजोछिपावे ५३ परकीयाद्विधा दोहा
परकीयाहैदोतनकी कंन्याएकसमाह औ
रपोहामानजोपरनेलहैविवाह ५४ वा
र्ता औरनेजोव्याहीहोयसो परोढा आप
नीव्याहीस्वकीयाहोतहैयातेऔरकीव्याही
जोव्याहीनहोयसोकंन्यापरकीया ५५
दो[illegible] कंन्याकेपरकीयतापरकीरहै [illegible]
[illegible]नहवोकीकृपालनसरीरकी[illegible]
[illegible] परकीयतापरकीयाकंथही
औरकोहि[illegible]उरसतहै सरीरकीओट
[illegible]

होलतनहीमेरहलहै ५५ नैवरुषनओ
वलुहनकीवटकमे औरसीघचलनमे
जाकीरुचहै ५५ कैम्पाल० दोहा नवने
वनपटचटकमेऊटकचलनरुचमान
छुवीसुनेपिपकीकपा लाहकेन्पकाजान
५६ कैम्पाऊ० दोहा अंगअंगनखषनवसन
रंगरंगछुवदेन ऊरमुँनेरषनललनरु
१० चलवँवालसमेन ५७ वाली रंगरंगके
दुराछिपके औरमुरकेरुचसोललनको
देषतहै सामान्यवयकुमर किंपाजोवा
लाहैतिनवेसहतहै ५७ प्रोढा ऊँ॥ नरति
सुलानटकुंजमेनरँमालकीछाहै चतु र
रसषीकिहमोलनेननकी नपलबुजाय
५८ वाली नरलनुगाजमुनाकेनट[illegible]वे
तुरसषीकहकेयहजिसापोन[illegible]
सीहै तिचके विलेमपनतैसैवरष[illegible]को
स्याऊ ५८ परकीया[illegible] दोहा गुननिरखी
ललन[illegible]

31 7A

नानायकापरकीयामेजोय ४९ गुनाविवि
धलं० दोहा भयोभविष्यतहोनहैसुरत
विविधरहभोन गुनकरैनिहजानीयेगु
नाभयविष्यात ५० वार्ता भयोहैचुकोना
हेभविष्यतआगेहोयजो ५० भूतभविष्य
नगुनाकोलं० दोहा कोरकहेनहतोरहे
हैगुलाबकेफूल कांटेलगेसरीरमेका
ट्योनयोदुकूल ५१ वार्ता कांटेलगेहेदु
कूलफाट्योहैरहोजोसुरतहैचुकोताको
दुरायो औरआगेमेनजाऊंगीयहीअवस्था
वैहे ईहाजोआगेहोनोहैसुरतताकोछि
पायो ५१ वर्तमानगुनाऊ दोहा आलिंग
नहसिबोकरनआगलपनतियहेर माथ
[illegible]नगहयोइहैलीहोहेर ५२ वार्ता १ प्र
१२ [illegible]पनेकोआवतोहेप्रकेछिपायोसु रही
[illegible] ५२ विरंमालं० दोहा वचनक्रिया
[illegible]वानुरीकै गुडीनमहेन ताहविरंग्या
[illegible]नहैवचनक्रियाप्रवेन ५३ वार्ता

स॰पु॰
८ हैतषीतसषेनमिन ५३ वाकविदग्धाकुं
8 दोहा उरमैंहैरहरिकहतनहतनसषजमुना
केनीर लैनजातनहोहारकोनहलोच्यानत
नीर ५४ वाली उतहहरिकोठाहूदेषकेदधर
सषीवसनकहतहै ५५ क्रियाविदग्धा दोहा
हरिललचौहैचषननेदेषींकिपलुषम
ल आनचतुरजलमेदीयोवेधुजीवकोफ
ल ५५ वाती ललचौहैनैननसोनायका
लषी तानेसषवेदईवेधुजीवकोफलजल
मैदीयो जलकोवनवेध जीवकोदुपहरीगा
कहैहै तासेजहजिनायोवनमेदुपहरि
मैमिलहै ५५ लक्षिता • दोहा षीतप्यान
पियकीमईलषैसषीकहतहै लक्षिताने
वहलक्षिताकविगनकहतसराह ५६ वा
ती औरपियकीजोमईहै षीतभ्या
देपै औरलक्षनरेहनायकाकोव
लक्षिताउ दोहा नलीमईहरिलालगैनैन
निहारेवाल कोदुरतैहियमेंदहै औरेह

31
8A

वटीमालप७ वार्ता और जोमालाहियमे
ऊपटीहैसोईप्रीतकोकहतहै कुलटाल
दोहा जोरतकारनवहुतकुलफिरैपरी
श्रतकाम चाहतजगमेपुरुषमैसोहेकु
लटावाम ५८ वार्ता जगतसर्वकोपुरुष
रूपचाहतहै अर्थात सर्वपुरुषहैजोपय
हवाहे ५८ कुलटाऊ दोहा पावनकेसम
विरुपसषिहोतपुरुषसरूप लोविधविध
मेमानतीकीयेनकरअनूप ५९ वार्ता वि
धब्रह्माकोजोमेब्रह्मा जानती सोकरने
अनूपसुरूनहीकिये ५९ मुदितालं० दो
हा कामसुनेमनभावतीजानतनहोतहुला
समुदताहैसोनायकाँचाहतकरयोविला
स ६० मुरसाऊ दोहा प्रीतमयाहीमेवसे
सानयनगतहीन सुनरेवरकोवावरो
हरषाअनवीन ६१ वार्ता याहीपासके
गावमे गतवार ६१ अनुसुयानालं० दो
हा त्रिविध अनुसयानानारकोकहतसु

5 ग्रं

२१०

४ तीन प्रकार नाम होत संकेत नके जाको षेर
१ विचार ६२ प्रथम अनुसयानाउ. दोहा जो
रै उग्र दुखार है कहत सुनी यहि वान सोच स
रत मे चित पर सो पीत मये सम गात ६३ मो
रे प्रात ही दुतिय अनुसयाना ल० दोहा जो
चिले संकेत को छुटै मिले नहि फेर ताहद
सरी कहत है को विरलव नहेर ६४ दुतिय
अनुसयानाउ. दोहा निय विचार हिय कोन
जो चल तीनम के धाम हू है देवी देहरो नहा
विपन आराम ६५ त्रितीय अनुसयाना ल०
दोहा प्रिय आये संकेत नै है नगई निह वो
४ म लवन लषपद नाह जो सी जी ताको नो
म ६६ त्रितीय अनुसयानाउ. निय रे मन ती
य के छरी कर समीप करता ह [illegible] नेर लो
उराहनो य छे तानी मन माह ६७ वाती कर
के समीप वाह सुजा को कर के सषी को उरा
हनो देत है सो कर मे पहुचौ है यांते जाता
यो कि मै नहीं पहुची संकेत मे नायका विर

9A आवे छटी जिनके पास है यातें जान्यो कि
वा पीय के कर में लिय छूटी देषत है औ वाह
सषी को जो आपनी है तो के निकट बुलाय के
उराहनो देत है सषी ने सुद्धन रई यातें उरा
हनो दीयो ६७ समान्याल० दोहा निसदिन
केलक पाक है रामसी औरन देय सामान्या सो
कहत है जा पै धन हरि लेय ६८ वार्ता जो के
पास धन होय तो के पास तें हरि लेय ६८
दोहा गुनी पुरुष सों रीझ न ह निगुनी सोन
विगार धनी पुरुष मन हरन को औगुन दिया
वलसार ६९ वार्ता. सार जे है कछ कुचादिक
६९ सुष सो धन जो को मिले न सकर औ रग
वार सो जन यां सोर न कैरै जा के नाह विचार
७० वार्ता जिन पुरुष को सुष सो सुषेन ही
धन ... आवे और जो वो रहै य इत्यादि ७०
दोहा मान आदर है करत है जहां लेन धन हो
य लाज न सीष न षहना सा सामान्या निय सो
य ७१ वार्ता मान आदर करते ले के कर्ष न हो

हीकरनहै जहांते धन लैनो होत है ११ सा
मान्या दोहा जो कीयान कहूं सुनी जो ल्या
यो बहु दाम लीजे ता हरि रूप के कीजे साई
काम १२ साधारन भेद दोहा अन्यसंभोग
दुःखिता वक्रोक्ति गर्विता जान मानवती सुव
धादि का भेद लहै यहि मान १३ वार्ता तीन
भेदको सर्व ही नायका ग्राम होत है १३ अन्य
संभोगदुःखिता ल० दोहा पिय जानी यसोर
न करै ताहू देष अनुभाय अन्यसंभोगदुःखित
कहै हरि कविता हूं बनाय १४ अन्यसंभोग
दुःखिता उ० दोहा नियतो बिन पिय कौं मको
करहै तनमन लाय येजी रोप हरी घरी अ
ह खेद अन्हाय १५ वार्ता पियाके पास जा
यको संदेस ल्यायको ह्यार पियाको कोप
जो मेरे हितके है सो तेरे बिना को न करै १५
वक्रोक्तिगर्विता ल० दोहा वक्रउक्त कै कोग
र्वि जेहतोको द्विविध विचार प्रेम रूप ऐश्व
र्य तो को नाम उचार १६ वार्ता वक्रो

10A की प्रेमगर्वितालक्षण दोहा गर्वकरै प्रियप्रीत
कौ प्रेमगर्विता होय रूपगर्विता लक्षंगरू
पकोगर्वतेरूपगर्विता सोय ११ प्रेमगर्विता
यथा दोहा प्रीतमकीयहिरीत सखिमोह
कहीनहजाय उऊकतहोतिगहीरहतपर
लवियोगनसुहाय १२ वार्ता मैउऊकत
होहटावतहो १२ रूपगर्वितायथा दोहा
मोहिपिजावतपियसखीविसहसकरत
कलोलमोललयोकह मोहियोतिलल
सतकपोल १३ वार्ता मैकहतहोयहवाती
मतकहावेमोकोयहीवार्ताकहकहकेवि
जावतहे विवामोहकहतामेरेसिजावते
हुयासी अर्थात्कैमेकुनकोविजावतसीहो
वेसोसोयहीहसकेकलोलकरतहे १४
जावतीत दोहा पियनिजअपराधहि
लखेजाहक्रियातेसोय मानकहतहैताह
कोजोपेऊनजगहोय १० वार्ता अपनेअ
पराधीपियाकोनायकाजिसक्रियातेका

गर्वकरै स्वामी
ऽऽऽताकाऽऽगंकार
जाकोहोय
सोरूपगर्विता

जावनेपियका
जोअपराधहैति
सकोलखनव
लीजोक्रियाहे
काहूचिकाने
चेष्टाहैसोमान
सकहैपन
वार्ती ११६

११ जिसचेष्टानेदेषे सोजोनायकाकीवासमै
॥ कीचेष्टाहैतिसीकोमानकहतहैं तिसचे
ष्टासहतजोहोयसोमानवती किंवानाय
ककीजिसकृयातेनायककोअपराधीजो
लषैसोमानवती ८० मानभेद दोहा ल
घुमध्यमगुरुकहतहै मानजुतीनप्रका
र ताकेभेदजुकहतहैहरिकविकरतवि
चार ८१ लघुमानलं० दोहा परतियदे
षतपियलषैसहैनसकैअनषाय घग
टहैतनलघुमानसोख्यालकरे छुटजाय
८२ वार्ता अपनेपीयकोपरईस्त्रीकीन
करेषतेकोदेष ८३ लघुमानउ० दोहा
चितमेमानगयोचतुरलषदेषीतियके
न दूजेसराहतसिसरहैहरिउनहेसक
सोवसेत ८४ वार्ता केलनेकोईऔरति
यदेषीतोकोदेषकेनायकाने मानगह्यो
सोनायकमानकोबूझकेसमझकेवसेत
कोसिसरकहकेसराहनलगे नायकाने

वहलघुमान
अपरस्त्रीकेर
प्रन्नते ॥

11A

हसकेकह्यो पहिलें तो वसंत है मान छूट्यो
मध्यम मान लं० दोहा बात कहत सपनार
मे परतिय को लैनाम उपजै मध्यम मान
मध्यम वे तीकर घी रत्ना तहें ॥
हरि मध्य विनय को धाम ८५ बाती आदय
रतें प्रनहू भी जानीये वह मान न तो वहु[illegible]
विनय चाहत है न थोरी चाहत हे मध्य वि
नय चाहत है यातें मध्य विनय को धाम कह्यो
सीपीके बंजके
८५ मध्यम मान ३ दोहा कहत कछु कप्रि
और त्रियाका किर कहत है पास मकर मैं क
यनारि को नाम गयो मुष आय भ्रम मानो के व्यां प्रका
तो पास प्रत्यो
सोह ल्यो वेनी कर निछुवाय ८५ बार ना
प्यारी नायका को कछुक बात कहत हुते ना
मे और को मुष तें नाम निकस्यो किं वा किसी
प्यारी नारको नाम निकस्यो यातें मान भयो
[illegible]व मनावन लगे कहन लगे यामे तुम भ्रम
मा[illegible] सत्य नही है भ्रम सो नाम न कस्यो है जो
पहिल[illegible] ही मानत तो आपनी वेनी मेरे हाथ
न छुहाय के मैं ने गुंथलैते वो मे तुंग रखाय
जानते हो यातें मान छुट्यो वेनी मे [illegible]प्रिवे

स॰

मान्यात्रस्मात पैवतिर नकरे॥

१२ नीचावर ८५ गुरुमानल॰ दोहा अनमन

क्रोध केर

12 हूंपलरनकरेलहनलखेरिसाय कहत

नादगुरमानेसोपापपरेछुटजाय ८६ दो

जो पातकहा ध्वहें तौर प्रापात है॥

हा रसाभासहूषनकहेवरनेमानअसाध

सषीललनवहुजतनहूपायपरेनअराध

८७ वार्ता जोमानकोअसाध्यवरनीयेक्या

सषीयाकेअनेकजतनोकरकेऔनायक

केपायपरनकरकेभीना नायकाछमनकहे

यमानतजकेतौरसाभासहूषनहै ८७ गु

कोन्हाकार केचरणों की — पहाती

रुमान ३॰ दोहा जावककीकलैलाटमैंलो

चनपीककपिलान गहोमानरूषमानुजा

वायपरेहरिआन ८८ वार्ता पीरावाज

नेमानगह्योक्याधास्योहुतोयाछमयेहरि

वायआयपरेयातेछूटगयो ८८ ग्रनपल

नल॰ दोहा षेलकैलाहिमैंहोनजोइनयनो

मेंसोंमान हरिकविलाकोकहतहै ग्राह

ईसोंजाने ८९ वार्ता षेलदेकलैसमेजो

मानहैजाय सोछनयमान ८९ ग्रनयमा

12A

न ३० दोहा आवसानक पेरमे सारद ईकर

डार लीनी ओक सस कह्हियजयतुवक

हलतुरार २० वाली एककोआवको ताक

हुतोएककोसानकोहुतोसोआवसानके

रातमेकपेरपरगयोक्याउलटाउपर

गयो नायकसोकहेआवपरैहेनायकाक

हेआवनहीसानपरैहे इसपेरमेनायका

नेपासागेरदियोहापतेमानकोपो तवना

यकनेह्रिरेमेसेकासहतहोयकेकिमान

वनीनहैजायपासेकासोओकमेलेलई

कहोतेराइरावपसोहेतुहीजीनीहेह

महारे २० कविन्न कैवैसोलेचोपररमन

हेनवालेसेगप्पारीकहेसोरहेपिआरोक

हैसोलहेकुंजमेपनयमानगहिआविरो

सनमेहईसारडारहोरहियमेसेकातहे

वैरी हरउनेएकहकतेचरनचिनेऊप

रदिवाईदेममनमुसकातहेस्यामहम

प्यारीआनिआतुरवुझायेजासोजीवन

लीय हमनापा

१२ कीआसांनासोपासाकहावातहै २९ बार
13 ता कवैकिसीसमैप्यारीकहतहैसोरहप
रैहैप्यारोकहतहैसानपरैहै नवमानग
हकेप्यारीनेसारपासागेरदई सेकाकरत
हैकिमानवतीनहैजायप्यारेकेवाअपने
चरनोकीओरदेषतहै जेसारप्यारीनेगेरी
हैतिनकोरसकेस्याम त्यायेहै आतुरसि
नावीराधाजीसमजायेकिनमहीजीतेहै
योंकहमानछुडायो सोआसांजीवनेकी
आसाहैतासोंपासाकेहारजीतकीकहा
वातहै ३१ अथसेजोगसेचारीमानलं०दो
हा जोगसेचारीमानहैसंपरसोकरसंग
विनय मिहे
अनुनयपर्वसो लहैटगटेकलाअनेग २
वाती सैयापरकेसंगसो जोजोगसेचारी
सेपरकेसंगसोसंजोगसेचारीमान
सोकौनसोहैजोअनुनयमनावनेतेटर
वपहलेहीछुटजायसोहै ३२ संजोगसेचा
रीमानउ० दोहा मनकवोरकररावहौक

13A

रहै मान प्रकार जो सखि नै नन काम है रह

यम धुरी धार ९३ वानी धारते प्रवाहली

जे बहुत को अर्थ मनाय वे ते प्रथम है तु

च्यो यो ते से जो गस वारी मान ९२ अष्ट ना

यका वर्नन दोहा पूर्व जो स वनायका कही

आठ विध होय तो को हरि कवि कहत है घर

ग प्रथम त जो य ९४ नायका नाम दोहा नारि

विरहनी खंडता कलहंतरता नाम विप्र

लब्धा उत्कंठता वासकसज्जा वाम ९५

दोहा स्वाधीनपति अभिसारिका पाथिल

आठ प्रकार हरि कवि लक्षन कहत है उर

हरन सु विचार ९६ विरहनी लं० दोहा

तीन कालको विरह है जो उपजे तिन काल

सो जामे हरि पाइये विरहनि है सो वाल ९७

वार्ता तीन काल भूत भ विष्य वर्तमान

सो ते रहे जामे पाइये सो विरहनी ९७ विरह

लं० दोहा पीय पीय सो वि छोर सो विरह मि

लन की आस पलक आर रे कहत है जो को

१८ बृजमेवास ९८ वार्ता विछेर वियोग हो
14 ना पीयमिलनकी आसार है यहकहक
रुनारस सो वचायो पलकलें आररेके विर
हहै पलकोंतर दिनोंतर मासांतर विरे
सांतरइत्यादि किसको विरह होत है जाको
बृजमेवासस्थान है राधाकृष्णको परस्पर
९८ नायका विरहनी एक तोके तीन भेद प्र
षितपतिका जाको कंत विदेस गयो होय प्रो
ष्यत्पतिका जाको कंत विदेस जायगो आग
तपतिका जाको कंत विदेस को चलत है नौ
नायका रसनायका काहेको मानत है आ
गतपतिकनायकाको ई कहत है विरहनी
में मो नहीं सो संयोग नाहे यही अर्थ दोहा
पहा ती त पेइ
मे है दोहा विरहि भेद हरि कीजी पेकी में
नारिन भेद आगतपतनका कहत है दूसर
नहां अथभेद ९९ वार्ता विरहको भेद के तेना
रिनको भेद न कीजे नार विरहनी एक ही है
औरत आगतपतनका जो विरहनी में कहत है

14A तहाँ दूषन है निषेध ९९ दोहा जथ्यप मे तुव मात्रा
आरको कहे प्रमान हठ पाय संचारी तहाँ मा
नी धेई है पैर न लगाय १०० दोहा पतीमा
पे अनिहरषहै को ईवरनै शोक सवक विके
मन ले परे दूषन न तहाँ अशोक १०१ वार्ता प
त के आवन मे तो हर्ष संचारी होत है तहाँ जो
शोक वरनै तो दोष है अशोक पुष्ठ १०१ दोहा
विरहन तीन प्रकार की प्रोषत प्रोष्यत केत
प्रोषन है यह भांत ते त्रिविध लषो समसेत
प्रोषितपतिका ॥ दोहा सारस चंद लषें जरें
सषि वेरन रे टार स्वास वेर सो होत जव ला
गत मे रव यार १०२ वार्ता जरत है मेरे अं
ग औ मेरे पवन लगत ने मेरो स्वास तक है १०२
॥ कवित्त ॥ जव ते गमन गिरधारी मधुपुरी को
कीनो तब ते मनो मदन की फौज की चढाई है
नाँचत मोर सोर चातक चकोर करे किधो
नौ की जीलनीलन वेरी जनगाई है उवत ही
घटा घटा तन जब ली कहि वाल पूरी विस

सं०

२५ अरी अरी आनु दिपराई है हरि पे चवान कि
15 लेप च वामवासी ह्रज जारवे को मेघ मिस या
न सकताई है १०५ वाली मधुपुरी मथुरा
जीनकी गीलगाया घटाके उठेनेई ऐसे वाला
कहेन है हरि कवि पेचवान को प्रसो मिलवे
मघवा इन्द्र जो है प्रवासी तिसने ह्रज के जार
वे को मेघ को मिस करके आनस अमित उठा
ई है १०५ अन्यच सवैया अलही अलकी रु
लकी छवि रैसरिता छलकी चहु ओरनसो
धुनि पाई है चालक के गलकी जलकी हुल
क.व होनहू लोरिनसो हरि मोहन सी कछु मोह
नमे हिय हालन पो नऊ कोरनसो घरके धु
रवान के धावन सो दरकै मुरवान के सोरन
सो १०५ वाली झलन टगकी पपीहे की घो
त्रिमी पैने पाई है अपी कि पिपी है वो लगै है
मोहन नेह नहीं हिय व्याकुल होत है पो
न के वेग चलन सो धुरवा मेघ हिय धर
कत है औ दरकत फेटन है १०५ अयन

15A सवैया चेरन फूल की माल सुगंध सषी गन
देन सहैं मद गेरन भरन नाहकी नैन हसी
न हि अषन भौन के काज न नेरन अषधो वाल
सो भोगी विरानन को नैन को कहै नीरन छे
रन हौर अटा चढ के हु नही हुन मोषन भ्रं
कुरोष न हेरन १०६ वार्ता सषी गन सषी
यो के संकह अषनो के औरु घर के जे काज
है तिन को नहीं निवेरन अपने नसो अषमही
पहरत है ना काजे ही करन है अषने नोमा
नो विराही भोगी है वाला सो नैन को क्या पो
री भी नीरन ही घेरन सरीर को अपनी नीरन
ही परन जो नसे बडे छेकन वारे होन है तिन
का नाम मोष है मोषन मै भ्रंको है औरु रोष
न मे रेषत है १०६ अन्यच कवित्त हियमे
हु लास धर फूले है पलास मेन आमिल
वैसेंन ऐसा मिलके लीनो है सषि औक
पोन कीर कोकिल समीर धीर रेषरत मा
री लोकन को कवित्त रीनो है चेचरी कप्यारे

१६ वहुचकूमेपगायेहरि हेरराग महिमाविरा
16 गमयोछीनोहे वेधवेको जोगीनवियोगीन
केमावसकोमेजरसोमानोसरपेजरसोकी
योहे १०७ वाली मेनजोहेकामतिसनेश्रा
पिलहाकमजोहेवसेनसोईनापलासादि
काकेसामलकरकेअपनेमेगलीयोहेकि
वामेनहाकमहेतिसनेइनापलासारकोके
सामलकरकेवसेनकोअपनेनाललीयो
हे कोकसाकूमेचितदियोहे रागगायवेके
छेह वेरागछीनछीनभयोहै मेनुरजोहेसि
टयातिनासोमानोसरपेजरतीरनकोपिज
रासमकियोहे १०७ श्रोषनपतिकायषा रे
हा कह्योलालजववालकोचलवेकोपर
सेग सोचसरीरनमेचितपरयोसनोकामति
वेग १०८ वाती परयोदेहरीदीपक [illegible]
कोतिषगतरकससनोपरयोतनके स्त्री
केहावभावादिकजेहैतेकाममंजेवानहे ते
स्त्रीकेविषेतेदूरह्वैगयेयातेकह्योकाम

16A कोनिषेगमनसोपरयो १०८ अन्यच्चकवित्त
गमनविदेसकोललनकोपर्योहैकानसु
दबुधसोचकीसरिनमेसवैवही छिनही
मेछलाभुजमूलकोभजनलागेभूमपरी
भूममेसषीनिवाहीयागही सोधकेसजीव
नअचलनविचार्योहरिनासनविरहलौं मागि
यदेहमेंरईसही वालनिकोंवीचप्रानसे
कलेसहेनयानेनहीजातुगोकसोनकसो
जातुगोनही १०९ वाती भुजमूलकहनने
सर्वभुजाहीलीजिये तिनकोभजनअंगी
काररूगेकरन नवनायकनेअपनोअच
लनक्यानहीजानाविदेसकोयहीसजीव ६
नवृतीसोधकरकेविचार्यो अपीकिजोह
मनजायतोयहजीवेगी हमारोगमनहीसु
नकेरासनजोहैविरहकीलायअगिनिम
नेन।यकाकेतनमेमहीदेरईहैसहीकरी
नेप्रमानवानहोतहै सोयहिप्रमानवान
हैनहीवचेगी अवयाकेसंकनजोहैप्रान

स०

१२ सोबालाकेबीचखेलरेकोभीनहींसहारे
17 गेयातेसत्तावीनहींजातुगोकह्यो औजा
तुगोनहींयहनकह्यो नायकनेविचारे
जातुगोइतनेकहेतेप्रथमप्रानननिकस
जाय यातेजातुगोनहींयोनकह्यो नहींजा
तुगोकह्यो प्रथमनहींपर आयो जातुगो
यहसबप्रथमनहींआयो कराचितजातु
गोयहप्रथमकहेप्राननजाययोते किं
वासंकतजोहैनायकतिनोनेविचारयोवा
तनकोबीचप्राननहींसहेगे औरनहोमा
व १०९ प्रोषतपतिका उ॰ दोहा जानतकछु
कर्‌रफिरमिलनविछुरनहियमेसेक
६ विनवचनविधसोनालगेतियनन्नुतजन
कलेक ११० वार्ता दुरकोदूरअर्थकीजे
कुछकहूरजायकेनायकफेरतियकोमि
लनहै विछुरनेहृदयपहिसेकहेकिनहै
मरनजाय बहुसीपहिवेननीकरनहै
तियकेतनतजबेकोकलेकमोकोनालगे

17A ११० दोहा विरहविमुग्धाहोय उठेतोकोय
हीसुभाव भीतरलहेसवैस्याकरिनहसके
लषाव ।।१।। वार्ता मुग्धाविरहनीकीअवस्था
भीतरहीरहतहै सोकोप्रगटलषावनहीहै
न जैसेअवस्थाकोप्रगटलषावनहीतिसी
विधमुग्धामेप्रज्ञाबुधकी सामग्रीकाहा
वभावादिकतिनकोभीअभावहै यांतेमु
ग्धाकोधीरादिभेदनहीहोयजैसेचित्रका
रचित्रकोभावहै यांतेयहभेदनहीचाहीये
ये प्राचीननकोमतनचल्योआयोहै तोसोलि
षेहै ।।११।। मुगधाविरहनीउ॰ दोहा हियमेपा
वकाविरहकोराष्यो [illegible]जरबाय करपरस
ललनकीतपतं कठने सारनंजानीजाय ११२ वा
र्ता हाथकेलगेननकीतपतजानीजातहै
सोनहीजानीजात ११२ विरहकीदसा दोहा
अ[illegible]लाषाचिंताकहेसुमरनअरगुनगा
न अरउद्वेगप्रलापपुनचित्तभ्रमकोजा
न ११३ दोहा सेस्वर जडतामरनपुनयह

स०

१८ दसरसा विराह द्वै हे रसकी हानयोमरन
18 ई हानसराह ११५ वाती विरागह घोटेराहकी
सा हुरे हे गकी पायह अर्थ मरनरसाको
ई हानसराह क्याना लउनमगन योतेरस
समाप्रपुन की हान होतहै ११५ घेउनालं॰ दोहा और
रानहेत ठौर रसकरकहू आवै छीनमपास लहन
लघसो घेउनारिसवसहोयउदास ११५
दोहा कहेवानजो चितचढे अनुचितउचि
तसमान सोई द्वै जो उनमानजरिसउनम
वान ११६ वाती जो रिसकोनजकेउ न्नमवानी
कहे सो उन्नमा घेउना होय ११६ दसा दोहा
चिंताही घेस्वासधर मनमे द्वै संताप मोन
गहे तो कोरसा अस्फुट करे अलाप ११७
वाती चिंता होयही घेस्वास होय औरध
रसरीर मे औरु मनमे संताप होय किंवा
चिंताही घेस्वासको धरके मनमे संताप हो
य अस्फुट गुन अलाप वचन को करे ११७
घेउना ७॰ दोहा नैन [illegible] सो लनको

18A पेश्रायेतियहिगत्रान ॥ चतुरचाहमुषरोष
कोप्रगटतराख्योगान ११८ वार्ता चतुरने
नायककोमुषरेषके अपनोजोहेक्रोधति
सकोप्रगटनेकोगानमेराख्यो प्रगटहोन
नहीदीयो ११८ उत्तमाषंडताउ दोहा रैनउ
नीदेपटपलटआयेनिकटविहान तउ
नयोमनभावतोतियहियरूपविधान ११९
वार्ता विहानप्रात तोभीनायकाकोनायक
रूपविधाननहीनयोक्यांकुं लग्यो कि
वारूपविधाननायकतियकोमनभावतो
नयो ११९ कलहांतरतालं दोहा हितक
रीपतिकोतियाकोपकरैअपमान नाह
गयेपछनायतोकलहांतरतामान १२०
वार्ता हितकेकरनवारोजोपतहेताको
१२० दशा चौपई अमनसेनायकलापउ
[illegible] मोहज्वरारहोनदुषवासह रसा
तियाकीअसीजानहु कविपेउतसवयाह
[illegible] कलहंतरताउ दोहा पियहित

स०

१९ विनतीकरतहो रूषे रिये जुबाव कियो औ
19 घनो सीसलै सहो कामको राव १२२ वार्ता
विनतीकरत हुतो मे जुबाब दीयो रावराउ
किवार वाउ १२२ विप्रलब्धा ल० दोहा जो सौं
करे संकेत सहेट पियताके ढिग नहि जाय ताहि वि
प्रलब्धा कहे सो दिन मे अकुलाय १२३ दृष्टा
दोहा ऊंची सासल उरा स हियं हरे सखी को मा
न आने वे रं अचेतन तो ता कीर शानु जान
१२४ वार्ता मानआदर रहे दूर करे का ति
है १२४ विप्रलब्धा उ० दोहा मनो लषसंकेत
कोनेन चरनकरनार कहन कछु संकोच
वस राषत कोपसंभार १२५ वार्ता कछुक
कोपको कहत है औ कछुक संकोच केवस
संभार के राषत है १२५ उत्का ल० दोहा पी
तमको नेकारने आये न हि संकेत तिनाजो
मन मे करे उत्का कोयहहे न १२६ दृष्टा दोहा
रोदन के पाखाल गुरु जे अवाई तन मेर र
मन विनासे ताप यहि कहे नर शाहु अजोर

19A १२२ वार्ता रमनननायक दुषकोजोरहोय १२
उत्काउ- दोहा चितनहरिआयेनहीगयेश्री
तकेपास गाननमोरजसुहातनतिय छलक
रलेनउसास १२८ वार्ता चितनचिनमरी
है कोईछलकरकेउसासलेनहे किकोई
जाननजाय १२८ वासकसज्याल० दोहा
निश्चेदिनमेरोकीयोपियआवहिंगोआन
वासकसज्याजोरचेसामग्रीरतकाज १२९
वार्ता यहिदिनमेरोनिश्चेकियाहयोहेश्री
जीपियआवेंगे १२९ दपण दोहा अभिलाषा
सषिसोहसेदूतीसोअनराज सामग्रीरत
कीरसामग्निहारफिरजात १३० वास
कसज्याउ दोहा चतुरछपायसषीनिसो
साज्योसबैसिंगार अभिअभिलाषमरेसब
बेलोयनकोपनहार १३१ वार्ता अभिअभि
लाषमरेजोनेत्रहैतिनकोकोपनसोहार
कीओरदेषतहै १३१ स्वाधीनपतिकाल०
दोहा जोकोपतिरसगुननसोतजसमीप

सामग्रीरत सज्या २

२० नहिजाय स्वअधीनपतिकाकहे आज्ञावस
20 गुनपाय १३२ वार्ता रनधीनकेकिंवासंभो
गकेगुनो सोवआजाकोधीनमाजिसकेपा
सनिकटकोनजकेनजाय जिसकेगुनपाय
केजिसकीआज्ञाकेवसहोय १३२ रथा दोहा
वनविहारथलकामकोउनमवमहाहेकार
मिलेमनोरथपहरस्नाकहीकरनसुविचा
र १३३ वार्ता वनविहारादिकसो जिसके
मनोरथमिलेहुयेहोय १३३ स्वाधीनपतिका
उ. दोहा इगनननेजनचातुरीवचननसुधा
समान कहानमउमोमोवेधेहरिननमन
रैयान १३४ अभिसारकाल. दोहा आपजा
यजोकंतदिगकेनहलेहबुलाय ताहकहे
अभिसारकाजोपेउनसरसाय १३५ रथा
दोहा केपक्षधवलनिपुननासमयसरूप
सिंगार परकीयाकीयहरथा स्वीयाकोन
विचार १३६ दोहा परकीयाउरलाजवस
स्वीयामेसंकोच हासीमेकछुलेमहैवेसा

20A

मेमनिसोच १३६ वार्ता रामीमेंलाजउ
रलेसमावहोय १३७ अपपरकीअभिसा
रकाल॰ दोहा लाजनेनिजवधुमेंछुपे
उरनघनकरमौन घूंघटपटदीरघरचे
परकीयाकोगौन १३८ वार्ता अपनेननमें
छुपेकोलेकुरजायलज्याकरके उरसोम
घनकरहाथमेहोय औमौनहोय घंटोघू
घटकरे १३८ परकीयाअभिसारकाल॰ दो
हा प्यारीअभिसारीचलीसूरेस्यामसरीर
छुपीजातनिजगातनेमेकरनेभुरधगधीर
१३९ वार्ता हाथमेंनुपरहेपगोमेधीरना
हेरहैचलनहे आहटकेडरसो १३९ दोहा
जहांलाजडरप्रेमअतिरसबरषेअधिकार
नहिकोजहंनहोंयियियाकुलविनरोक
अगार १४० अपस्वकीयाअभिसारकाउदाहर्ने
दोहा गुरजननवेगेहमेननेरदेपनेलजा
हेलकुसकुचपगधरनमगकेछविसवेस
राह १४१ वार्ता गुरजननेगेहकेवीचदेम
र्यादिकोसोकेमनवनवनी औजेवरमसान

कीहोतहै तोलेभी लाजनहीं आवत जप
प लाजकोहेतकोईनहींपरलोभीमगमेल
ज्यासोचरनधरतहै १५१ सखीअभिसारका
ल० दोहा मदनतेसारीवातनहि आनेरचि
कसेनेन सखीगनकछुचरसोहोनचले
वहिगोन १५२ वाती सारीवातसुपनेनाहि
कसे गनचालवाअवस्था गेनगोनकोना
म किंवामार्ग १५३ सखीअभिसारकाउ० दोह
उमकचलीचितईवहुरंचतुरनाहकेमेल
कहनवालनअधरेरहनमदवसपमैमनछै
ल १५३ वाती उमकचमत्कारसो चतुरजो
हैनाहियनीतिसकेमार्गकोरेषनीहुई
१५३ अथ सामान्याभिसारकाल० दोहा
ऊजेलभूषनवसनअरुनतुरंग[illegible]भवि
होय आनंदहाससुआसधनवेस्यागोनै
जोय १५४ वाती आनंदओहासस्रीधन
कीआसहोयजाको १५४ सामान्याअभि
सारकाउ० दोहा हरषहासधनसनधरै
[illegible]परफनकार जानमनो[illegible]

को छूटतहै किलकार १५५ वाली मानो
कामकोहैघोराजातहैताकीकिलकार छू
टतहै १५५ दोहा अंधकारदिनचोरतीक
रैजुतीयअभिसार परकीयासोजानीयेये
तेतीनप्रकार वाली श्यामाभिसारकाशुक्ला
भिसारका दिवाभिसारका एतीनभेदक्र
मसोजानीये इतिअष्टनायका अथउत्तमाल॰
दोहा हितनकरैपियजाहसो सोहितकारी
नारि ताहेउत्तमाकहेंतहैउत्तमरसविचार
१५६ वाली प्रीतमपियसो हितनकरैतीय
प्रीतमसोहितकरै १५९ उत्तमाउ॰ नषछत
छातीमेलसे अधरैकाजररेष तऊतिया
अनषानतरुप्यार करै वि स ४ १६० मध्य
मा ल॰ दोहा हितअनहितकारी ललनते
प्रीतमसोहोय जो तियताकोमध्यमाकहिभा
षतसबकोय १६१ वाली जोपियहितकरैसो
तीयहितकरै जोपीयअनहितकरैसोतिय
अनहितकरै १६२ मध्यमाउ॰ दोहा कर

स०

२२ पीकपलमेविरषतुनवैवीमुषमोर हसी

22 नवेछलसोकरीकाहसोहकरजोर १४८

वार्ता पलकमेपानपीकलषकेरिसभई

जेवछलकरनायकनेसोहकरीनवहस

प्रीतम

परी १४९ अधमाल॰ दोहा नायकहितक

रैसहानियकोदुहसुभाव अधमानाकोक

हततहैजोजानेरसभाव १५० वार्ता नाहक

विनागुनाह १५० अधमादु॰ दोहा नाहके

रिसविपसोकरेननियनहरे उवार पाव

नजावकरेनजोवाधनकेप्रसवार १५१

वार्ता केसापियहेजोतेरेसिंगारकरनहै

१५१ दोहा उत्तमादियहिभेदसेनवनिय

तीनप्रकार बुधवललवनसोलषोकिये

नेमयविस्तार इतिनायकाभेद अथसषील॰

दोहा नेहचाहविनजोकरैसुषदुषमेंप्रेमा

य समवयमनकीसवलषेसषीताहहैयेर

य १५२ वार्ता जोचाहकेविनाहीसनेहकरै

सुषदुषमेराकहीमायसुभायसैसनवेत

22A

समानउमरकीहोय १५३ अथप्रियसषी
नर्मसषीलक्षन एकहू दोहा प्रियसषी छ्वा
यालोचलेसुरसननर्मरलदेष कविगनता
हसराहस नर्मसषीसुपरेष १५४ वार्ता जो
रूपननकीछायाकीन्याईचलेकासंगहीर
हेसोप्रियसषी औरनायकनायकाकोसुरन
नमेदेषकेजोउनकेपलेडेमसोनर्मकोमल
होयचलेकोअर्थीविचारेअर्थीकिरहेकोमल
सोनर्मसषी कविगनसंबोधन १५५ अथ
प्रियनर्मसषीलं॰ दोहा प्रियानाहसुषसै
नमेसषीरहेनिहठाव प्रतिमरननसोंआ
पनोप्रियपरमविनाव १५६ वार्ता सुषसो
आपनैप्रतिमरनकाआपनेप्रतिविंवसी
होय सोप्रियपरहेहवैपहिलाजिनकेवद
नामहैवाकोव्यासोप्रियनर्मसषीहै अथ
सषीकर्म दोहा सिषभूषनपरहासश्वर
बहुविधयाकेकर्म विरहनसवैसंछेपकछु
वरनतहैहरिसर्म १५७ वार्ता सर्मश्राम

पृथीकननहै मैंस्त्रिनाउ तौ न्हारगई

२२ न अपासिता कहिनै सौधरेनहारीरमा

23 औरकौगुकारीनै काचितमें विचारीनाह

एनिकनिउरहै सोइ निरधारीजामें हूंदुष

नारीं अवलागनपियारींपरिंनामनतु

धरहै गहनसैमारीतौसुधारीसवकहै

पारौएरीकहापीछेपछनायेमीडुकर

है हरिसोईयारीतजगहरींगरववारी

श्रीलमनजानेहीलींआगकोअनरहै

१५८ वानी अमुकीकोश्रीनकीयपहहा

लेनपेहै अैसे औरकी अवस्थाभीनेको

सुनाई एतकहनकी सोई वानी निरधा

रीनिश्चैकरीहैते नेपरनामअंतमेनही

नीकीहोयगी जोतेमेरीसिद्धाकोमनमें

गहनहैपकरनहै तौतूसेमारी औस

र्ववातसुधारीतैने किंवामेतोकोआग

मेपरनतेपकरनहौ जोयहमेरीसिद्धा

सेमारीकिंवातैसेमारगईमैंतेसुधारी

अपनीवातीं औरमेलोकोसर्वनहया

23A

रीकहहर्इहेवानीपीछेनेकरहाथनको
मलकरकेपछतायेक्याहे अर्थकिकेरह
छुनही हरिसोप्रीतनजकेगर्वकोगह्वेय
कर हेवारीवालक अन्तरसार याकोजि
तायोकिसभालकेनेहकरीहृद हैके कि
वागर्वकोतजकेहरिसेप्रीतपकरगर्वसो
जोतेप्रीतकरीहेसोयाकोप्रीतमतिजाने
यहिअग्निकोमारहे १५८ सवैया कुंजन
जेयेतरुसुकुमारगहेरहीयेनवरीसो
सेकाई प्रीतजिवानीसोसेनववहोवलरा
तमेजोनरहेतोमलाई नेचनचावन
छाडोकहेहरिसाननमानीयेतोहमताई
राजीकरेगुरलोगनकोसुतधीसिषदेन
करेचतुराई १५९ वानी यासवईयामेत
लेगेछेपीवानकविनेप्रगटकरी सीष
देतिकेचतुराईरचेहे रेपअर्थकीवात
कहतहे नायकाकोगुरजनसेवैवीरेष
केनहीचतुराईलियेनायककेमिलाप

स०

२८ कीवानकहेहे प्रतच्छतोऐसेकहतहै कुं
24 जविषेनजैये जहांसुकुमारगहै कुंतसत
मारगहै रहीयेननदीतेसेकामातिषै धी
तजितानीकेसाथिनिरवाहनीमलोपका
रसे रातमेमोनहीमेरहेतोभलाईहै नैन
निकोजोनचावनोहेसोछाडीयेहरिकवि
कहतहै सासननामग्रागपाकोसासानिये
तेरेताईजनाइकरिकहीहै गुरलोकगुर
जनतिनकोसषीराजीकरतहैऐसीसि
छाकोदेतीहुई औरचतुराईरचतहे इमो
ऐसी कुंजनिविषेजयेजहांसुकुमारजो
नायकहे सोतुहिगहेगो नदीकीसेकाना
मानिये डीलजोतेनेवानीहेसोलेकेनिर
वाहकीजे हेवलिहारजाऊं रातमेयोना
रबीऐसेतोभलाईहे नैनकोचावनछाडी
एकहे हेकविहरिचरनदास सासनामा
नीये तेरेताईजितावनीहे ऐसेसेसिष्या
देतीगुरजनकेकोराजीकरेहेचतुराईरचि

के अैसे सेज प्रिया की बानि छपी अनुराई
पर सो प्रगट करी कवित्त सवैया सेतंप
हार अंगार भये अवनी जनु पारद माहिपे
षारी होत ही है दुउ डोलत लमे चहू ओरने
सोर चकोर को मारी फूली कमोर कलीने
कली अवली अलकी वलमे निरधारी
को पकें चेरनि यान के मान येआज छिया
नने ते गनि कारी १६० वार्त्ता इंदु चंद्रमा के
प्रकास होत ही लमे है सो मायमान भये है
पहारादिक सो भोरनकी अवली पातमे
निरधार करी निश्चे करी है क्या है मानो १६१
सवैया आयो विहार विहार चहूं दिस डी
लम कोवल आदर दीजे देष धौ आपवि
चार विचछन कवन कोकवि कोऊन डी
जे लावहु नायक सो सषि मान जि है ल
ष वालने कों मन भीजे कैसो भरो सपरोस
की सौन को पोस की रेन भरे सन कीजे १६।
वार्त्ता जो सीतल समे धुंधपरती है सो नि है

रहै विरह सो कोकजे है चकवे तिनको क
रते हुये लखन छीजत है तें इनकी सर्व देष
विरह को ऐसो दुष होत है केरव दिकुल
बहु नायक है क्या बहुतु जो गोपी है तिनको
नायक है या मे जितायो ऊन सो को ऊ औ
रत मिल जाय तै मान ही मे रहे ऊन सो मा
न न चाहिये १६१ सवैया कूके चढूं दिसं को
कन के गन धूम सो धूमे धरा पसरैगो लाग
है सीत समीर सरीर निसान के कामक मा
नै धरैगो पैहै कहा तब पीतम को हरि ध
नंत धीरज है बिसरैगो मान है ते नसेषी
न सोवा लं निहार मले मनुहार करैगो १६२
वाती कूवहगे धूमधुंधके सा पधस धूवो
धरूनकोपते हूये मलीनरे देषप्रवडीन
महीमनावेगो वेगसो जितायो पीतमने
नहीमनावनी ते किवानहार धुंधवरफ
कोजोपरवो है सोई मलीप्रकार तोकोम
नावैगो १६२ सिंहाविलोकन सवैया का

कीरीनबीनघटाऽऽई है॥ | बिजली॥ | चमकत हैं।
री घटा उनई घन की चपला चमकै सजन
हजरात तेव सत्र | रात्रि | गई | कारत है
घनसारी सारी निसा बिनई पिय सों रहै ऊ
छूरई | बालक की
ब बलो तजे है बुधवारी बारी लसी नव प | नवीन केलें को
देषत है | हेरन | हेत कोडारी॥ | वाहीलषत है
लन सों चितवे हेरि तो हंग है हुमड़ारी डा
मन कों बांध कर
री है नेकहू मोहनी रूप सों बांध मने पुन मा | मान को करत है॥
तें कुछ ललर | ते कोहनी | रूपडर के फेन | नलीजे है॥
न है कारी १६२ वार्ता सव नो को ओ सारी को
सज पिय सों रूठ के ने सारी रात बिताई वा
री बालक अज्ञान की ने रूप की कुछ ऊन
पै मोहनी डारी है उनके मन को बांध के अ
बने अपने मन में का को अर्थ क्या मानती
है कि वा मन को बांध के फेर मान करनो का
है १६२ कवित्त घेरी है अटारी स्याम घन
अकाश में | बगुली की पंक्ति।
को घटारी देष गगन में बगन की पानथ
मोकलावत हैं | ।६६ मेंढक | शब्द | मोर | मदमरी
कुलाये है दादुर की बानी अलि को कामर
बात | कहकरत हैं
सानी सुन पिय की कहानी हरि कानन
संदरसावत हैं | मंदपरे कुंलंजर | हेचंद्रमुखी तव तेरो फिर दे रहके गो
सुहाये है मेदपर बेरे हिय पे रहे गी सयक
सुषी सुषी नार है गी नैन मेरे सुर झाये है
मिल है मिलाये बिन मोहन लला सो बा
नतविन मिलाए से ही मिले गी श्री कृष्ण से

१०

२६ 26 हैं माखकी सेया जब कंपा उपजायहै १६४
वाली हारखानी सुनके ओमर विषैमिली
जोहै केकामोरनकीवानीतोकोसुनके
नवदीपकीकहानीतेरेकाननकोनसुहा
वैगीसुहावैगीकाकोन मेरहलकी रहै
होकैगी घाडकार नैनमूंदे सखी नहीरहे
गी सेपावीजुरी १६५ कवित्त गोकलतेया
ईं एक ग्वालमिलै हाँई वेनी जोवनतेका
नेकुहम ईनुमैदेषन वहत है ऊँचेजोकोलेकर
रिआननचंदपैकं मोहै रजत है वेकवान
कोमकेसहतहै जोहनमेमोहन निहारी
छवगोहनलगी है वाहऊसम्न निमासन
गहत है अंगनपैवारीरनपांगकुमारी ने
वाकोरूपरेषरेआनो अबवेमासीरहतहै
१६५ वाली कामवानहावभावरिकतिनो
केसहतजाकोमोहैहै हेमोहनकुमारी
छविकेजोहनमेकादेषनमेलगीहै ह
मारेपाछेहमको कहतहै मोहनकीछवि

26A

कितीप्रकारहमेरिषावो किवाकेसीहे
जाकोरेषनेमेमोहनही गवीलीहेसवेर
करकाहूकीश्रोरनहीरेषतयेतिहारीछ
विकेपाछेलगीहे गोहनपाछेकोतामतिला
सऊचेतवासकूसनगरम १६५ कवित्त के
वनरवतमेनेमानकपचलवेयोवानके
करनेहरिकविपिचकारीको होरीषेलवे
कीवाहगोरीवहूश्राईलालकहालोवषा
नोरूपनयोनेहवारीको श्रंगनकीसोभा
देषरतकोरवेदिमागदेषतहीरहेरेम
पेत्र्यगकीनारीको हेरवाकेश्रानकोदुत
सोमसरमानजोमजामछवकोपुलोम
कीकुमारीको १६६ वाती केवनसवैसोर
वनरवीहूईश्रीमानकोसोषचनजरीहू
ईश्रेसीजोहेपिचकारीतोकोवानकवना
वकरनहापनमेवन्योहेजाके रूपनवी
नहेनेहवारीजोनायकाहेताको किवान
योनेहहेजामे श्रोवसीहे पोरीवेसकीहे

२१ तोके रूप को कहा लाई वर नो सर मान सर
२१ सिला होत है जो मगर्व हे मज होय पाषंड को
उनाव १६६ कवित्त पान की लिलाई हेरि
ओठन में छाई गोरे गात की निकाई औ मु
हाई वेस वारी है लोचन विसाल रूप सो
नेउर साल अंग जो नरे घंकेन कंम साल जो
न वारी है सखी को समाज जे हाराज न है आ
ज वलदेव वृजराज माने लाज मे सुधारी
है वे नन में षमी तुव नेनन मे वमी छवक अवइभरी लाई है ॥
मीव हीका मिनिकस मी जो की सौंरी है १६
वाती गोरो जो है गात तो की निकाई सुइता
जो पे छाई हुई है मुराई मोरी वेस है मुग्धा
है ओ वारी वेस है के तक कितनी याई व
हुत को अर्थ तुमारे जो वचन सुने है उन
के रस मे भुमी है लदना सो रस को अर्थ
कीजे तुमारी छवि वाके नैनन मे छुमी है
१६७ कवित्त गोरे वाके अंग जामे छवि की
तरंगका हनुमकित रंग मान का सो नेह भा

27A रह्यौहै मैरवालहैरेज्ञानगरवगयेइनिकौ
मुषकीमयूषपैयिद्रषवारडारयौहै जौकी
भौहरेषकह्यधनुषमनुषकौहैवोसवछटा
यवौपसमनताकेहारयौहै घनकीघटामैच
हुरेषीथेघ्यटापैलालयालेपाकसासैनस
रासैनडनायौहै १६८ वार्ता किनकहारे
गमानके घनकीघटामैइद्रकोधनुषनही
सोयांहीनेडनारधरयौहै वाकीभौहैसमा
ननहीं १६८ कवित्त राधकावरनकीयन
पढविंरासलषसवीरनिरेभाकेकटक
रूपवारेहे जौकीसुरसननडनदिसनन्न
कासकरेहसनवपिरषरसलसैकरडारे
है नवलाकीरचनाविचारचितमाहवीहे
निसवपविरेचयहध्याननकोहरेहै रेग ठरे
रानध्याधासोचलाचरेषोननमाहवेरच
योसवजेविषरेचरनारेहै १६९ वार्ता
रासवासुखना रूपकेकटकनसघोतेनि
रनार जिससेथेभाराधाजीकोमुषवना

पोको हीमेंऔर मुषढारनहे जवनवयोत
ववोसोछेकोपेरदीयोनहोआधेकोलोचोर
ह्वैगयो औरजेआधेकेचूरनकरकेटुकडे
हैजायेतिनकोतारेह्वैगयो।१९। कवित्त क
वावाजवेधसेजवेधवेधेतननलपकुचउ
पधानधरेमनअविरामके औचलपिले
गयोसपवनषवासमानोलेलहेसमेरजा
निजगेहेत्रिजामके राधकाविहारहरिके
हतनिकाईनीकीनैकुनलहेसरूपगनरे
ववोमके त्रिवलीउदरकिधोछोलेछवि (=त्वचा)
पटमाहसोहलसलोट लोटपोटभयेको
मके १७० वाली ननरसीनलपजोहेसेआ
लाकोवाजवेदोकेजोहैजवासोईसेजवेर
वेधेहे कुचसोईउपधाननकीयेहे मनको
अविरामसुंदरहे किंवामनकेअवराम
प्यारेहे अमरामप्यारेहे अमरामप्यारेको
चीनामहे सेज्याकोकसकेऊपरवस्त्रव
छायराषतहे गरदकेभयेते ईहोचेच

४४A लजोहै ऊपरकोसोइ पिलेंगपोसहै ऊ
परकोवस्त्रहै ताकोपवनजोहै षवासपा
सकोटहलीयासोसमेटलेतहै त्रिजामर
त्र कोमकोतीनपहरकोजाग्योजानके कि
तीनपहरतोकोमजागनछवसवैगोयह
जानकेपवनषवास ऊपरकेवस्त्रसमेटले
तहै हेहरिमैराधाकोरूपदेषकेवाकीदिका
ईनी कीतुमारेपासकहतहो देववामजोहै
देवांगनातिनकेगनसेवहर तीकवी रूप
कोनहीपावत किंवाराधकाकोदेषकेदे
वांगनारतीकवीरूपकोनहीपावत उत्तर
पेत्रिवलीनहीकिधोछालजोहैमाससो
ई नयोछविपटछविकोवस्त्रतामेत्रिवली
नही लोटपोटजोकोमनमोहै सेज्यापै सो
कामकेलोटपोटनयेकेएसलोटहैवल
हैवस्त्रमे १७० अथसषीसोसषीकेवचन
सवैया फागनमैबडभागनरीतिसोंमोह
नगोकलगावगलीपर गावनगारे सवे

स०

२९
२१

बृजनारसुडीवगईहृषमानललीपर
आननडास्योगुलावकोनीरछुवैकुचपे
चितरंगरलीपर ह्वैहैपियषनिकीवरसे
हरिहृदमनोअरिविंदुकलीपर ॥१॥
वानीभागभरीजेहैगोपीगननितनसोमा
हन हृदय परकेअर्थ लहनासोविषेजा
नीयेगोकलगावकीगरीमे चितरंगरली
जोराधाजीहैताकेआननपरगुलावडा
रयो परयर कीअँचेआननसो सोगुला
वकुचनपरछुवतहै ताकीकैसीऊपमा
है वरसेवरसावतहै हरिकविंदुचेहमा
॥१॥ कवित्त आवतसहेलीलेलजीसोहे
रीषेलवेकोमृषनवसननीकोटीकोलसे
मालपे गहेपिचकारीकरकेरनसुधारीमा
नोकेचनकीवेलीचलीमिलननमालपे
लोचनलचावैचितपीकोललचावैसरी
देषनकीचावैगालगावैसुरतालपे हूं
घटमेडरेगठीमूछठेमुरैनिपकेमोर

२९A

गऊरेरंगऊारनगुपालयें १०२ वानी ल
जीलीनायकाकोहोरीषेलनको भूषनव
सनलसतहेश्रोटीकोलसतहेमालये
सुधारीवनाईहेपिचकारी सोकरमेहेकेच
नवेलसीनायकानमालसेकुस्म रेषनेके
चावसोभरीहे रूठीम्रवजाकीऊवतहे श्री
सुरतहे लजीलीहेसाचोहीगुलालकीम
वीऊमायनहीसकतलज्याते जोनसोरंग
गुपालयेनायकाऊमरतहेसोईरंगलियपे
नायकऊारतहे लज्याकरनायकानेलोऊ
स्योनहीजान वहीरेगनायकसेकेनायका
परऊारतहे किंवासोकुस्मनायकाये श्रोना
यकाकुस्मपैरंगऊारतहेयाश्रपीमेलजी
लीपुरुषनहीहोत किंवानियगुपालयेके
सोरंगऊारतहे गुपालकोरंगऊारतहेका
रेगरेतहे १०२ सवैया याकीऊपायवना
यसषीजनवानीविहेगतहेऊचरीहेका
मकमानचढायपवाोनहवामनेमान

स॰

३ कौरीनटरीहै सीनसहायकसीनसमी
30
रंतुलावनवेलनिवालहरीहै लागीनवे
नवपालेपरी
हरिकेहीयसोहसंपालेपरे निपपाले
परीहै १७३ यानी सीनहिमेनरितहैस
हायकजाकोग्रैसोजोहै सीनलसमीर
१७३ कवित्त नीरतें निकसचीरपहरचली
हैबालगरेमनमाललोकलचेकुवमार
ते मोहनकीमोहनीग्रैमोहनीहै मोहनीकी
मोहनीकीमोहैसषिसहजसिंगारतें छुटै
केसपासपासमधुपनुवासलेतसुखमा
करनहरिमनअनुसारतें सुंदरहुताँस आति
नकीसिषानेअवनिजेसेटस्योपसमारयो
मेरविजनचियारतें १७४ यानी मोहनी
जोसर्वकोमोहनहै नाकीभीमोहनीहैमो
हनवारीहै सोनायकामोकोनीकीहै ग्रेष्ठ
है किंवासोहतहै सहजसिंगारहीतेनी
कीसोहतहै निनकेनिकटभौरसुवास
लेतहैतिनकीकेसीसोभाहै जैसेअमी

५

304

कीसिषानेवीजनेकीपौननेमारयोहुयो
धूमधूवाअवनरपूमैंमेटरयोहेंनेसी
सोयाहेमोहनकीरोवारनको १७४ स
वेया होरीमेघेरगुपालकोवालतिना
वोंकसोइननाचदिषाये अजनदेनधौ
आजललामनरेजनअजनैननदिवा
ये हम्हाकहोरुषसातुललीढिगेवारहे
जारहहाहरिषाये गारदेजेतिकनारव
हेसुनिहांकरेमोहनसोंकेरआये १७५
वाली गारसुनकेमोहनहोकरतहेउल
टायकेजुवावनहीरेनकाहूको उनकेसा
करेमेकावेधमैआयेहूये १७५ सवेया
तियमेरहीमेरगयेरकीचालचलेसुधि
सोधहरेनेरलालकी कटछीनछुपाक
रसोमुषमेमुसकानसुधासमसोनकेसा
लकी मरजोवनकेजुगनेनछकेनछुये
पटओटकवीछवमालकी पियकेउरमें
वरछीसीलगेतिरछीयहवोकीविलो

स०

३१ कनचालकी १७६ वार्ता सोधकरकेशु

३१ धकोहरनहै चेरमुषमेंसुधासममुस

कानहेजिसनेसोनकोसालहोनहै फ

वीवनीहे सोवस्तुमेंनहीछिपन १७६ स

वेया रजनीपतिमेनमुसाहवकीनममे

परछर्कलासरसी सरसीरुहलोचनमा

नकपानकोकानमेजानतहैगरैसी कर (किराहा) (गेंघ)

(क्रमरतीपे) सीनलग्योजवकेरवपेनिकसीमधुपाव

लयोदरसी गहमोरकमोरऊछारकरी

साथिनीलमकीनवछोवरसी १७७ वा

र्ता मेनकोमुसाहवजोहेचेहमानिमकी

परछर्नसर्वभोरनेपरन सुरसीरुहलो

चनीकमलनेनीजोहेवाला मानगर्व ग

रजहरसम सुननतनही करकिरनोको

केरवकुमरनीयोकेऊपर नवमधुपाव

लमोरनकीअवलीनिकसीदरसीदेषी

हेसषीकमोरनीयोनेउछारउछालकर

केमानोनीलमनीलमनीयोकीनवछार

५

31A वरकरीहैचंद्रमाकीनछावरवारहै॥ १७
सवैया ग्रीषमसेजननीअवनीहरिछा
हरहीनरकोउरधारहै सागरहीरवसी
रसहैदिसत्रासनैआपहीमानपधारहै
सोपहरीमचलैनोमतीसुनहीकोईऔर
हीआयविहारहै सीतमकोनककोसजनी
वहजेवमैंऐदअमेच विहारहै १७ वा
ती अवनीपदी दुपहरमैं छायावृक्षके
नीचेआपजातहैयातेकसोछायाअपने
उरमैंनरकोधाररहीहै आपहीतेमान
पधारेगोजायगो नहीतोऔरकोईनायक
उनसोआयकेविहारकरेगी सजनीसेवो
धनऐदचदायकेपरीवहुरेसैगी १७
किंवाकोनहैवहऐसीजोजेवमेमानकरे
गी अथनायकावचनसषीसो सवैया जे।
इजमाहदितलजनीसिषरेतहसेसिषरै
हमदारी मरनआनवसीहरकीहियमेन
ठसीनयहोलिनियारी छीनदेलाजनवी

ननकौ अवनैसुवसुंदरनासुषकारी वो
मुषकीमुसकानलषैसषिक्योरहहैकुल
कानहमारी १७९ वार्ता हमसिषकोटारहे
नहैनहीमानत भयतेमेहसीनही क्यो
हसेनेप्यारीम्होतहे यातेहसकेमुषकोन
ष्यालेः नवीनजोहैमुग्धातिनकीभील
ज्यानहोरहतसुषकारीनायककीसुंदर
तासुनके १७९ कवित्त वातनवुझावौभावो
वेरश्रोवुरानगावोकान्हकीहसननसोवसे
नसिषयानहै जासोमनहारयोगुरजनकु
रहरतुम्हयोमोहलषलाजकोसरूपसकुचा
नहे वेककलपरेनाहटारे छवटरेनाहडु
पमाकरतताकीछायाअरगानहे ध्रुञ
हेमिलावहेजराजसवकाजनजरेषक
हाकहाकहोंगीचवहरानहे १८० वार्ता
वुझावोसमझावो कृसकीहसनचढेनेनता
केआगेमिलायापानप ऊहैवसेनमे पञ्जकर
जातहे ऐसेईमिलाहूर है जानहे सोमेल

ज्या भी सकुचत है तो की रूप माके सी है जे
से छाया अरु गात की है छाया तन ते दूर
नहीं होत त्यौं से ही छवि दूर न ही होत कहा
कहा कहत कहहि बिचार तो को देष के या बीच
अंतर रहत न है नही अंतर त यो ने सौ घु
मिलाव १९० अथ नायक भेद दोहा पति
उपपति वैसिक गनो सो पति पावक की पाइ सा
मान्या के नायक तिक्रम ही ते निरधार १९१
नायक ल० दोहा सांत सुंदर सर्व गुन कृती
सुसील सकुलीन सुवा प्रतापी चतुर वर हरि
नायक परवीन १९२ वानी कृती पंडत १९२
दोहरा धीरोदात्त सु कहत है धीरोद्धत पुन
जान धीर ललित नायक गनै धीर प्रशांत ह
बिधान १९३ अथ लछन दोहा धीरोदात्त
सुजस संग्रामा महा सत्य गंभीर विनय गरव
पन दृढ धरै बहु गुन भरे सरीर १९४ दोहा
माया धी गरबीच पल गुन माषै हंकार
धीरोद्धत नर चंड यह जाको रौद्र अपार १९५

स॰

३३ वार्ता मायावी माया जाने है कार के कह
33 वचारो १०५ दोहा धीर ललित निहवि
न है कोक चातुरी ज्ञान सव कवि को विरच
हत है याको ललित वषान १०६ वार्ता
कोक शास्त्र की चतुराई को है ज्ञान जिनको
१०६ दोहा धीर शांत द्विज जानि है जाको गु
न सम मान सिंगारी इन सवन के ये रंचार
सो जान १०७ वार्ता द्विज तीन वर्न गुन जा
को पिछले के समान ही होय १०७ अथ अ
नुकूल दक्षिन धृष्ट सठ लछन सवैया ना
यक सो अनुकूल कहे दुसरी तिय जो न
छिवत चितावै र छिन सो सम अधीन करे
निज प्यारे न सो सव के मन भावे धृष्ट करे
अपराध घनो डर लाज न देषन दोष छि
पावै सो सठ एक सों प्रेम प्रगट्यो कपटी मुष
ऊपर है न जनावै १०८ वार्ता अपनी प्या
री या सो देषन दोष को छपावे जो १०८ अ
थ उ॰ कवित्त चित्त रोम देषन तिरे धी एक

चार भेद है नायक के भेद जानवो चार नाम है।।

दूजी नायका को चित्त पै नीका ना लिषावे ले सनकूल।।

जत नी नायका सों ड सब पें हि मति प्रीत करे सो सठ।।

घघ वह है जो व तनायका घर के पे ई छल कर छिपावे सो सठ ही न कोय।।

औरननारिकैयोनिहडारं मनसीनाहीमे
लायोहे प्यारिसोऊ कामिनीनुमासनही
वपवारकुंतलसुधारकेलकोनुकवदायो
है उरनषभेकहेररहीप्यारीमुषमोरहरि
ह्मसोहकरइषनद्युपायोहे काहूपरि
कोसुमेनो आयोराधकाकोध्याननिरर
षिउरयउसासमहद्रुरायोहे १०९वानी
निरेषीरेषी चित्रहापतेरोमजीनेगेरदि
यो प्यारसोंसोऊ स्त्रीयांको समानतवरो
वरकेआसनपरवनायके कुंतलकेसका
हूपासकारूपेनहाराधाकोध्यानआयो
मनमेनवसूर्यकेउदयनिरनेकेमिसथ
पनोऊसासनछिपायो नायकायसञानेसू
र्यकेउदेनेस्वासलीयो औस्वासआयोहे
राधापीकोपारकरिके १०९ पनिऊ सोहा
नैपका की
जागनहीनिर्पायियनिकटगही जिवनी
नायकेनै
वाह पहुचाई वहगेहहिगंऊनेलीनीय
रमाह १०३ उपपनिऊ सोहा सोऊ यंक
निपवीप

स॰

३५ सखेकहियनहिचमनचषचोरु छैलगैल
34 हेरनकहतनियनहिनरपरडारि १९१
वार्ता गैलगाठी नियकोकहतहैनरपरको
पच्चीसेगेरदेहुकिवानियकोनरपरमहि
मेडारकेयकहतहैमरेषतहैनरपरको १९१
दोहा नायकमानीचतुरकोसवहीमेविष्या
म वचनकाजमेंचातुरीकरेचतुरकोकाम
१९२ वार्ता मानीसोचतुरइनसेउनकोच
तुरकोलछनकछोमानीकोनामहीलछ
नहै १९२ मानीसवइ-दोहरा वाकीरिसमि
टहैनवेआपपधारेलाल माननमेंलमि
तहैहमैकरहैकामविहाल १९२ वार्ता
वचमनषीवचनआधामेंफेरनायकव
चन मानगर्वकोमेलकेहनायके १९३
वाकचतुरसवइ-दोहा हरिसुनायकियसो
कहीनईनमालअनार बोवनमेंदेषनग वनकाज
ईकरगहकियोविहार १९४ वार्ता नमाल कावन
वेलअनारहैगईनायककोताकोवनमेंदे मेदेवन
गई

34A बनगई १९४ क्रियाचतुरसखउ॰ दोहा
सौषिकुंजकीकेललजंथ्याई उत्तरि साय
उन सखिपेकजपानसेंदीनोनीरपठाय
१९५ वार्ता उत्तमनायकके रुद्रनहिनायो
१९५ उत्तमनायकलं॰ दोहा नारिकोपपरि
हरकोजोपियकरेउपाय उत्तमनाकोक
हतहैजोकविकविज्ञवनाय १९६ उत्तम
नायकउ॰ दोहा वोलतनपनलालीलषी
कियोसषीकोमेष मेटनतिजकरतिय
अधरकहियेनाकीरेष १९७ वार्ता तिय
कोमेषनायककरकेनायकाकेअधरको
हाथलगावनहैवेनाकीरेषकहकेकि
हैचलगयोहै १९७ मध्यमनायकलं॰ दोहा
जोतियरुठीनारिसेरसरिसकरैनसाय
कविवरनोकोकहतहैमध्यमनायकहो
य १९८ वार्ता नरसकरैनतिसकरे १९८
मध्यमनायकउ॰ दोहा तियनहिवोलीपि
यमिसिषसहजजयफिरेहरिनाद सखिवोली

नायकाए
बीहाकहतहै
पैकुंजविषेके
लछोडकरजाए
मानकरकै।उ
हनतेहमसो
कमलकेपातमै
नीरभरकरपैठे

नरस्वाच्चीपनी
सहजातिमिर

स॰

३५ 35 आवौइतेउनहसपकरीवाह १९९ वानी
तियनावोलीनोनायकतुआवकफिरचले
सषीनेवुलायपेनोवाहपकरी १९९ अधम
रतिकेरसपानहाके
नायकल॰ दोहा समेनजानेकेलकोला
पति
जमीनकरहीन अधमकहेकविनाहको
जोरसरूपीसागरमैमीनहे॥
जो॰ रससागरमीन २०० अधमनायकउ॰ दो
हा जानियरोसनसाधहोसषिघूघटपट मोड़
डार समेसमऊसकुचौहियेकिपोषवैपट
टार २०१ वानी घुंघटकाढके येसकुचरोपी
नायकनेमेरेघुंघटकोपटटारकेषवेपरवि
यो २०२ विरहीनायकल॰ दोहा नजानिय
जोपतीनव जोपरदेसकोनायककरेपयान विरहीतो
काकेतजके कोकहतहैवेसेत्रिविधवषान २०२ वच
वरदेसमपै नको ओषितपतिगयो ओषतपतिजान
गयाहे॥ हे प्रोषितपतिजायगो २०२ विरहीनाय
नारकाफारनतिसीसतारती
कउक्त दोहा हारभारजिहहोतहैऐसोतन
केपर देवफा
नसुकुमार सोकैसेसहिहेर ईपावसवि
रहिपहार २०३ वानी पावसमेपहारर

35A पीविरह २०३ अनत्रिस्तनायकल० दोहा
इकनायकअनत्रिस्तहैजेरसजाननताह
वेजगमेजनमेहूप्याज्योंवेदेरकीछांह २०४
अनत्रिस्तनायकउ० सोरठा मनआवैमो
औरप्यिरेविचारनतियवचनगयेसुक
हिहेवेरकोइसुनोमरनलाषि २०५ वार्ता
नवतियकोऐसोवचनसुनकेफिरेतवसो
नायकाकहतहेकोईचोरपेसनेसरनको
देषकेगये २०५ दोहा धीरअधीरपतिचार
मानकलादि
हैयेरसकोतिहेवात लीलावसनेहोत
हैघोडुसविधनिरधार २०६ वार्ता सबके
भेलनाइचार अनत्रिस्यऔरसमलीला
केवसतेंसोरहहे २०६ दोहरा उत्तमारउ
नमेदसेमानोअठतालीस दिव्यआरके
केरमेइकमनचोतालीस २०७ दोहा दे
वदिव्यपुनमानुषनमानअदिव्यसरीर
अर्जुनदिव्यादिव्यहैहरिसवगुनगंभी
र २०८ दोहा याहीभांतिननायकनदि

३६ 36 व्यादि व्यादि व्यडचार भेद करे सब तिपन
कोवादे ग्रण अवस्र २०९ वार्ता जे नायका
पाछे कही है इसी प्रकार तिनके भी दि व्या
दिव्य भेद है २०९ दोहा क्रिये भेद जे तिपन
मे कोन हो हि कीय माह उहा अवस्था भेद
ले दुहां सुभाव लषाह २१० वार्ता ते भेद को
न से है। अवस्था के भेद कहे है नायकन
के सुभाव ने भेद होत है अवस्था ते नही
होत इसा के भेद सो नायकान के भेद हो
त है नायकनि के अनुकूला इ भेद होत
है सो सुभाव कर के और नायकनि के अ
वस्था इसा न ते भेद किये रसा जास दूषन
होय सोई बात दोहा मे है २१० दोहा षेडता
दि पतिवरनी पेरस को होत विनास जो क
छु उहां विदग्धता ताको सब मे बास २११
वार्ता उहां नायकान मैं विदग्धता चातु
र्यता है तिस चतुराई को सब मे वास है और
षेडत आदि नायकन भेद रहि होत २११

36A दोहा चारिअधिकगुनसाठहेनायकमेंसु
मरूप प्रभुनजेअनननवरनीयेजगमग
हेजसमरूप २१२ वार्ता दोहटगुन नायकमे
होनहैसोकुसलदेवहीमेंहै औरनजगतको
लोजसमरूपीराजापकरनहै स्वतेत्रकोईन
होयातेनायककुसलदेवहीवरनीये २१२
अथनायककोसहचरवर्नेन्ते अथनर्मस
चिवल० दोहा हरिनायकसोजोसखापि
पकोकरेमिलाप नर्मसचिवताकोकहेदू
रकरेनननताप २१३ नर्मसचिवउ० दोहा स
खोगेलवनायतिनजिनवैवैगोपाल वा
परचोगाकृगकृषा
तनंबहिरायेचले कियेकपटकोजाल २१४
वार्ता जिनकोकुसलवैवैपेतिनहीकोसखा
मार्गवलायोवहरायेपरचायेपरचावनो
हूवो २१४ पीठमर्द ल० दोहा मानवती
जोनारिकोकरेसखापरसन्न पीठमर्दसो
कोकहेतिनकारन अवसन्न २१५ वार्ता
अवसन्नविनायपासहीजोतिनकोका

रा॰

३२ रतहोय २१५ पीठमर्द्द उ॰ दोहा कहा नैन

छिपा के छातीपे

ली लागें गहौ कर घूघट की ओट हरि उरमें

[illegible]

37 लरनै लगी मेरे नैन की चोट २१६ विट ल॰

दोहा कामकला चातुरी में चतुर जानत बात अ

नेक विट नाम ताको कहे जो छैल हे वि

वेक २१७ वार्त्ता जिनके ज्ञानको जो पायले

ससो विट २१७ विट उ॰ दोहा इन्ही बीचन की

जीये चले आपने होय तोसो सकुच गहे

१क कहाँ पान न रोय २१८ वार्त्ता आपने ई

व लेकारज होत है जो राक पान रोयत न

में होयता सो कहा लज्या है २१८ चेटक ल॰

दोहा चतुर होय संधान में जानत नायक को

चित चेटक ता सो कहत है जो नर करत

चरित २१८ वार्त्ता संधान मिलाप २१९

चेटक उ॰ दोहा प्यारी हरि बहि कुंज में बै

ठे चेटक हेर उत हलधर को जात लष

इ निश्चर जकहि टेर २२० वार्त्ता चेटक

ने देष केकुंज में उत ऊनकी तरफ॰ कोव

37A

लमद्दकोजानोदोषकेहलहधरश्रापनी
नकीवुलायकेकोइश्रचर्यकहनलग्यो
टेरके उन्हेंहलधरकोभीविलमायराष्यो
श्रौरउनइंपतननकोभीसुनायदियो चौक
सकरसीयो २२० विदूषकलं० दोहा वेस
रूपहहश्रारकोकरैसषाजोहास नाह
विदूषककहतहेजाकेहियेहुलास २२१
वार्ता श्रौरकेवेसरूपह्यारकोजोकरके
हासकरे २२१ विदूषकउ० दोहा प्यारीसोंह
रिकुंजमेचाहतकिंपोकलोल कह्योविदू
हलधर
षकवाराहिकराऊजीसमबोल २२२ वार्ता
वाराहिगद्वारकेपास राऊबलभद्रजीकेस
मानबोलकेकह्यो २२२ इतिश्रीहरिचरन
दासविरचतेसभाप्रकाशेप्रथमोल्लासः
अथपूर्वानुरागलछन दोहा रूपसुजस
केश्रवननमेंदेषतेंहूरागदंपतनकेचितमि
लनविनसोपूर्वानुराग १ वार्ता रूपदेषतें
जससुनेनतेंजोरागसनेहहोयदंपतनके

रूपकेजसके
सुनेतेपादेषेते
तेजोरागउपजे
सोश्रापकाता
पककेमिलेवि
नसोपूर्वानुराग

२९ चित्रमेमिलेदर्सनानुराग १ श्रवनानुराग ०३०

38 [illegible]० दोहा सुनेरूपहरिकेछकीदिनछिन

रातद्योचैनं चढीअटारीटेरतनहिंलिये

कटारीनेन २ दर्सानुरागु३ दोहा कब्बूजो

गसबिहरिकोयोमेरोमनअकुलाय यांकी

तिरछीडीठनेजवनेगयोचिनाय २ वाली

कुछजोगहूनाकीयोहेचिनायदेषगयो २

अपचारप्रकारकेदर्सनदोहा चित्रस्वप्नप्रत

हमुनरदर्सनाकीयहुजान सुन्योचित्रमेस्व

प्नमेलिष्योसुहरमगजान ५ वार्ता सुनवे

तेश्रवनजान्योसुन्योप्रपमश्रवनचित्रमे

लष्योचित्रस्वप्नमेलिष्योस्वप्नमगजानो

लष्योसाक्षात ४ अषभावहावहेलावनेन

दोहा भावहावहेलाकहे ऊपजमनैयहअं

गईहांसुहरिकविकहतहेभावपरेपरसं

ग ५ वार्ता एकभाव एकहावहेला ५ हाव

नाम दोहा लीलाविलासविछनहैकिल

किंचतनविब्बोकमोटायतकुटमितं

नेसषीवेदेउष रहरनेकहूरपे नकीयोवषाकु छनाहूकीयांपे रोमनकाव्याकु लहोयहे ।।

दर्सनका रजानकेहैं प्रत्यषका हूचित्रमेंदे षोसेजदेषन हूजोस्वप्नमें तोतोप्रत्यष षोयोश्रवण

३४A

विप्रसंगजोअरोक ६ दोहा ललनविर
तमरनेपनतुनमोगदंविछेपविकारकु
तुहलेहसनचकनकहेलिंहांनिरधार
७ भावलछन दोहा निर्विकारजेचित्तते
उपजेप्रथमविकार आलंबनउद्दीपनते
भावनामनिरधार ८ वार्ता प्रथमपदकी
ई विकारजोआलंबनउद्दीपनतेंमोर औरसे
रंपकजेचोरनीआरंभालेनीकोर ९ वार्ता
देपनथंलेवन औरसर अपवाओसर
समयवर्षाआदिकमालनीवेवलीकोरक
लीकिंवापेंजरी ९ दोहा आलंबनोस्वभाव
नवहरिराधाराकसंगछेलनंहसनरिमा
न अवंसुरवपुविरषकेपुलकनहेसव
गान १० वार्ता प्रथमनहुनोबालकअवस्था
मेंअवलेरसरीर देषसवअंगपुलकन
हैसरीर दरसर आलंबनतिनतेभावउपज्यो
१० उदीपनोस्वभाव दोहा बालापनमे
कुंजनिकुंसमनोरलेजात अवचितओ

प्रथमपद नमै विकार जो है पे र किक रउपजे सो भाव

ऽ०

इसतरहदेषसेहीहोरइस्या सोजानतहैकथाआंगनष मकरावनला नहें।।

रहोनहेचितेउनेश्रंगरान ११ वार्ता उन
वागकोतर्कहेषकेश्रंगरानहेयानेश्रवको
रहोचितहोनहेयाकोसषीसषीवचन है
जउद्दीपननेभावउद्योहै ११ दोहा कन्या
मुग्धांनियनकों निर्विकारतालेहुं श्रतम
ध्यांप्रोढानिकोंइरसंउपजकहहरेहु १२ वा
र्ता कन्यापरकीयाश्रोरमुग्धाइनकेचित
मेंतोजन्मतेलेकेनिर्विकारताकोगहनक
रे श्रोमध्याप्रोढामेरसीनदेषनतेविका
रकोउपजनोकहहरैवो इहीनेकेदेषवि
नाइनकोचितनिर्विकारउनकोजन्मतें
निर्विकार निर्विकारचितमेप्रथमविका
रउपजेसोजन्मतेनिर्विकारचितकन्यामु
ग्धाकोहै मध्याप्रोढानोजवनायककोदेषें
तवहीकामउपजे जो लोनायककोनदेषे
तोलोनिर्विकार १२ हेलाहावललदन हो
हा भ्रूनेत्रादिविकारनेप्रगटभावदैहाव
श्रुतिविकारवाकोलषेंहेलासोकविगव

कन्यापरकी याऔरमुग्धा इनकोतोनि कारहितनही उपजत

मध्याप्रौढा कोदर्सनते उपजतहोत

भ्रूऔनेत्रादि सोजोविकार प्रगट... ...भावबाहरप्रगटे।।

३९A

१२ वार्ता जोमनकोभावप्रगटहोय ते
वकहावे जोउसहावकोप्रकासनविका हिहे
देषीयेसोहे लाहावहे १२ हावउ॰ दोहा एक
हरिननमें प्यारीकियोलोचनकोरनछोर
नयोरागमनसेगलेगयोलहेमगभेद ॥
१४ वार्ता कोरांसों नयोरागकयानयोहेम
नेहजासोंश्रेसोजोहेनायकसोमनकोसं
गहीलेगयो मार्गमेंनायकायहभेदपाव
नहेमेरोमनकहागयो ईहानायकाकेम
नकोभावतोजानोपरयोहे अतिवाहर
हरनहीभयोयोनेहावहीरसों अतिजा
रमयेहेलाहावहोनहे पहलेनायकानेछ
मजुलकोरनिमेसो देष्योसोभावजान्योपरंसो
परिअतिवाहरजाहरनहीभयो चतुर
उपायसषीनसोयहवासकसज्याको
दोहाकुनाहरी ईहाभीहावहीरसों १४
...वल॰ दोहा हमतउनविन नहेयो
बैलेलषेननाह फिरकहादसा
अ...

स०

३९

४० म० १०

39

वा॰ । किये हन्यो ललितबपुबाह १५ वार्त्ती
रु॰ ष्रीसषीबचन हेसषीहमतुमनायका
तेबिनाकोईऔरुबनमेनहीथी । तुमी
बनमैहमसबेतुमकेसंगथी तिसनेष्रप
नेलोनायकनरेषे केरसाहसधीजेकर
केष्रपनेकटाक्षनसोनायकको ललन
सुंदरबपुसरीरहन्योमार्यो पहिलेनही
लषेलज्यासेचारीपीछेसाहसकर ॥१५॥
होयकेतिसेककटाक्षनसोमार्यो विका
रबहुतजाहरनयो यहहेलाहाव १५
बेहारी सोहा नासामोरनचायद्रगकरी
ककाकीसोह कोटलेकसननहियेगड़ी
कटीलीमोह १६ सोहा बैनरसलालच
लालकीमुरलीधरीलुकाय सोहेकरैमो
हनहसैदैनकहेनटजाय १७ वार्त्ती नासा
मोरबलरसइनमैमीहेलासावहै विका
रबहुतजाहरनयोयातें १७ पुनः व्यंग
नेने सोहा सोमाकोतनुसीमद

४०
४०
स॰ १

४०
सम

कांट कीतर ह ह ढ कत हैहिय ग ड़ी

बात

ना साकोमोर नै
त्रैकोनचाके
चाचेकरी
हवाना ।

हमारेसाथ
तेकरेगे हम
बहरकी मुर
लीकलीकी

पग हाव के मेरव

भगलोचनताजात सुभोरताज्यौंसुधपैहेह
रिकविकरतवषान १८ सोभाकौनकेरूक
उलं० दोहा वेषआरछवलेवनताजुत
हेलासोभाहै उद्दीपनतुनिकोमंचसंसोभा
कौनसुराह १९ वार्ता इनकेगुनजोहेला
हैसोसोभाहाव औरउद्दीपनोकीदुतितें
कामकेवसभयेतेजोसोभाहेसोकौनहै किंवाचहीसो
१ किंवाहरिकेअनुरागरूपीसरमेंतीपद्ही भाकौनहै
नहे १९ सोभाकोउ० दोहा वेसनयोजोवन
नयोनई लुनाईगात सपरेहरिअनुरा
गसरअति ऊजल सोहात २० वार्ता औ
सीजोहैनायकातोकेअनुरागरूपीसरमेंहरि
सपरेकासनानकरतहै येसोभाहाव २०
कौनउ० दोहा कोजानेसखीदृगनमेंलगहे
देषतआप उडुपलगपरिदृगनमेंस्यामरू
परसाय २१ वार्ता यहिकोनजानेप्योजो
कमलनकेदेषतहीनायककीछविनेनमें
आयलोगी परागपुष्परज दृगनमेंपरी

स०

७१ है सो मोको स्याम रूप ही सारे दिषाई देत है
५१ कमल तउ ही पन तिन की दुति रेष को मके
वस भई स्याम रूप की सो भा लषी पर कोन
२१ दीप्ति माधुर्ज लं० दोहा अति विस्तीर जहां वहु
(सर्वकोपे पुष्ट)
न कोन को दीप्ति क है क विवर्ज सर्व रसा विस्तार है। पकां ति को
रस नी पत नाे नाह कहे माधुर्ज २२ वानी को
ति को जो अति विस्तार है वर्जी घोह सर्व य
व स्याम ते जो सुदर्नार है तो २२ एकवतु
दोहा विन रस नाम ते वाल सो मोहत है वालकी न
(सा पा ल्यते)
नाठी कटरेस सहज लला ई चरन की जावक रहछवी सो
(जावक एक पजर के फीरहत हैं)
रहत सुदेस २३ वानी से वालक नार सो हत हैं।
जो नायका को कटरेस है सो रस नाम
दुगदीन के विना ही सोहत है यह दीप्ति
जावक रहत जावक ने विना ई सहज की
लिलाई करसुद्र है यह माधुर्ज २३ प्रग
(नो)
ल्भ नाल० दोहा द्दृढ ता कहे प्रगल्भनता
कविजन सबै विचार हुँ ते आलिंगन
की दे वन पुलक न नार २४ वानी ना

यककेतुवनादिकि पेलेनायकामीहुं
वनहैउलननेहेयहयगल्भता २४ औरा
जीधेर्य्यल० दोहा सत्नविनेयसुउदार
नाकवीगननेनाहेसराहे सुखदुखमेधीर
जवडोनिर्विकारनाश्राहे २५ वार्ता स
नविनयवेननीकरनी सोउदारनासुख
दुखमेनिर्विकारनाजोहेचितमेकोईवि
कारनहुयजेसोधेर्जहे २५ उदार्य्यताऊ
दोहा सखीकहारेनंउरवसीकहापन्नागी
होय तोछवेमोमनमेवसीतोसीऔरन
कोय २६ वार्ता विनयतेउदार्य्य २६ धेर्ज
ऊ दोहा फनीपननपेएगधरनेमनन
सोदनरान प्रछनगेलउरेलसोविसमे
यपेजान २७ वार्ता वनेरानवानकर
नीहृदे गेलमार्ग यहधेर्ज्य २७ अथलीला
लालवन दो अंगवेषलेकारनेलीला
केनउकार स्वागनोरकसखीगनास्वाडि
यर्गनाविचार २८ वार्ता अंगकोवेषलेअ

स०

५२ लैकारोनेजो केनअनुकारको अर्थना

42 यककोरूपवनावे स्वागनाआयुनाय

ककोरूपवनावे सषीगनासषीकोना

यकवनावे स्वडियगनाआपनायकव

नै नायककोनायकावनावे पहिलीला

हाव २८ अथस्वागनालीलाउ. सीसमु

कटकरवेनुगहेमगमदररवकरअंग

वेलीसावरधलैनेको विडलषतजतथे

नेग २९ वानी वेनवास मगमदलायके

स्यामवनेकियो २९ सषीगनाउ. दोहा

प्यारीनषननाहिकेधरसांवरसषिगात

हसनहसावतऊवरवनरेषनहियोसि

रात ३० स्वडियगनाउ. दोहा प्यारेकोवेनी

रचीप्यारीकरविसेवार हरषमुकटवो

धोललनउनसिरवनेसुधार ३१ वो

नी ललनकेमुकटउसनायकानेयप

नेसिरपरबांध्योवस्त्रोकोसुधारके ३१

विलासहावलं० दोहा रहिवोंगमनेर

५२A बैठबोमुखदृगंआदिसुजानं पियलख
पियकेसुखकुध विशेषताको प्रकाशे विलासकहीए ।।
होतविसेषनानाहविलासविधान
३२ वानी हरषोठठकबोगमनचलबो
मुखदृगआदिकोकोमीश्रेसेई जानीये
नयन
३२ विलासहावउ. दोहा दृगमोरनजोर
ठठक रचलनहैं
नमनहठकठकचलनमुनबैठसमरक कार्य
रनीआलसमरीकरीनेनहरियेठ ३३ किउ आलस
वानी जोरनभमावनहे मनको बैठकेफे मोहनने बैठ बैठककोहैका
रवठककेचलनहे हरिनेबाकेनैननमे
पैठकेप्रवेसकरकेकरीहे ३३ विछुन
विबोकल. दोहा विछुनकहिभूषनअ
लपनाहीनेछबहोयहे हेविबोकसुइष्ट
कोगर्वअनादरसोय ३४ वानी अलपनु
भेभूषनहीनेछबहोय अपनेइष्टको
जोहोगर्वनेअनादरहोयनहो ३४ एक
३उ. दोहा छलाहारलीलाकमलपाही
हरि हाथमें
नैमनयार सहजअंगसौं रमहेरेअत
रदेनगिडकार ३५ वानी लीलानीसाक
अतरको गेंद करदेतहैं

६२ मलहाथमेहै मनयारसुंद्र जोअनररे
43 नहे तोकोऊकारहैनहै किंवा अनरहौ
को २५ किलकिंचत लं० दोहा अमर्षहू
सनिषेधडर आसू हूलसोरेष मली
नरत आरे ममें किलकिंचितनिहलेष
२६ वार्ता मलीनकिटकना २६ किल
किंचत हाव ३० दोहा मोर मोहहैसडरंरह
बीबानकपटनेरोय पियकरगहनडरो
मेजेवहरनेवसंनंनवहोय २७ वार्ता
मोहमोरनमेंअमर्ष रूषीबानने निषे
ध कपटनेरुदनकरनहैईहाहूलसो
आसू पियडरोजनजबवपकरनहैत
बतिनकोहरनहै हटावनहैवसनहो
होन यामेमलीन २७ मोट्टायनलं० दोहा
मोट्टायनपियबानमेंमोतीयहोयहै
कान चेष्टाकर निजगातकी दुरबहैल
बैनआन २८ वार्ता पियाकी बानमेंम
नओकानदेय केरआपनेगातकी

५७ चेष्टाकरकेदुरखुनलकोवैंष्ठमको ३९
मोटापलउ- सोहा कहतनसूषीसषिसोक
प्याहरिसोमांकोमोनं त्रिकुटीमेत्रिवली
कीरोसुनेकानछेमोन ३९ अपनीत्रिव
लीकोत्रिकुटीमेदियेहुयेसुननहे नीचो
सिरकियेसुननहे छेमैनकामोनको
पकरके किंवा त्रिकुटीमेनीनवलपाये
सुननहे औरु कोईयहजानेसुनवेंमेर
वनहीकोपजिनायप्रेमदुरावतनहे ४९
कुहिमिन विप्रमल० सोहा गहनमो
रकुचकुहिमिनकोधउगटहियडीन
अषनफेरवेगनेंकहेसुविप्रमंरीत ५०
वानी कुचश्रारकेपकरनमेंउगटको
पहोय हियमेडीनहोय सीघ्रनातेअष
नवरलेजाह ५१ एकउ- सोहा पिवन
अधरंपिवसोछिजेपुलकनजानसरी
र गलनऊपरपहरेचलीरेषनंकोवेल
नेर ५१ वानी पुलकवेनेंहीयेमेसनेह

स०
४६ ज्यान्योजानहै ४१ ललनमदल० दोहा
44 ललैनगातसवेविवसजोकोमलनो
नेहोत जोवनादिकें गर्वतेमदविकार
उद्योत ४२ वार्ता कोमलनोने अंगवेव
सहूजाय जोवनादकेगर्वतेजोविकार
कोउदोतहैसोमद ४२ एकत्रउ० दोहा
सूधेपायनपरतमैंहिकुचनितेवकेमा
साफाती के भार सोस्ट धे पैरनही परत
र जानतनहींसषिमैंनेतहेरिमयेरहन
उरहार ४३ विहितनतपनलदनेदो
हा कहिवेहूकेसमैंमेलाजनकहेवि
हत चेष्टाकामविकारनेतपनगये
पतिहैते ४४ वार्ता लज्याकरिकेनक
हे पतिकेगयेतेकामविकारनेचेष्टा
हतेहूर होयजायसोतपन ४४ एकत्र
उ० दोहा सनेहीपियारीनकछुवोली
वैकनिहार वोकिलवारथआगलेवा
रनमोहवयार ४५ वार्ता सनेघरमैपी
यारीनहीवोली समुद्रकीअग्निवा

U4A

जो त्रसेका चार्व

वार्त्तिको है केयह रूपवनमोको जारत है
४५ दोहा जैसें जोगहमें कहे ऊपजत है
सवहाव तिनमें दूषनदी जोयवोकरहो
यवचाव ४६ वार्त्ता नयन संयोगमें कोकर
होयगो याते हाव वियोगमें भी होत है ४६
अथ मोग्धविक्षेपलं० दोहा मोग्धकंल
हिगजानके पुछेअजान विछेय पियआ
गमभूषन अरधकरतकथनहूगछेय ४७
वार्त्ता जानके फेर अजान होयद्रहेछे पिय
के आवन समयमें अर्ध भूषनपहरेअर्ध
वार्त्ता करे दृगछे पुकारा दिक ४७ एक
वउ० दोहा कहाकालमाअधरमें नेनअ
रुनाकिहमोत गहनो है तिनपहरकहि
सखिसोलखेवकोन ४८ वार्त्ता कुच्छसखी
सोकहत है चकालचहूंलहुई देषत है
कलहलहसतल० दोहा लुकनहलल
षरमलुनचेचलताजो होय हासनयो
जोवनगरव हर्षादहसन है जोय ४९ वार्त्ता

स०

४५ 45 रम्य सुद्ध वस्तु को देषके वा सुनके नवी
न जोवन के गर्वतें जो रूपा हसना है ५९

नायिका चपल पहवात

एक उदा० दोहा चली चपल सषि सो सुनी
फूलील ता लवेगँ चैडै पैडै मग मे धरत
विहसन निरषत अंग ५० वार्ता चैडैव
कूल चकित केलिल० दोहा चकित हि
लनि हिग भय डरै काहूंते जो होय छीन
प्रसंग विहार मे षेलके लहे सोय ५१ वार्ता
हिल वाके हिकका द चोरते जो भय होय

भ्रमर

५१ एक उदा० दोहा भ्रलिलषि लोलव पे

वनमै

लहि गडरत भरत पिय अंग कों नैन मे चो
परस वीतीय के हरि के संग ५२ वार्ता क
बोलों के समीप भ्रमरा कों देष के डरतें है
न वपि या अंग मे मते है कि वा पिय को अंग
मे भरत है ५२ दोहरा रस सुवक अनुभा
व समहै कोइ जो हाव बोध करस कारकव
ली यो ते चिन्ह गनाव ५३ वार्ता कोइ जो
अनुभाव के समहाव है इनमें नहीं वो मे

पद मेदहै अनुभावनोर सबोधकहै यह
हावरसकारक है योलेखिलै है ५२
इतिहाव इतिश्रीहरिवंशीदासकृतेसभा
प्रकासे द्वितीयोल्लास २ अथ भावादिवर्न
ने दोहा एक विभाव अनुभाव है स्थाई सा
त्विक मान संचारीक विकहत है भाव पंच
विधजान आलंबन विभाव लं० दोहा जो
आधार स्त्रयादिको आलंबन सो होय सु वेस
नायक नायका कहत दुविधकवि जोय
२ वार्ता आधार आश्रय सुहिसिंगार २
दोहा आलंबन है भोतको आश्रय विषय
बखान जिय आश्रय कर है पियविषय
अनलंबुध वलजान २ वार्ता विषय पछो
यलेनो सो विषय आलंबन २ अथ उ०
दोहा रूपभरी जोवन भरी को कचातुरी
खान पियहियमे सोवेधगयो तीखी नारसु
घरान ४ वार्ता नायकाको आश्रय पाय
नायकके विकार उपज्यो नायकाको आश्र

नैरस्यादिक के का का आश्रय होय श्रृंगार से कालंबन विभाव है सो नायक नायका ।।

नायक की आश्रय वो है नायकारति को आश्रय सो नायका लंबन जो और नायका की रती को विषय नायक सो विषय आलंबन ऐसे ही नायका विषै ।।

सं०

४६ 46 आलंबन विषयको हियवेधो विषवि
षय आलंबन ४ दोहा सम विभाव ह्वै जो
नके आलंबन उद्दीप सब ही रसमे होत
हैं कहैं सुकवि प्रवनीप ५ वार्ता नौ रस
नहीके विभाव ५ अनुभाव लं० दोहा सो
हैं कहै अनुभाव जो प्रगट करै हिय भाव
लै विकार बाहर च हेत उ आस्वर कवि राव
६ वार्ता वहीविकार बाहर उ आस्वर प्रका
स लै के अनुभाव होत है किं वा मनके वि
कार को लैके बाहर प्रकास करता है सो अ
नुभाव ६ दोहा गिरै नस्यं गीत अस्तं लो
टै बोलन मोर न उठे लोर न मुहाई हुका
र उन अरु निस्वास सजोर ७ दोहा गिरै
ला रंगुर हांसं उन पुमटा हिव कीजान
और अनेक सु उबलं लतन ते पहिचा
न ८ वार्ता गुरवडो घुमटामर छा ० स्था
ई भावलं० दोहा अविरोधी सविरोध जे
भाव हिलियै सु हाप सुंदर भूपत लो

46A कहेस्थाईभावबखनाय ९ वार्ता विरोध
रहत औ विरोधवारे जेहे भावतिन स
र्वकोअपनेसंग लियेहुयेसुहायकासो
है ९ दोहा जामहभावअनेकसबहोइ
रहेछिपजाइ स्थाईशब्दविचारनेल
षोचलेसोनाइ १० वार्ता याकोनामही
स्थाईहै यहनहीजात श्रृंगारमेप्रीतस्था
ईतामेसेकाकोयइत्यादिककेतीवारहे
के यहै औतिकवार स्थाँमे छपजातहै पी ई
तनहीजातहै १० दोहा सृंचिमेरतिपुन
वीरमेंजानोहेउत्साह शोककरनअडुते
हमेविसमयकरनमराइ ११ दोहा हांस
होसबअपजानहोतुमेयानकमेहोय
स्थाईरसवीभत्समेसुजगुपसाकोजोय
१२ दोहा कोपरोद्रमेसंतनमेहै तिनआ
वेरसमान कहिकोईनवषानसोतिह
निर्वेदवषान १३ सात्वकल० दोहा से
वेधेवस्मवतनेंलहिकछुइकअवधान

स०
४७ भावविवसजोचितह्वैसात्वकताहिकोजा
न १४ वार्ता अवधानकोपायकेतिस
चितकोनामसत्व भावविकारमनको
१५ दोहा उपजेजोयहसत्वतेभाव अंग
मेआय सात्विकताकहुजानीयेस्तंभस्वेद
दरसाय १५ सोरठा रोमांचेकंस्वरभंग
वेपथुप्रलयपंनुअश्रुलष पुनवैवर्ण्य
प्रसेगसात्विकआठोप्रगटरा १६ लछन
दोहा प्रलयकहेचेष्टारहतवेपथुके
पामान सिथलगातसोस्तंभहैविरत
अर्थसमआन १७ वार्ता औरनकेअर्थ
सर्वकोविरतहै १७ सेवेधनेप्रलयको
उ० दोहा पियकीहापनकीरचीदईसु
षीकहमाल भुवनछकीहरिरूपमेचि
त्रलिषीह्वैवाल १८ वार्ता मालाकेछु
हेसात्वकभयोयानेसेवेधने १८ प्रत
ह्वैनैरोमांचस्तंभउ० दोहा जानिअनत
सेवेसषिनकेललनअलोकोआय

(marginal glosses: कृष्णदेवकी रची है विह कहत हे सु जीते नायिकाके पालाकुं; माला जो हुतती ...; नायका; अन्यत्र; सषीके के लेप; कृष्णदेवनकोआन करलखो)

सखी पिय सों चकी अंगी पह
री है नाग करे
कारविषे
कुचकंचुकरे मोचकी मगपगदियो
नेजाय १९ वार्ता कुचन मेरे मोचकी
केहुकी मई नायककेदेषने सात्वक
भयो याते प्रवृत्ते १९ अवधानतें सु
मान हरवे तें के वचनोंकु वैन॥
रभेगकोउ दोहा हरनमानपियके वैन
वीनवकरकर गानकरते है
सुषदेनवारी
कोकरनवीनगहगान सुषदानी वानी
केशवदेवकी
सुनीरही मिलापीतान २० वार्ता सुष
दानीनायककी वानीकोवीचमे अव
धानपरयो याते अवधानते २० अथ ते
तीसमेचारी वर्नन वचनका निर्वेद १
ग्लान २ संका ३ मद ४ असूया ५ श्र
म ६ आलस्य ७ दैन्य ८ चिंता ९ मोह १०
स्मृत ११ धृति १२ व्रीडा १३ चपलता
१४ हर्ष १५ आवेग १६ जडता १७ विषा
द १८ औत्सुक्य १९ गर्व २० निद्रा २१
अपसमार २२ विमर्ष २३ स्वप्न २४
अमर्ष २५ अवहित्थ २६ उग्रता २७
उन्माद २८ व्याध २९ मति ३० वितर्क ३१

मूढ़न २२ त्रास २३ संचारी लछन कवित्त
निर्वेद है है खेद निंदा और रूप को विकार गली
न संका निसंसे का मत्सर दि मैं र जानीये
असूया रोष नजर परै श्रम को कहे श्र
मप्राकृत क्रिछेन तो आलस है ये दे न्या मानीये
आयोग बुद्धि चिंता कहा है है जहां ऐसो
है मोह है सो अचेत न पूर्व चिंता स्मृति ज्ञानी
ये धन धीरता हू वोढा लाज चेचलाई
ता हर्ष चपलता है सुचित वेव अवधानी
ये २१ वानी स्व निंदा आपनी निंदा रूप
को वदल जे वो निसंसे का षोटी से का प
क्रिछन बल को दूर होनो है मरी नता
पूर्व चिंता का ऊपम को पारकरना वे
अवविस्रो को पायके वधना २२ कवित्त
आवेग मे रत्ना हुटाई ने चलन ताहै जे
टता चलेन के कछु विषाद रसना है ग्रीये
औत्सुका लाल सा गरे व है कार निंद्रो
नी दमुष वारि फेन सो अपस मार लेषी

48A यें निंदविना सो विचारसो विमर्ष जीरही
न स्वप्न ओ अमर्ष को पकुहुन ये परेषीये अ
विहित्थ्या दुरावे रूप उ गलाप चेउलाई चि
नत्त्र मउन्मा इ लहन [illegible] विशेषीये २२ वाली
मरकरके अदुटाई सी घुनासो चलनो
कुछ चलायमान होय चे छा जान रहे सो
जडना विषाद की रसा ही देषीयत है आ
मही लवन है सुपने वार जल अओ फेन को
जानो नीर को हीन ना होय जाय कोप को
डुरूपना है योलेक स्तोवुहु सो परषीये २२
कवित्त हिये व्यापा आरव्यो धर्मपिरन जपा
षीमंनि विनर्के ओर समय कविन उचार्यो
है मरन ग्लान त्याग त्रास भय को त्रिबासय
ह व्यभिचारी नेतिसको कौन्त नेविचार्यो
है भाव गति चाले सोई रूप अगी करे उन
स्थाई ही मे दूडे प्रगटन निरधार्यो है निर्वे
द अपसमार मरन कहन कोई सो न हूं को
अंगनो सिंगार मे निवार्यो है २२ वाली

अपभावि
चारीलतन
भावनतवसे
जोस्थाईभा
वहोपउसके
अनुसार भी
दीवसै॥

स०

४९ 49 जथाथी तिमरन होय सो मत औरपरा
थीमें औरतैसे होने को स्तव ग्रंथ सो वि
चास्यो है एसे चारी जिस भाव की गत अव
स्थामे चलरे है क्या विचर रे है सोई रूप
अवस्या को अंगीकार न है आप अंगद है जा
न है फेर अवस्याई ही में लीन होय जात
है औ फेर प्रगट न है यह वार्ता जिन कीति
रधार है इनको कोई सो न रस को अंग कर
न है सो मोत सिंगार मे नहीं होत २२ निर्वे
द ग्लान एक छंद दोहा धिक मेरे गुन रूप
को हरि हित सको रिझाय एक रान पियमा
सिले गयो गान सुरझाय २४ वार्ता स्या पमा
न ते निर्वेद गान सुरझावन ते ग्लान २६
अपसे का सद छंद दोहा जो लो आवे अव
धि दिन जियत न रहे कि नाह पिये वा
नी अरलन हग नियग हि पिय की वाट २५
वार्ता जिय रहे गो कि नहीं सेका पियकी वा
ट गहीसद २५ असूया अमछंद दोहा स

49A

हलालिलाईपियनयनलषलियकहि

नेनंवानसुरतसमरकेमसषीग्रालि

सोहेसवगात २६ वार्त्ता मोननेंग्रसूया

पलभ्रमतेंग्रेगम्रलसायेमम २६ आल

सहेग्यकोउ॰ दोहा कोनजाहिवहकुंजमें

लयावनमंजुलफूल स्यांमसरीररसरोज

दृगहैंउसीनुवकूल २७ वार्त्ता कोनजाय

जामेंग्रालस नुवकूलतुमारेसामान्यकी

व्यानुमारी नायकमेंउसीहो यामेंदीन

ता २७ चिंतामोहकोउ॰ दोहा दूरकुंजमें

वीकहामगकगेंउसासिवीर हरिकोरूपग्र

नूपलषिगिरीधरनिनजधीर २८ वार्त्ता

गवीकहापांकोग्रर्थकाहोनीहै २८

स्मनधनकोउ॰ दोहा याहकरेंवचटेसषी

हरहेंदमेरेचीर चलतंग्रमगलमानति

यरोहसोनेननृतीरं २९ वार्त्ता नीर

रोकोधेजे २९ व्रीडाचपलताउ॰ दोहा पी

यप्रिरमनतीयवैरेंदेवेवीइंघस्टेरारंक्लिन

स० ५० 50

कवार छिनचढ अटारे षलहरि मुषनार
२० वाली घूंघट काढकेदीठा छिनछिन
देषननेचपलता २० हर्ष आवेगको उ॰
दोहा आनंद उरनं समानं सुनं अैहेनंद
कुमार सुनव सीवनको चलीनोरने लाज
किवार २१ वाली लाजकिवार तोरन चली
आवेग २१ जडता विषादको उ॰ दोहा चित्र
लषीसी ह्वैरही सुनं पियंजान विदेस प्रान
पियानो करन संषिसहैन विरहकलेस
२२ वाली चित्रसीजडता कलेसले विषाद
२२ औतसुक्य गर्व उ॰ दोहा ह्वैहैके सो दिन
सषी हरिसों जुरे सनेह कहाघुलावन जात
अलिंमैहै आपु हिंगेह २३ वाली उत्कंठाते
औतसुक्य आपही आवेग गर्व २३ निंद्रा
अपस्मार को उ॰ दोहा सोवत प्यारी स्याम
संग चपला घनतन मान फेनसहेत सु
षरस गीस्यो हिजअंननकेगान २४ वा
ली अंननकेगाननेवादनकेसुषनैकेन

50A

केसहलरसजललागी रयो अपस्मार ३४

विमर्षस्वप्नकोउ० दोहा भूली हरि हित

हेटसुधिसखिन हि कसी तुराय सेजसो

धनियापियपधरायि वन लाजे दरसाय

३५ वानी सोयके अधरपान करत है

याते स्वप्न ३५ कोप अवहित्थाकोउ०

दोहा वाहीके घर जाहु हरि जहां जगे हो

रैन ऊरनखरेख दुरे नसखि चंदन लेपक

रैन ३६ वानी नखरेख नहीं दुरन दुराव

ते है यह अवहित्था ३६ उग्रता उन्माद को

उ० दोहा समझपरेगी सबलुमे रोको बूझ

विचार ध्यान गहै हरिरूपको मुकट सवा

रतनार ३७ वानी मोको समझके आवि

चारके रोको हारे कछके को समझलुमको

परेगी आपको हरि जान मुकट सवार

ते है यह उन्माद ३७ व्याधमतिको उ० दो

हा हियको पीर पर छकको हरि फेरे कर

नव जोवन लुलनरको रोकत होत अबे

२ ३८ वार्ता अवपेरकोनकेरमोदेख्त
कोपीरलेबाध कुरूरोकनहेयोलेअव
रहोतहेनोकोईहाजथापीसिमरनने
मति ३८ अथवितर्कमरनकोउ दोहा
वैसीधुनिकैमोहनीकिधोकामकेवान
कोईनायिकाकाहूपपककेहिकरतहै॥ हेपख्त्रीककामदेवकोजाकरकहीको
कह्योमरीवसनमसुनकोकिलमुक
गान ३९ वार्ता वैसीमेलसेयोनेवितर्क
तात्त्रि
मरीनेमरन ३९ त्रासकोउ· दोहा निस
कारी बहुतमारिमिचेकीघटाउनकेवादलोकीगर्जनाप्रकाशको
कारीभरीघटामुनघनगरजसमक
नवीननार नायककै हरतहै छिवतहै
नवलनारिडीनमहियोहरेनडुरनवि
चमेक ४० वार्ता डुरनलेडरत्रास ४०
इतिसंचारीभाव अथभावसंधिल
दोहा भावसरूपविरूपकीप्रगटनसे
धिमुभाहिकारनमेरसरूपमेंभावर
कहीचाह ४१ वार्ता स्वरूपभावक्यासा
मान्यरूपकेभाव विरूपभिन्नरूपके
भाव स्वरूपभावनकीसंधमेंकारनमेद
सोहोतहेक्याकारनभिन्न२ होतहे भा

यह तवसी धुनतहै
किकिधोमोहलैन
वारीनहोहैकिधो
कामदेवकेवान
हैं यहमनमैंकहत
रहकीविचारतै
वितर्कभयप्रचारी

कैवहना
पकावसंत
कालयैपर
गई मुककाक
रकोइ तको
उकोकेगा
नकोवहप
रगटपको॥

विभावअनु
भावस्थायीसा
त्वकव्यभिचा
रीइनसबभावों
कीस्वरूपीहो
नकाभिला
व होवसोसं
धभावना
म कहलका

सरूपभाव
नकीसंधि
मेकारणको
भेदहोता॥
भावनकोप
रगटहोता॥

स॰

५२
52

कहत देवर घर में वैठये हे

चित्रभावउ दोहा इतिरानन देवरम

उत कुंज में कहत देवन गए किन में चलत हे

ननकुंजगये तजि वेर मस्टपटानपरतो

पहियो त्रास हर्षके फेर ५६ वार्ता फेर

मे देवरको रहनो नायक को जानो एका

न्त होय चिन्ता चिन्ता तिनमो त्रास हर्ष का

जो चिन्त चिन्ता उपजे ५६ पुन्न लक्षन दोह

एक कारन ते अनेक भाव उपजें

एक देन के वहुतन तें भावव हुनु जो श्रृंग

उह संधि सकल कारन हैं … नेरस रंगहैं

र ध्वनताहीको जानीये वरन्न हेरस रंग

५७ वार्ता श्रृंगमे होय ५७ एक हेनने वह

मथा … किलेश … सौहंका

नुभावउ दोहा सो विभाररसको सहनचि

सोगोंमें … कहन … तेहमें

ताजटनांगान हरि गहन एक निकुंजमें

नवक … एक कारन ताप तें विभार … के

कहौ चलोगो प्रान ५८ वार्ता गानइन कार्य उपज

के सहन भयो जव नायक ने पयान को सो नहुए

नव चलनो कारनो एक विभार श्रार को

रज वहुतन ५८ अथ अनेक कारनतें अ

नेक कार्ज ताको उ दोहा जोल समरको

वीरसो मोतिसरन प्रस्थान त्रासको प

नविभार हिय तर करा न नियप्रान ५९

त्रास हर्ष … के कहे … हृदय … पहुं … कारण … बहर को रह … में देवर के … की … जब … त्रास हर्ष देवर …

वीर जुद्ध को … तके घर … त्रास की … उहर … त्रासकदंपन … तकेघर … कौवन … दंपन …

51A

करक ही होत है ४१ भावसंधि उ॰ दोहा

सा कारन से पे दो तें दो सरूप के है जो स्वर पै घर स्याम कुच में आएतें एक विचार

नवन मे घन घेरो कीयो आपे घर घनस्या

सो तो पुलक आवली कीए है एक वीत जो मार है सो कुच के मिलत है ।। के दे वधा वन के संध

म कुच विच पुलक आवलि किये मिलन ते एक कार न सां भाव उपज्यो ।।

न केलीधाम ४२ वार्ता मे घ को आवनो

स्याम को आवनो भिन्न भिन्न कारन कार

ज आनेद रोय उपजे सु सरूप है एक रूप

एक हेत तें पासि न भिन्न हेत तें जो

है ४३ पुन: लं॰ दोहा एक हेत नके भि

सो तो भावों के मिलाप से ... धीर रहत ... लंकार गी

न्नते भाव भिन्न जु नहोय संधि तराहत ज्यो है

कवि कहे तुरा हर्ष रस सोय ४४ वार्ता

भिन्न नाके जुनक्या भिन्न २ भाव होय है

एककारन तें भिन्न भिन्न भाव ना को उ॰

स्वामी ते

दोहा लाज हर्ष हि य मे बटे गही ना हज

वनाह पिय मन मे आनेद नरी रची कद

न केना ह ४५ वार्ता नाहीं कहके आने

रकी नरीरची है पिय के मन में रची को अ

वीरच गई र म गई बाहपकर नो कारन ए

कना सो कारज बिरूप कहीये भिन्न रूप

लाज हर्ष उपजे ४५ भिन्न कारन तें भिन्न

52A

वार्ता सो लसरनउस्थानकरकेसोको
अर्पनसवयो ४९ अथ भावसभावल्यल:
दोहा रावविभावहभावजोऊपजेंतव
हुनसरीर नाहकहनसभावल्यजेकविग
नमेंहैधीर ५० भावसभावल्यउदाहर्न
दोहा पियकोकहाननकहनसकोकहेकहूं
नजिजाय हैअधीनवाकेसदाकोकर
सकोरिजाय ५१ वार्ता पियकोमेंकहान
हीकहसकत सबैहीकहसकतहैं यामे
उगता जोमेकहूंतोमोकोकहूंजोतन जा
जाय यामेसंका सेअधीनयामेहीनता
केरकैसेअसन्नकरसकोयामेवितर्क ५१
भावसांनलदनउदाहर्नएकत्र दोहा
वहैभावकारनलहेछुटेसांनवहहोत
नजविकारहरखीहियेलखहरिमुख
कीजोत ५२ वार्ता ईहोविकारकीसांत
५२ इतिश्रीहरिचरनदासकृतेसभा
प्रकासेद्वितीयोल्लासः २ अथरसलद

१०

५२ न दोहा रोधकहैसबकरनकोजोसुष
53 औरेकाम आदविभावनसोमिल्योसो
रसहैअविरोध १ वार्ता औरकारजन
तेइंद्रीयनकोरोके औरकाजेनकरनदे
य जबरसउपजे १ दूसरोलछन दोहा
मिलविभावअनुभावअरुसंचारीजे
आन उपजावनरससचरयोंज्योंनिज
अंगनपान २ वार्ता जैसेनिजअंगनक
रपानकोरसउपजतहै कथ्थचूनासुपा
रीपानएचारमिलेनवरसहोतहै ऐ
सेहीविभावअनुभावसंचारीस्थाईमि
लेरसउपजतहै औरआनपरनेसा
षभीलीजे २ दोहा कहूहोयजोन्यून
तामनमेंबोधअपार तुरतनतोहगहै
आनीयेदोषनहीनिरधार ३ वार्ता
कहूजोकछूनाहोयकहाविभावादिक
कोचोनहोय एकदोयओरनकोअर्थ
करनऊपरतोलेआईयेनवरसहोय

53A कोइतोकहेहेविभावश्रारएकरोयभी
रसकोकरेहे ॥ तिनकेउदाहरनएकत्र
दोहा कहिकोधीरजेधरसकेरहेमानन
हितीत रितुपतिकेपहिराजमेइनलषी
नहिपीव ४ वार्ता नायकाविभावधीरज
मानसंचारीरितुपतिकोराजवसंतउ
द्दीपनपीवदेवोश्रनुभाव स्थाईमाव
कऊपरसोस्थाईये प्रीतविनमानहोय
नहीप्रीतऊपरसोश्राई मानसेंश्राम
सात्विक श्रोरकेमनमेंविभावसंचारीउ
द्दीपनश्रनुभावहीसोरसभयोकाहेको
स्थाईसात्विकस्थाईये ५ श्रथसिंगारर
सलं० दोहा रम्परेसश्रतचातुरीसमय
श्रारदेवेष इनतेतियपियचितरंजनम
धुरसनितविसेष ५ वार्ता रंजनप्रसन्नहो
य यहिविसेषताकेसहनमधुरारतहे ५
दोहा ललनश्रंगसंचलननेंसोरतपाय
प्रहर्षउपजतरससिंगारसो[redacted]क

स०

५४ विमनकहतमहर्ष ६ वार्ता सोईमधु
54 रारतप्रहर्षअधकताकोपायकेसिंगा
ररसहोत रसप्रमुदर ६ दोहा द्वैप्रकारसिं
गाररसकहेसंजोगवियोगमिलवोअ
नमिलआरदैवरनतपंडितलोग ७ वी
ररसलछन दोहा जुद्धधरमअरुदया
नेवीररसानेंलेचारं राधापतिकोजान
होलीलाअनतविचार ८ वार्ता रासवे
रसकुलकोहोतहेयहजानोउनकीअवे
तलीलाहे औरकोनहीहोत कोईधर्म
वीरहीमेरयावीरकोकहेहे ८ वीरल०
दोहा हेसकोसमुनवधवउनासनतेके
लवात औसोजोंउत्साह सोस्थाईवीर
विख्यात ९ वार्ता इनकोनामनादिया
हृदय ९ दोहा प्रगटहेउत्साहअतना
हलघोरसवीर ९ करुनारसल० दुष्ट
नासजुअनिष्टतेकरुनरसोकसरीर स्थाई
१० वार्ता अत्येतउत्साहप्रगटे १० अ

जहांकोईमासंभववीज देषीआश्चर्य ॥

८४A अद्भुतहास्यल० दोहा लषेअसंभववहो

तहैअद्भुतविसमयरूप वेसंवचनंश्री विस्मयजबप्र गिहोयतबअद्भुत

कृतविकृतनेहास्यअनुहासमरूप ११ वार्ता रसहोतहै ॥

विकृत औरकेऔरहोय ११ भयानक

ल० दोहा होतभयानकभयमिलेनीच

आदेजेऔर वधवेधनवनकोगिनैलषी

पर निसिसूनीपौर १२ वार्ता भयानकनी

चादिककोहोतहै इनकोतोकोनगने

तिसमैसूनीपौरकोभीदेषकेभयहोतहै

१२ वीभत्सल० दोहा रसवीभत्सदिषा

वहीसुजुगुप्साकीषान जोकेअनुभवतें

प्रगटचितमेंहोतगिलान १३ रौद्रपो

तल० दोहा वैरभ्यादरतेहोतहैरौद्रकोप

पद्वदेष सोनिसुकेनिर्वैरनेसोनसौंने

महलेष १४ वार्ता कोपहेपरस्यानजा

को सोनकोंस्यानतानभीहेनिर्वैरभीहे

१५ अथशान्तरसलक्षवाततसत्यवनने

दोहा कहेशास्त्रअरुसत्यगुनकेविवे

स०

इन रसोंके रूपधरी औ देवतापीडे औरहैं हैं एतम

५५ लसतसुबनाय रूपदेवता ओरहे इनमे

शारद्वादके जो कहेहैं उनमें नहीं समाते उनकी छौडी कहतहैं ॥

55 काहू समाय १५ अथ मुख्यका चरस गौन

तीनवहगौणहैं यांके पत केउ सांत औरमं

सातरस दोहा तीनयदे पुनसांत सुचि

शाररुचरे" जो आचार्य कहती न नहीं मान तेउनके मतहैं ए कर्मं शाररो

मुख्य वीर रस ले सात गोनकहावत होत है शांत शोरागे नहोत है॥

औ इनके बीचहीं उपजत होते हैं बीचहीं छिपजात हैं बीनहीं ॥

इनमे अरस छपिजात १६ वालो हास्यस

छवलस लसिंगार सांतरुमुख्य ओरसगो

नइनमें वे होत है औ छिपत है १६ नवर

सनाम दोहा सुचि पुनवीर रु करुनहै

अदभुत हास्य भुजान सुभयानक बीभ

त्स है रौद्र सांतनवमान १७ नवरस रंग

सृंगार । वीर । करुणा । देवो । काहुत

बरनंन दोहा स्याम गौर धूमर लपोपि

भयानक । बीभत्स । रौद्र सांत

गलपांडुर रंग कालनील अरुन कगन

सांत सेत युअभंग १८ दोहरा हास्यश्री

३२ रुजो तीन है विचित्र सुरन रंग मोन माध

वैरेव उपेंद्र है अस्तनरहर बहुहोत १९

वानी सोनपीत रंग माधवका कुसमसों

सृंगार । वीर । करुण

नवरस देवता दोहा नेरुजक लक्षी राम

हास्य । भयानक । बीभत्स । रौद्र

है कबिपबल बोराहे वे हुधपरैसधर

मकरानतोर

55A

कपिलमुनेकमरसपतिहसराह २०
वार्ता बहुधबोधावतारकमसो २० श्री
पताम्बरस३० सवैया कवहीचुनेऊ
नऊंगीकरसोंपिपरीपगीयाहवधावत
हे हरषेपुलकेजवनामलेस्यामसुरा
सिकोपासबुलावतहे कवहीलषमेउ
लकेजनकोहरिकेपगकेगुनगावतहे
जगुपानकोजोररहेकवहीकवेचोरसों
मोरमजावतहे २१ वार्ता जबस्यामसनाम
लेकेबुलावतहेतवहरषतहेपुलक
तहे २१ अथसषाकोकु दोहा ऊधोसों
सूधेकहेहियकीसवेमुरारि मानेकुछ
मानेनहीरीऊबीजउरधार २२ वार्ता
सूधेईकहतहेकपटछलनहीराषत
कुछकतोरीऊकेमानतहेकुछकछि
ऊकेनहीमानत २२ दोहा नहीकपटछ
लनारचेसमतारहेसुराक छतिसरन
सोथ्रापकोनहीसष्यसविवेक २३ वा

सषाकवहोत हेजवकपटना करेनारसमुता

गाठपहरगावतें
पासहीरहे ॥

सं०
५६ सी प्रतिमर्त्तस्थापनेप्रतिविंवसो २३ वा

56 तसल्यकोउ० दोहा छोटीछूटीजुलफजु

बलीयेगोरमेंतेर पुलकतहरषतहेहरि

कहतगहिरीजेमोहचेर २५ वाती जब

कृष्णजी ऐसे कहत हे तब नेर जी पुलक

त हे हर्षत हे यह तीन रस मक्रिरसामत

विधुसे गोहस्पनके मतहे च्यलेकारमेंत्र्या

वरसहे सोतरलनाश्पशास्त्रकोमतहे इ

नकेसानकेलियेसबलिख्योहे २५ अथ

रसनकेमित्रशत्रुवरनने स्रेगारकेमित्र

सत्र दोहा वीरहोयपुनमधुरकोहास्यस

खाहेमीत वलसोतवीभत्सभयरोद्रकेह

अनहीत २५ वाती मधुरसिंगार २५ स्रेगा

रमेंवीरहास्यकोउ० दोहा सीषमजामुषनि

षैहेरिमहतेनसपुलकतअंग गह्यौमुलक

सीकोजवेकरनसत्रुकोमेग २६ वाती सीष

मजाम्लकमनी सत्रुनकोमेगकरनेहुयेर

कसीकोपकरयो इहां सीषमजाप्रालंबन

56A

विभावसोंश्रृंगारप्रभेदआलंबनसोवी
र रसकसौविभावहास्यरसको सिंगारसे
सब्यजानलीजोये २६ अथसिंगारकोस
त्रुउ॰ दोहा मसीभीजनरीजेललाकेस्याच
हलरतिमोर सुकंपाइधनंअधरकेछूटो
वासनगोर २७ वार्ता इहांश्रृंगारमेवात
सल्य २७ अथश्रृंगारसोतकोउ॰ दोहा मो
हनतीषबैनसोसुधाबैनकहिवामंमति
ललचायचेलायांचितसबकहोपरनाम
२८ वार्ता परनोमअंतमें इहांश्रृंगारमे
निर्वेदस्थाईसोसांतरसभयो २८ श्रृंगा
रसेवीभत्सकोउ॰ दोहा हसोयेरसोयेहि
लमिलीकरीयेविविधविलास कहांनि
कारतनाकसोंमलीललीपियपास २९
वार्ता इहांश्रृंगारमेमलीपरतेग्लिंनय
हवीभत्सभयो २९ श्रृंगाररौद्रउ॰ दोहा
आजमिलेवहकामनीनोरोसेनचलीस
हनोसबोंमममेरसोंयोकहियोसरीस

५१ ३०॥ बाली सषीको मारौ समसेर सो ईहां
57 कंगार मैं रोद्र भयानक जानलीजीये ॥ अ
पवीर के मित्र सजुबरनने दोहा ॥ रामवी
रको हास्य मरे अर्जुन सष्यं इयार सुम
यानक जुन सो नरस हुंछ कहे निरधार
३१ ॥ अथ मित्र वीर रसप्रको ३ दोहा ॥ देउक २२२ ते लई
जको दंडं गहिं ल सो गुमटरर लपाय के
कई नासौ ने माजे रन गिरे पाय परे फिर आय ३२ वा
ली को दंड धनुषको लेके पायपर वे मे रा
म परम जे कोई राम न मानेहे नहो मे बा
रीहेन्य कहेहे ३२ वीर अर्जुन ७ दोहा ॥ का
टन लीष सरन मों रावन के रसमीप नये
नये सिर होन लषं पापितें रहेर घुनाथ ३३
वाली अर्जुन मैं नये नये सिर आले चनवि
माव एकन को न माविक ३३ वीर मित्र हा
स्यसष्यरा क३३ दोहा ॥ सेनवेंदरन यमीलि
येलर नहे हमो लेके मं लगेलं अर्जुन अग
मर आगे होत रमेम ३४ बाली को राको
मार्जुन ने चोर पत गारे थे ते
[illegible] ।।

57A

सेगालीयेहुयेतपसी अपनेनासकोराव
ननहीदेषतउत्साहेयातेवीर वीररन
कोलरनेंदेषहस्योयातेहास्यभयोवीर
नहीगयो औजुद्धमेंअर्जुनकेआगेकृस्न
होतहे ईहांलरननेंकृस्नमेंउत्साहेयाते
वीरअर्जुनकीरिहातेसष्य २५ अथवीर
केसत्रुभयानकसोंतकोउदाहरनएकत्र
सोहा छुटीतोपवांनेंछुटेंपहरानेनव केपावपाय...
अंग'लरतेंसवनमेंमातिहरिसौंनेडार
वियेग २५ वार्ता आगेजोकोईलरनहु
तोताने सर्वेमेंहरिजानके जिनकेवीरको
वरननकरवेलगेनाहीकोडरभयोतातेसो
विरुध अरुसत्रुमेंभयहोयतोदोषनाहीं
वीरमैंसोतरसईहांसमतास्थाईभावसो
भयो सोहामेंसकछ्लेगनहीहे २५ अथ
करुनकेमित्रसत्रुवरननेसोहा मित्रक
रनकोरोदहेवत्सलहूकेमान अद्भुतमें
गसिंगारजुनवेरीहास्यहिजान २५

स॰

५८ अथमित्रकरुनरौद्रकौ ३॰ दोहा सीता
58 केसैतापनैंअतव्याकुलहियरोम क
सौपलकमैमारहोलंकाज्यो लघुराम
३६ वार्ता ईहासीताहरनसोकरुनरस
तोसेकोपसोरौद्ररसभयो ३६ अथकरु
कौशल्यावचनं।।
कलौंवनसे नावानसल्यमित्र ३॰ दोहा कहौसेजक
जतेकेहाव हौतेजहेकहाविछोनापान दैहैताये
रुवघेरता सुनकहेपथकेपाकेगात ३२ वार्ता ते
वातेंका जहैतेजवारेधोरे। कौसल्यांकीउक्ते
होगा।।क रुनमेवात्सल्य ३२ अथकरुनकेस
तोफाह्रस वातोएडें त्रुअद्भुतहास्यसिंगारकेएक ३३॰ दोहा
तेपरेषुत्रे।। पंचवटीकेनिकटलषहसेजनकजाजा सीता
दवा।
ते राम सुमनचरनकोंमैनिरषसलो
नेगात ३८ वार्ता सीताजीकेसुमरनते
कामव्याप्यो पार्वतीकोसीतारूपदेष
आश्चर्यभयोयाते अद्भुत हसनतेहास्य
कोमव्यापनतेसिंगार सोकहूनतेजा
तोरसोयातेएकरहताकेमनतें पार्वती

सीताकोरूपधरआइ जहांसोकमेहसे
केकोमव्यापेनहां करुनरसकोनामहो
य ४९ अथअद्भुतकेमित्रसत्रुवरनने
शृंगार
दोहा सांतरसअंतुचिंमध्यपुनवत्सलसी
एमित्रहैं हितवीर" अद्भुतकेवेरीकहेरोद्रविभत्सुछ
धीर ४९ अथअद्भुतसांतरसएकत्र३. दो
नासिंहावतार सर्वजगतकेवृमसरूपजानकर
हा लख्योपेममेंनरहरीजगतब्रह्ममय
पेरे
जान ऊपज्योसांतंलियोवहेहसंभक्तिवछ
लप्रभुमान ५० वार्ता सर्वमयब्रह्मल
ख्योतांसो सांतप्रभुकोभक्तिवत्सलकहे
तास्वरस पेमतेनरहरयहअद्भुत ५०
अथअद्भुतसिंगार३. दोहा वनकुसमित
घर
लीलानिलेयलखिउपज्योमनमेननर
वरतैंनरसनीकही देखिवढ्योवुनचैन
५१ वार्ता इहांवनलीलाघरउद्दीपन
नरवरतेंनरसनीनिकरोयहआश्चर्यते
अद्भुतश्रृंगारकोमेलभयो वीरअद्भुत
गोपीचेकेसो कारनतीषसरनसोंश्री

५९ रसख्यवत्सल्यजानलीजीये अथअद्ध
59 तकेशत्रुरोद्रवीभत्सकोउ-एकत्र दोहा
कहाजीवनवहापकोमारोयाह्पछार
दिनमेमेलपिसाचनीदेषिरोपोपुपका
२४२ वातीनवहापकोजीवअद्भुतरसको
विभाव तामेकोपसोरोद्रभयोअद्भुतजानो
रहो किंवाकोपमोअश्चर्यरवगयो ओरि
नमेपिसाचनीकोलषकेअश्चर्यभयोपा
तेअद्भुत तामेपुष्पकारवोअनुभाव तो
तेवीभत्सजानीये ५२ हास्यकेमित्रसत्रु
वर्णने दोहा हास्यवंधुवीभत्ससुचिंतमख्य
वातसलअग्राह करुनेभयानककोकहे
तोकेदुष्टसराह ५२ अथहास्यकेमित्र
वीभत्ससिंगारकोएकत्रउ-दाहर्न दोहा
हसेवातकहतेजवैपरोअधरनेलीर
वासतबीलषितोतलीलसिंहपतनेरिउ
वार ५४ वाती हसनमेंहास्य लीरगीर
ततेवीभत्स देषतहैकोतसिंगार और

सषवाल्लस्यजानलीजीयै अथहास्य
केशवकरनाभयानककोएकचउ दोहा
हसतहुतीपियसौतियामुर्च्योसषीको
काल मुर्च्योहास्यसौत्रासहियेलषकै
हरिविकराल ५५ वार्ता सषीकोकाल
सुनकरनारसभयोपाछेहास्यनरह्यो
आगेकोऊहसतहुतोलाजमेरलष्यो
नवभयानरसभयोहास्यनरह्यो ५५
अथभयानककेमित्रसत्रुवर्ननं दोहा
लषोभयानककोकरेनरसंबीभत्सहितु
इ वीरहास्यसुचिरौ र पुननोकोदेश्रति
दुष ५६ एकचउ दोहा मरीनारिनेरस
लीकरदेषचल्योद्रिगनीर चितललचौ
हविलषहस्यौकोपगसोधनुनीर ५७
वार्ता मरलेकड़ लीकेहाथमेंहाडदेषकेन
न रकैनैनैमेनलचल्यो केरइस्त्रीजानचि
नललचोयोताकोश्रेसीच्छवदेषकेह
स्यो वाह्वेकोपकरकेअपवाकोपसोधनु

सं०

६०

60

षवानपकर्‍यो मनकरेषकेमैभयोरु
स्त्रीहेतोसोकरुना हाडरेषवीभत्सऔर
जवचितललचोनवरंगारभयोहस्यो
योमेहासभयोकोपतेरोद्रंभयोधनुषग
ह्योईहावीरभयो [illegible] नेभेयानकजा
नोरहो ४७ वीभत्सकेमित्रशत्रुवरननै
दोहा हास्यसोंस्यवीभत्सकोसांतकेहाव
नमित्र सबेवहुरश्रृंगाररसद्रोहीमानवि
चित्र ४८ वार्ता विचित्रसेबोधन ४८ एकत्र
७ दोहा मलिनेनगनहरिमेमगनेफिरे
वढावनहासनजकुचीलनाद्रायेनिय
पहरेभषनबास ४९ वार्ता मलिनसो
वीभत्सनगनसोहास्यहरिमेमगनया
मेहास्यसांतिनकरेहै सनानादकये
वीभत्सकोनासमयजानलीजीये ४९
अपरोद्रकेमित्रसत्रुवरननं दोहा करे
नेवीररसरोद्रकेसोदरवेधुसमानहास्य
भयानकसुचिमिलेरसकोहेमनजियान

भक्तनकैसेहैंमली नरहतहैंऔरनगन रहतहैं हरीमेंमगन नरहतेहैंगौरलो गउनकेलाभकरतेहैं मलीनताकोत्याग करस्नानकरकेना पकांभनेसुंदरभू मनपा॥

60A

५० वार्ता जियान दूर होजात है ७०१
कवउ: दोहा अरन न किये वीस्योन पनल
षमगनी विन नाकं हस्यो जटल को मर्म
लषि उद्यो छोड़ि हियवाक ५१ वार्ता
लाल नेत्र मोरै न विना कसो करत न वीर
जान लीजीये जटल श्रीराम हसन नेह
स्यांते क्रोध जानो रसो मर्म लष्यो श्रीरा
मजी है नही मोको छोड़ है ई हा भयानक
भयो श्रृंगार जान लीजीये ५१ अपसांत के
मित्र शत्रु वरनन ते दोहा धर्मवीर वीभत्स
रस सांत स्यांतन को हेत रुद्र वीर भयरोद्र
पुन अहित सिंगार समेत ५२ स्वकउ:
दोहा देह मलिन दृढ नेह हर करे जगत
उपकार सयोगी जोगी फिरै कोप करे पर
हार ५३ वार्ता हरि मे दृढ सनेह है सांत
याही मे रास्य देह मलिन है वीभत्स श्री
पनो जीउ जायगो जाउ जगत को उपकार
करे है धर्म वीर जोगी कहे सांत रस जगत

स०

६१ 61 सोसेजोगीसुंदरीकेवसमेंगारकोपकेउ
हारकरेकोपमैरौद्ररसउहारसोवीरय
यानकजानलीजीयेउदाहर्नसंछेपकर
और अर्थसोवनायऊपरसोलगायली
जीये ५२ दोहा सत्रुमित्रसबकेचहेकरके
ग्रंथविचार जोजाकोनकसोईहासोसमा
नविरधार ५४ अथष्टंगाररसउ: नत्रसंगा
र कवित सीतलसमीरधीरकुंजजमुना
केतीरनयौवेससामसंगस्यामाविहर
तहे पुलकपसीजेगातनेंटहेसिसन
रातएकमेकग्रेकमेतिनकेहैलसतहे
बिनतीसुरतविपरीतकीसुनतगोन
घूघटवढायमुषमोरविहसतहे कोन
कवितेरछौछबीलीकीविलोनकहेरे
घजाहिकामहूकीचोकरीचलतहे ५५
वानीधीरमंद नागकांहूंघटकादतहे
कोनकविहेजोनके[illegible]हेकोतरनेजाह
जिमचितवनको [illegible] कुंजउहीपन

61A

पुलकस्वेरस्वात्वक नटवोफेरहलवो

फेरसतनरावनोयहहियकीडीनसमुज

वेहै यांतेअनुभाव अंकमेएकमेकहो

नोरतिस्थाई येघटवढायवौ लाजसंचा

री जमुनाकोनीरकुंजसुंदरेसथंगारको

लहनलग्यो नायकनायकाआलंवन

विभाव ५५ अथपूरनवीररु कवित्त अंग

उत्साह रहिमसूरवीरहापलीए वीरपचंद

नेउमेगमरैसंगमववीरकरेलरेरघुवी

नवणके वीसोंभुजाकाहै करूरकरकै।। पुलकावमान

रवीसभुजमरहरके पुलकसरीरमुष

मुषरूपी कमलवेहैरूपयात्नीपसेपो।। भ्रकटीजोंको कुटलहे जोरकर

पंकजमेस्वेरनीरभ्रकुटीकुटिलजुरै

वानछोडनेके डेजरवानहैं।। जेहूभमकेरे बातहैवेताओरपरघु

जानजोरकरके रेगमेमहैरेसुररघुकु

कुलकेजसकैगानेकरैहै।। शत्रुओंकेसीस कौं एकेनतीउपरकीहे तहैं।।

लेजसवटेरैरिपुसीसवाषेनितसरितहो

जोजानैलेगारुरीनातहै पार्वती पविहोर रकैर

नटरके जोगिनीवहानीवारचारसोचै

सोचतहैं वि[illegible]के स घरमा[illegible]रे

शिवरानीवीरकेहैमैहैघरलेवाउलेनर

के पद [illegible] रामरावनआलेवनविभा

व [illegible] संगउत्साहस्थाईपु

लकस्वेरसात्विकभ्रकुटीजुरैअनुभाव

सुरवीरर[illegible] मेरेगीनभमरेपैउही

सा॰

६२ पन हरिकोई नरहहै घर आवैगे यहसे

62 कासे वारी रोमहीमे संचारी कादैतो मकु

टीजरैनासों हियको कोप जान्यो जाय ५८

जव ही ताके छल कर लोग के नव की ३ कि:॥ श्रीरामचंद्र जी ताजी का भून्य मा

करनरस ३ कवित्त आसनसियाकोल हात्रे देषकर

व्याकुल है के तेसा सात्विक भये का निधिरस मे लिखत हैं॥ चिंतासौ

षपकनरहन गानेधरा लोटजानोविन

वो जेरा छिपो है॥ चिंतासंचारी॥

सोचनसो छायो है वार्ता आलंबनउद्दीप

नषपकनलेत्रसात्विक लोटवो अनुभाव

सोचकरे है तासो सोकस्थाई सीता आ

लंबनसोचनई हानकारसों चिंतासंचा

री षपअडुन ३ लागीहै कपूरवासना

रस निरषपासफुलकननेचेहै दीन

वचनसुनायो है वार्ता लागी है जिसके

कपूरकीवास ऐसे जो है नारद मुनित

नको देषके कोई मकरंद पासफुलककरके

नचत है मुनीसरके कपूरवासयाते अ

द्भुतरस भयो कपूरवासने अद्भुतको

बुलायो याते वार्ता कपूरवास उद्दीप

ने नारद आलंबन फुलकसात्विक नग

62A

अनुभाव है व्यभिचारी अपहास उदा

कोई बात
हरन कवित कोई सषी के विकी कहानी

तब नायका के कपोल मे देष के पांते ना ... ॥
उपचारी जेठ वधू के कपोल गोल गाढ है

तब हठी है के कहत है । नायक कहत कोन ही पार
विसी छुई हैठ पर आली सुहठी कहके कहेवा

तेरे जो पसेउ पुलक के भये है पर कोई न बी बात है॥
वे कह्यो कोन पुलक पुकार बात है नई

उठकर । सिखावन कर जो घूंघट देख के
घूंघट सो जोरि नारि मोर और और हेर वच

तब बहू कहत है मैं बैठी पै जातो पी
नडू अब चतुराई चित मे लई आगनि मेंजो

वैसी कहन लागी कर जो मैं छी वहा देवर जात ...॥
तिवनरा न होय परोसनि सो देवर की मेरी ए

री नीन आँष हूँ गई ५२ वार्ता हठीली स

षी हठ पारि के कहत है वाने कहवा वे कहा

वत है तेरे पुलक को पुकार नहे कि कोई न

ई बात है ते कोन हीं कहत घूंघट काढ के

गरर नको मोर के और न फेर षके उनि के

बचनकों चतुराई चित में लई चतुराई सों

बचन कहन लगी मे परोसन सो बात क

रनी आगन मे जात हुती नहा दीनकोन

कहो नीन आँष हूँ गई कहो वाको जिता

यो मेरो देवर भी काँनो है नायका आलंब

स०

६२ न कविंप्रुऊनिनकीकहानीउद्दीपनक

63 वोलमेगाढ्रयनुभावप्रुलकसात्विकघं

घटजोरवोनारिमोरवैसोलाजसंचारी

हास्यस्थाई ५७ अथमयानकउ० निसाग

येनदीनीरकेपत्रलग्योसरीरदेषश्री

ठसिरमोरकैरसुरझायोहै वानीरानती

रऊदीपन केपासात्विकभयस्थाई श्री

ठसिरकोजीवश्रालेवन सोरश्रुभाव

मुरझयोतोसोग्लानसंचारी अथवीभ

त्सउ० सवैया रैनमेसूनीलषेरनमेस

म नेचेडंष्यानकेजपडुचीर रकत्योपायम

हाधनकोप्रुलकै पलषायमहाप्रुरधारे

न्योनोकरैशिवदूतनंनाननिसोंश्रापस

मेमषपानसुधारे राधकीषोर श्रोघोपरी

कोषुरमाथ्यरनैननसिंघारेवधारे ५८

कालिका शिवकेदूतनको न्योमोकरनहै

कोम्योतारेननहैवेडसम कैनको न्योता

है तिनसोतिलमांसादिककोभषपान

63A

बायवेकोमोजनवनावतहे वषारेको
ग्रथीतवालदेहै रेवसनीरनभूमङही
पननस्य: बनुभाव पुलकसात्विक सुर
सिकारीग्लानमेंछीवहूनपरसग्री
व्रन प८ ग्रपरोगतु कवित सवील
कुटीग्रोकपटकोकुरेगसोचकेसोग्र
नंक फक
नगरनिगारेदेरहायहो सीताकोग्रेरे
घरे
रछगाछिनसेरेसोकछु गहनकृपा
(A धारस्पवादर
कहिसोनितसुषायहो केपनिसुधाधर
धरनेप्रगटवोलभुजाफरकनेजोपे
कंपायमान वक्ष
तुषऊवायहो धराकोधुजायनेगलेका
माला
तेबुलायसिधुरावनकेसीसहारहरको
वढायहो प८ वाली सोचविचारके गाथ
हृदनसोंसीताजूकोग्रेरेसोप्रछकेफेर प्रवे
कछुयावालमेंसेरेसनहीकृपानकेपक
रनहीरुधरकोसोषनकरोगो किंवामोको
सीताजूकोग्रेरेसोहेविचारहेकहाजा
नैकहागईकिनकोगईयहग्रेरेसोहेसो

र०

६९ कुंदनसोसंदेसोपठ्छके आगेवही ले

काकेनगपर्वनत्रिकट सनोपत्रकुटीउ

हूपनसोचसोसीताकी सेहोसे चारो

भरिनगरवारोगोयानेकोपस्याइ सा

हेसाविचारसेचारीनरवारपकरेहै

नुभाव अधरकेपासाविकमुजायक

अनुभाव रावनआलेवन पै अप

नउ मनितेग अंसिपानउनहूमेहरि

नहिवलेनजिपानमरनैनधानन

योहे वाली मनकीजोहै अननरवार पाए

हैपानमेजोकेसोउनमेमोहरिमान

सानननजकेनही चले नैनभरकेधा

लायोनिनमें मन अंसिपानउहूप

उनहूमेहरिसप सनतास्याईनहचलेयों

धनसेचारी धानअनुभाव हरिआले

वननैनमरनो अंसूसात्विक इतिनव

रसउ नाहनै अपअंगअंगीलं दोहा

हैनिनरसजहमिलनहै तोमेजोपरभा

64A न सोई अंगी होत है औरु अंग सब मान

६० वार्ता कोई सषी कवि की कहा न्यो उपचा

री इहां हास्य प्रधान सो अंगी श्रृंगार अप्र

धान सो अंग ६० अथ रस साद्रात लं० दोहा

धारा कर ते कर ते रस सा प्रेम ... [illegible]

करत भावना विभव सब है रूप हु गान क

सो रस सा ता तहै जाते॥

वि पंडित सब कहत है वहे रस है साद्रात

६१ वार्ता भावना चाहतना ६१ उदाहरन

... देव की भावना करत ही

दोहा छिन छिन कान्ह कुमार की करत

मतलीन नायका प्रेम में वस होके आप को ही लाल जानके

ध्यान नव बाम निज छाया हूं वि मुकर की

आप नी धा ... की छाया को ... रही सखी ... देखत है॥

निरषत बड़ी सुधाम ६२ वार्ता हरि रूप

आप भई ६२ अथ प्रेम लं० दोहा मानत

योग वियोग में योग हू माहि वियोग हवै बिछुरन वा हवी मन होय

विन जो समय में द्विविध प्रेम कहि लोग सप्पर के ध्यान के योग

६३ वार्ता वियोग में संयोग मानतो संयोग में

वियोग मानतो ६३ उदाहरन दोहा भलो

विरह हिय में बसि मिले विरह भय मान म

रकत लेत लोचन हि योग हम सुनी यो सुषदा

न ६४ वार्ता विरह भलो है जा में नायक हि

स०

६५ याबेवसतहै इहां वियोगमेंसंजोगमान्यो
65 मिलेतेंकेरविरहकोभयहोतहैइहां
संजोगमेंवियोगमान्यो विरहमेंलोचन
तरफरातहै उन देषवेको संजोगमेंहि
यतरफरातहैविरहमयसो ६४ अपर
समेतेदेह दोहा रसस्थानरसरूपहैवी
भत्समेंगिलान करुनसोकमयप्रगटहैया
तेंरसमतिमान ६५ वार्ता इनकोरसम
अधकारी जिसपैरस
तमानो ६५ अपनसमाधान दोहा अधि उपजे॥
कारीकोसमयवसउपजतहै सुषषान
रुधिरहुमांसनकोपियोभीभयमतसो
मान ६६ वार्ता अवहीवकरांकेपंचधातु
षातहै सुषमानतहैहेनोग्लानयेतोये
शिवके नाम
हर्षसंचारीहै ६६ दोहा शिवसेवकअ
रुजोगिनीमांरइनैअधकार ननपये
मा जनीकोसुनैरांयनसुषसार ६७ वार्ता
करुनरसमेंसुषजोनहीतोहनुमान
जीरमायनकोसुनैहै यांलेकरुनमेंश्र

65A धकारोभेदसोसुषजानीये ६७ दोहा
इकआश्रयतामारितेहै विरुधरसधीर
नारिहिसोषंगारपुनलाहीसोरसवीर
६८ वार्ता एकआश्रयकोपायकेकाराक
आलंबनकोपायकेविरुधरसहोतहे जो
भिन्नभिन्नआश्रयकोपावेतोविरुधनही
नायकाकेषतजोओरसोलरजीतेनाय
कनहोश्रृंगारकोभित्रवीरकोईहान्हेआश्र
यहैवीरकोआश्रयसुभटषंगारकोआश्र
यनायकापातेविरोधनही औजहाजहा
वीरासिंगारकोएकआश्रयहोयतहाश्रृं
गारसत्रुवीरआरपरसोओरभीजानीये
जैसेभीषमजामुषयामेभिन्नभिन्नआश्र
यहेयातेसिंगारमित्रवीर औरआजमि
लेजोयासोहासैश्रृंगाररौद्रकोएकआश्र
यनायकहैयातेसिंगारकोसत्रुरौद्रहै ६९
अथकेवलभाववरनने दोहा देवतादि
मेरसजहांस्याईहोयविरग सेचारोसुष
उचित
सपोयमेसाभाव

स०

वहां रहत नहीं होत भाव नहीं रहत तो

६६ भानजहनहिरसभावभ्रमेग ६९ वार्ता
66 श्रंगारभावनजपावेतहोरसनहीहोतभा
न वरहेईहोररसनहीहोत केवलभावहे
रहतहे ६९ तुल्यार्हनं दोहा स्यामश्रंग
तीवए श्रमरोमछविपैनेसदृगकोर श्रोषामें देस
जोषानिकेचितचोरतरैनेछोर ७० वा
र्ता श्रोषादेसहेतोकीनायकाकोरतरम
छोरमेईहारेवतो ७० दोहा मसभीनन
रूपतचटपोतेजलुरेपरजात घुरेधाम
वटंगजरीलोनेलोनेगात ७१ वार्ता घु
रे घूमतहेमगनह्वैजातहे ईहागजरीव
जातकीरतरजामे ७१ दोहा वचनतो
तरेहसतमुषडगमगातसीचालि धनध
नेवहजोकोगहेकेठछबीलोबाले ७२
वार्ता वहधनस्त्रीधन्यहे ईलोबालकमेर
नभावरस्योरसनरपो ७२ पुनः केवल
भावलं० दोहा गुरुद्विजपियकेमिलंश्रर
चाकरश्रारंगनाव रसाभासंलैवचायके

66A रसउपजेसोभाव ७३ वार्ता अपनेपिय
केजोगुणअपारहेतिनमेंजोरसउपजेकेस
रसाभासकोवचायकेसोभावहे पियकेगु
रोकीअविततियमराहेतहांभाव जोमिसो
चाहेतहारसाभास ऐसेईमित्रद्विजहमा
रमेजानीये ७३ अथस्याई निरंगनेरति
शरीर
भाव दोहा जगमगातंदुलिंगासमेंनव
त
जोवनदुजराय तोविनरेखेभीलनीघरी
घरीअकुलाय ७४ वार्ता भीलअधमसे
अंगस्यातनही जोद्विजकीरतभीलनी
सेनोरसाभास ७५ उन्मादभाव दोहा
धीरज तलवार
करसाहलकढिम्यानतेंगहंकरमेंतेस
मूरकार
सेरंचलोताहमारनसुभटवेधोपमसो
सेरं ७५ वार्ता सेरस्यामकयोनेरसनही
७५ सोकभाव दोहा ललनेललनान
समीविकैदियाकेलकोपानंमेगकरे
रक्षाल
वहुकुजमेंसखिमलंगनवेलाने ७६ वार्ता
नवसानवीनहेमनरजामें कुंजकेनास

लेडुषधोरोयोनेअनुसयानामेंकरुन
नहीं॥२६॥ सोहा अैसेकोमललकाइकोकरी
येनाहिंगोपालनेहिंगोरसविचवाइये
नाजकननेबवाल॥ वार्ता ॥ अैसीवो
रुनमेंकरुनकहेसोप्रमहे॥ अथवि
समप्रभावउ॰ सोहा ल स्यौंगस्यांमुकना
अवनिविछुरयोपायोमित्र पियहियेने
नविमेंवमेंवाहिर ईहांनेवित्रै॥२८॥ वार्ता
गयोमोतीपायो विछुरयोमीतपायोपिय
हियमेंओनेननमेंवसतहेओरबाहर
भीहे इन अवस्थानोमेचित्रआश्चर्यनही
मुकनादिकसोंअलोककचमत्कारन
हीयातेरसनहीं हास्यभावउ॰ सोहा सब
सिंषपुत्र्यासीकरौनेरोजसेलूपटाय मे
पंमाजरएकाइसीवसीसरनमोंआय॥२९॥
वार्ता काइसीमेरे घरमेंआयवसीहेअ
बीकिनेरेराजमेंसेंपषोरहननहो ईहो
हीनकेवचनसोंहास्यरसनहींपयो॥

67A

अथमयभावऊ दोहा अंसनचैनसष
वानकियमोहकमानचढाय जायसके
नहिंसामनेंअंगअंगथहराय ८० वानी
ईहामयस्थाईयांतेअंगनहीपायोअंग
तोम्रतादिकहै ८० ग्लानभावऊ दोहा
केसनेलकौंगधलहंवासमरंगजीम्ना
लंपानपीकलागीवसनंमिलीलाल
मोवाल ८१ वानी ईहापोरीग्लानसो
रसनही ८१ अथकोपभावऊ दोहा ति
यगीरीवंचितुकंहरिनइनपेंकिपद
गलाल कहनमुमटंसवमारहौवनमें
जेतेस्याल ८२ वानी हरनमग ८२ अ
थमोलनभावऊ दोहा लवगुनगावन
नगरमेंकाजररचिदाकाज जगरजगर
धरंनजमजेनोरसहिनंचूजराज ८३
वानी आधामेंचिदाकेलियेसर्वव्यापी
भगवानकेगुनकोगावैहै चित्तुकअंग
नहीलरिकेहरिभजेहै ईहाअंगनहीपा

स०

६८ पायो अंगसोंलपरस्वीनत्वरपानइत्यादि है
68 ८२ अथ परसेवारीकेप्रधानसोभाव ३ दो
हा मुखप्रमस्वेदकनालसेंवेवलकुंड
लकानं (शरीर) घटमेंवें (हमो) हदेघटकिपेंवसेसदा
विचक्षान ८५ वार्ता वहनायकमेरेघट
कुं मेंघटकिपेहुयेभीवसतहेसदा ज्ञानो
वीच ईहांस्मरनसेंवारी अधकवहायो
पंतेरनभावरहोरसनभयो ८५ इति
केवलभावअपरसाभासलं० दोहा
रसाभासअनुचितकेरं ७ त्रपितासोंर
र हसीकरेगुरदेवकीरसे अंगम्यानार
८६ वार्ता जहांअनचितहोपसोरसाभा
भा स ८६ अथ भावाभासलं० ७ दोहा सतु
सत्रु सत्रुकी स्तुत करत हैं वहु अनुचित है तो पहां जो रत स्पामी होरत नहीं कींठरत्या भाषहै॥ एसेही सोत मैं जोर॥
करेस्तुतिसत्रुकीवेस्यादिकमेलाज भा
वोभासकियोत्ववसलौंतेसगुनवृजरा
ज ८७ वार्ता एसोतलोअधपन्नेमलेगुन
सोनायककोवसकियोलोभैनेसोरह
पगुननाही ईहांदेनसेवारीकोभावा
वेश्या भैला समनुचित हैं पातेलज़ अमचारीको ता भाषहै॥

68A

नहै इति भावाभास दोहा थाई है कहू
होत है से वारी रस थाय हास्य कोप उत्सा
ह भय वीच सिंगार लषाय ८८ इति श्री
हरिचरनदास कृते सभाप्रकासे चतु
र्थोल्लास ४ अथ दोष वर्नने दोहा बुध
रूप रस दूषही (दूषितकरे) ऐसे जे सब दोष आल्य
को जिम (जैसे) अंधता (अंधा) मूर्ष वधरता (बोला) रोष (क्रोध) १
रस दोष ल० दोहा रस रस वाचक नाम
के कवित माह प्रकास (कहीं कवित में करीए) कवि से मत (साड़ी) क
र कहत है होइ दोष अवनाम (वाही दोष होत हैं) २ वार्ता
रस और रस वाचक सिंगारादिकन के ना
म के जहा कवितो में प्रकास उ होत होय
किंवा रस वाचक के नाम होय २ उदाह
न दोहा हरि राधा सौं रस भयो वेसी वट मे
आज कियो सिंगार निकुंज में कहत हे
न मो [illegible] ज ३ दोहा वसन गोपका के
हरे भयो न हो रस हास्य भयो रोन के सी
हसन से से रसन प्रकास ४ वार्ता व

स°
६९ स्त्रुहरे इहाँ हास्यरस ध्वनि में आवैगे
69 ५ दोहा जोरस आदर रस को कहे तो दूषन
लूदेय सरसरस कहत्यादि को गहन तु
मनकर लेय प वार्ता सरसरस कमे
दूषन को मत गहन करन हा दोषन ही
कियो सिंगार निकुंज में इहां सिंगार को
अर्थ है जो भूषन पहर नो तो दोषन ही
स्थायी विभाव ... अनुभाव संचा
पञ्चपपुन दोष ल° दोहा थाई विभचा
कना ... वता पैरहे तो दोस हे तो
रीन के नाम गहे ते दोष थाई की जहां म
मजन हि जानो न हाय दोष ६ वार्ता
जहां स्थाई को कहे विना समझन परे त
हा कहे दोषन ही ६ उदाहर्न दोहा
है कृष्ण तिरछे राधाजी
आज सखी हरि देखके प्यारी को नो क्रोध
कृष्ण देखै ... छोड़ न
राधा पति में रत सरावट्ठोल जन न अव
रोध ७ वार्ता अवरोध नाम भी विरोध को
है ऐसी ठौर में विरोध न जानि है दोष
मैं न लाल कीये मोहु वर्टाई थाही ने को
धजान परतो पाने दोष ... रो से

69A

सेचारी जानीये राधा हरि मेरतको अंशप्रीत

ईहां स्थाई की समझ नहीं ७ पुनः दोहा कहे

आपनी क्रियनते संचारीन लखाय कारन

कारज होत जहे नाम गद्योत ह्वां जाय ८ का

ती जहां आपनी क्रियाते संचारी प्रगटन

होय तहां नाम कहे दोष नहीं ८ ऊदाहर्न

दोहा तिरछी चितवन वामकी मिली लाज

मयलेस हिय उन्मादिक मोह जु तनज्वर लो

रेत कलेस ९ वार्ता ईहां लाज मय उन्माद

मोह इनकी क्रिया ईहां कहे वन मन नहीं याते

इनके नाम कहे मोह मूर्छा ईहां लाज परक

है दोष नहीं लाज की क्रियामे घूंघट करनो

सो ईहां कहे नहीं वने प्रेम मय उन्मादिक मो

ह जानीये ९ दोहा तियकी उत्सुकता घरी

चले लाल उपजाय तासो लाज नई शरीर

हि हिलोकन न छाय १० वार्ता तियकी उ

त्सुकता लालकारन ते चलनाको चचलनाका

[illegible] ते चलनाको लाजको काज भी

स०

१० जानीये ऐसी ठौर संचारी के नाम कहे दोष
नही १० पुनः दोहा जौ विभाव अनुभाव ये
रस व्यक्ति कष्ट तें होय जो विरोध रस आदि में
दोष कहावत सोय ॥ उदाहरन दोहा को
हु सो अनुराग न हि चित हित ता में लीन जो
रत भावन में जप गान ग्रेयम में छीन ११
वानी इहां सांत रस को विभाव भासे है सो
करुन रस हु को विभाव भासे है सो जपर
सो नीठ सृंगार को विभाव जान परे है इहां
विभाव की व्यक्ति कष्ट सो १२ दोहा लखि
कटाक्ष दे वारी वह वारी वेस रजात फल चे
लावन हारि वह नाह विरष सुख काम १३
वानी इहां कटाक्ष को फल चलाय वे सों अनु
भाव सों नायका को विशेषन की यो कहा हू
करे है फल चलावे है ऐसो वानी बीये इहां
अनुभाव की कष्ट सो व्यक्ति १३ कवित्त
प्राचीन वा की कटाक्ष हिलै वौ लिषौ वहु
धा वर ज्यो दिन में दिन कारी [illegible] पावे है

70A

कवीकहतहै मैंसिखादेके

गकीरसखानलिखावनदैरिनहोपवंदा
री कोनकोंसीखसिखीसजनीअजहूंतजे
दैवलजातुलिहारी परकहूनेरनेरनके
परजेहेअनोखीनिहमेनहारी ५ १५ वानी
तेरेहितकेकरनवारो जोहितहेतिसकरके
मैंनाकोबहुभांवहुतप्रकारवर्ज्यौ ऐमेंनेरेष
वोलेजोसीष्योहैतिसनेवर्ज्यो ऐोलतें अपने
ईटेगकीहेसिदानहीमानत दिनप्रतिहे
सिद्धोरहैकेपवेहारीतेनमानीवाकीचिनव
के नैअजहूंतजेरै अनोखीनिहारनहारे सो रे
षवो अनभावनाकीव्यक्तिकहसो दोहा
विपसोमानलकोजीपेजीवनजोजलरे
त स्यामचिकुरविनकोहेरेहूदेकवहूसे
त १५ वानी ईहांश्रृंगाररसोमसोविरोध शृं
गारमेसोलरसुष्यन १६ अपपुन रोषलद
न दोहा करैवगुनिकमपकृनकोंजहोव्याति
कमतुलालावनेकोरे रोमसदाअनुकलंब
तुलई सोचौ कोरेषेहेयासवता १६ पुनः

विपरीत
क्यानहं
पवकत
वर्णनकर
नीवहिदाषहै

सं०

71

११

लछन दोहा रसवर्जैसमाधुर्जैकोकरिजेनाहि
मिलाप हौनहानरसकौक्रियेरसिकसराह
नमाप १७ उदाहर्न दोहा हरिननतेंनचितै
अलीछिनमेपरतविहाल अननकोटव्रह्म
डकोपापलगेगोबाल १८ वानी हरिकीतर
फलतेंनदेषनरदेषते तोकोपापलगेगो अ
नेनकोटकोअर्थ अनेनंकरोह एकएकरोम
मेकोटकोटिव्रह्मांडहेतेरवहेंगे १९ उदाह
र्ने दोहा मोहनकोव्यापककहेवनेनेरस
नचाव वनेनहीअसमसारपुनअनेनविरस
अभाव १९ पुनलछन दोहा नरहेंमेअमना
अगटकियेहोनरसहान मानरहतनिअ
कोजहोनहोहोयसुषकान २० उदाहर्न दो
हा भूपनकोपरिनारिसंगसुनचुपवेगोवाम
देषनहीतिहतेजमयनजरिसकरतसलाम
२१ वानी राजाकोंतेजलषिमानगयोजोनें
रसनरसो मानरहतोतोरसहोतो २१ पुनः
लं दोहा नियकीरतिवहुपुरषमेवहुनि

71A

पद्ममसमान याहकोदूषनकहेजेकवि
हेसुजान २२ वार्ता वहुतनायिकनमेजिस
नायककोसमानप्रेमहोयतौधीरसद्रे
षहे २२ दोहा सवासनगनसुनमगकेसुर
रतननरपाल सवकीछविपेछकरहीं
देषनहीनवबाल २२ वार्ता इहाँवहु
तपुरुषमेरतिदेषनतेनायककेधीरसपाष
कनहीं २२ दोहा केतीनेरंहियरसकीके
तीवरषवतीस केतीवालसवरषकीके
तीवरषनिवीस २५ दोहा रवेष्ठीतजेर
कसीयहैधर्मकीरीत २समेकहततसुष्ठ
तेनामाननतनहोप्रतीत २५ वार्ता इहे
नकेधर्मकीयहेरीतहे सोरसमेप्रेतनाक
हियतहे २५ उदाहरन दोहरा नवमषन
सौतिनसजेसबनबुलायपास राषतमान
तियानकेसाथसरनप्रवास २६ वार्ता इहा
सषिनकेमानराषेरसनहींभयो कोईसु
रहींपासजानेकोईमानकरतीकोईषेउता

स०

७२ 72 ह्वेलीनवरसहोतो २६ दोहा मानतिषेउ ।

तो आरपुनमेरनहोनकितनेक धर्मरीन

अनुकूलमेंओगुनगुननहिंएक २७

वार्ता अनुकूलमेंभीधर्मरीनहेसोभीरस

रीतमेंओगुनहै नहोमानतीषेउतोआर

कितनेकमेरनहीहोत रसरीनमेंथह

सबंमलैअंगीकोअनुसंधाननहीअने

गकोप्रकासनआरसोषंगषकेहेवेनही

लिषे अनुसंधानप्रपन २१ इतिरसदोष

अथअधाहारल० दोहा आकाछेनजो

परसैकेविनामैनहिहोय ताकोजोसे

आनवोअधाहारसुजोय २८ वार्ता आ

काछेनजोचाहितोपरकविनांचाहेसो

नहोयईहांकोईआछेपाधाह [illegible] न

कोईव्रजननामेअनर्थ [illegible] करनहे ३ कु

हर्न रोस आवेकविनारीनन [illegible]

नसुरसविलास जोलोपदै [illegible]

पदुसमाप्रकास २९ वार्ता [illegible]

72A नपटेकवि परकी चाहकवितामेंहोय
ईहाहीनपरदोषनहीं ॥ प्राचीनहों हो सो
हा उत्तमेममध्यम ॥ अधमनरपाहनेंसिके
नावार प्रीतग्रंथनुक्रमसेंजानीयेंव्यसपवे
रविचार ॥ वार्ता ॥ व्यसपंतुलटोविध
ईहारेषाको अधमाहारेहीनपरदूषनहे
पिछलोरेहाहोंमेंतोपढेयहक्रियाकविको
त्यावेहे उदाहरनीदिषायोहेरहीकागजि
नषाय ईहाकागकेकहेजिननेरहीषाय
वालेसबजानीये ॥ रसकप्रियाउ ॥ दो
हा श्रावनकहिश्रावेनहीं आवेप्रीतम
प्रान जोकेघरिसोंषउतोकहेसुबहुवि
धिवान ॥ वार्ता ॥ ईहाघरप्रानउपलह
नेंश्रोरनायकाकोसंगकरनायकमें मे
बनमेंआवेदोपहरसोंजकवहेआवेष
उत्तोहोय उपलहन औरनकेजिता
वनवारेहे घरपरतेमगमेंवनमेंभीजा
नीये प्रानतेंदोपहरोतोगलीजेकवहे

सं० ७२

73

आवे घातेपरआनउपलदन ३१ कवि
ते मोहनमंजुलकुंजकेद्वारमिलेकरमे
दुलिफलछरीकी पीककीलीकलगी
अषीयोपरवारदई समलासफरीकी
मालपैजावकरेषनहींसषिमोहेगई पटा
चढेगोपनरीकी लालसोंबालकसों
मुषपेंछविवरोपहरीविनदोयहरीकी दुपहरी
३२ वाली कुंजकेद्वारनायकाकोनायक
मिलै फलछरीकीसोमांजिनकेहाथ
मैंहै दुपहरीयेफलकीछविदे कुंजमें
दोपहरीमेंषेडनामई मोहचढीउपल
दन आषेलालभईकंपभयोओरजि
ननेक्रोधकेअंगहैतेसर्वभयेजानीये
ओरनंकोअधाहार ३३ अपलदकी
रीतवर्ननेदोहा लदनभेदककीजीये लदनको लछन
दुविधसमांनेविसेष जोविसेषमेंभेद
जौ विशके लछन ना पा नहेतोदूषनअतिदेष ३४ वाली भेद
त्य में घटे तो मा कभेदकेजिनावनवारेलदनकीजीये
निद्या प्रि दूषण केहत हैं ॥

73A जिसलेमेरजान्योपरे जोविसेषलद

नमेंलदनकीविशेषनाकोमेरनाहोय

सामान्यमेंमिलनोहोयनोदूषनदे

केसवरोहा कौनहुदेरननप्रावईप्रीन

मजाकेधाम नाकोसोचनिसोचहियके

प्रवेतुत्कानाम २५ वार्ता धामकीठोर

सेकेनचाहीये प्रोषिनपनिकोमेंमिल्यो

सुंदरसिंगारमें संहेटलषिप्योसोमलोमे

रंजितावनवारोलहनकीयोप्रोषित

पतिकोमेंमिल्यो २६ प्रणउराहनेरीत

बरननेरोहा उराहनेजाकोकहेसोप

रंषटलहिनाहि नम्हरोषसरोहयेकवि

समकेमनमाहि २७ वार्ता जाकोउरा

हनेकहियेसेनलहनाप्रगटे नोभीरोष

है २८ उराहने सुंदरसिंगार सवैयासो

वनेलैनकरोटनवोढकीनी चीलटेपले

कोनेपरीहे रेषलहीहेरिरोरकेसुंदरसो

यकेनागिनसीपकरीहै लैदुपटाष्प

र०
७४ नो अपने कर पोछके सेज हिमाद धरी
74 है प्यारे को प्यार निहार यो री ऊ मइ छ्बि
कवेर सषी सगरी है ३५ वार्ता अथ छ
रिनजोवना मुग्धा मुग्धा को भेद नेवोढा
लाज सो भयु सो जा की रैन पराधीन होँ
य सो न ही नि करौ नामले नायका न हो
होय लवन ने नायका दो यो है सो वनमें
मुग्धा मध्या प्रोढा सब वरावर ३५ अथ
एकवचन ल० दोहा एक वहुन वोचके
रहो ओ रे आरनेकार भाषा में हुवे वच
ननहिं कविन की यो निर्धार ३६ वार्ता
आयो गयो पायो इत्यादिक में ओकार ए
कवचन एक ही प्रतीत होय एक ही ओ
यो आये रहे पाये इहां एकार वहुवचन
वहुन की प्रतीत होत है वार्त निगात नि
हाय नि ई हां नकार वहुवचन आइप
इसो वनी यार निया सखिया अँषे से जानी
ये ३६ दोहा एक लिषै इकवचन है हैव

हूं। आस्रहेत होजेवहुवाचकसमाहरि
सवकोमानिलेत ४२ वार्ता हैमेंवहुन
मेंआस्रमेंवहुवचनहीजे ४२ आप
जानिलदत दोहा एकवस्तुकेआनसों
जानीजात अरेष अवयवहुकेवीचसो
जासोजानितुलेष ४८ वार्ता वहुतअ
वयवहुकेवीचसोजानीजाय औंवयवे
अंग जैसेएकघटमिटीकोहोयाइस
रेतावापीनलकोवहीघटकोछोटावडो
घटजानीयेहे यहजोघटहेअैसोंजोको
ईधर्मसोजान ४८ दोहा जानिवहुतमें
एकहैएकवचनकीठोर व्याक्तिमेरजो
कीजीयेतोकीजेकवहुओर ४८ वार्ता
जानमैतोएकवचनहोयजानेएकहै
जैसेब्राह्मननेऔरब्राह्मनआछोहै
सोनहीकहायव्याक्तिमेएकरकहाय पा
ब्राह्मननेऔरब्राह्मनअचलो पानायका
नेऔरनायकामली यहव्याक्तिमेएकर

सं० ७५

75

नायक का कहत तरै रहे ना
पका तु कान की वडी लाज काहे

कह्यो बिहारी षरी पातरी कान की ईहां
जान बिषे एकवचन कान होय है ता मै ए
कवचन दियो सो जान मै है यो नेहु ही को
ग्रहन होत है अरु मौन मै करत है आषन
हौं सो वान वार्ता आषन ईहां बहु श्रिमै ब
हुवचन है तोर स राख्यो आन बस कहो
कहै मन कर वार्ता तोर सराख्यो ईहां ए
क नायका मै तो यह एकवचन एक नाय
का तो मै राख्यो यह एकवचन दोहा कुंज
भौन तज भौन को चलिये नंदकिसोर
वार्ता ईहां चलीये आदर मै बहुवचन
अपअंश अयलतन दोहा अन्वय पद से
वध है रहे न सो निहठाम अर्थ मेल लाय
न सो ल्यावे क बिवरनावे ५० वार्ता से
वेधको जो पद है सो तिस स्थान मै न रहे न
हा वाको लेवे वध है तिस पद को अर्थ मेल
के ताम जो सो आनीये ५० बिहारी दोहा
नेजे कधर नेह रिहीय धरे नाज कै कम

कहत नरत
रीझत षिजत
मिलत षिलत
लजात ॥५
रे मौन पै करत
हैं नैन न ही सो
बात ॥ यहां नै
नों मै बहुवच
चन्य किये है ॥

पहां एक क
न कहत नेक
र कै फेर
देपह ही को
जाती सो वे
धायको ॥

जीवन को
री कि उल
बो बोरी
चाम तोर
तोर सरा
ख्यो आन ॥

कोई राधा सो
कहत है है
राधा कहा देव
ते रहि रस मै रा
च्यो है जो कहत
है हो र केवस
है से पत के
फल है जीम
उ कन कौन
न मो स्ती को
उ ते कि उसो
ले वैली राधे
पल लेको गार
बाकर के

कमलाका मकर ... चंरन वनमालपयमीनकै मारयप

लक्ष्मीजैमेंफी ... मारकेउरके ... कमर मा

लोचाल मजलमार मयमीनकेयनचे

पुष्पमालाके

रसवनमाल ५१ वाको अर्थ वनैतवलो

इरांचपनहीकोजीये अथसमासलं०

दोहा जौसौं अवकौं नाहकें करयार नहोत

हिहोय अर्थ कहत नहि शानसो लष

समास है सोय ५२ वाको सो है तहे प्रथ

मा नाहिर तिनने हितीया नाकरे ति

नकर ततीया ताके लीये तिनके लिये

चतुर्थी ताते तिनते पंचमी ताको ति

नको षष्टी तामें तिनमें सप्तमी अं

तं अजे गुन जहा समास वतो होय साधु

जे गुन से समास पोरो होय ताते लिष्यो

है ५२ विहारी दोहा अधर धरत हर के

परत ओठ दीठ पट जोत हरित वांसकी

बांसुरी इंद्र धनुष रंग होत ५३ वाको

ओठ औ दीठ औ पट औ ताकी जोत ह

रित जो वांस इंद्र को धनुष ई हां औ तो

की जो को अर्थ कहन में आवे है ५३

७६

76

पुनः विहारी ॥ दोहा सीसमुकटकटकाछ
नीकरमुरलीउरमाल यहवानकमोमनंस
दावसोविहारीलाल ५५ वाली दूहमैत्रिक
रेहेस्येसेज्ञानीये ५६ इनिश्रीहरिवरनरा
लकुलेसमाप्रकासेपंचमोल्लास ५ अथ
शब्दवरननं दोहा नमजशब्दधुनि
रूपद्कदककेवरनसरीर योगरूढपुनरू
ढहेजोगिकंकहेसुधीर १ वार्ता नमंश्ब्दाका
सनेजोउपजेसोशब्द ताकेहैभेद एकथ
निरूप एकवर्नेरूप लक्षन दोहा जोगरू
ढसोधनसहेत रूढयसाधननाम साध
नहींजोगीकेलगेत्रिविधहेत्रयग्यनिराम
१ सवैया आईहोदेषनलालंअवहीलजनी
मवहीतुवबालचलावन कीरनजोडरिये
चतुराईसुमैजुलकंजसेनेनतिचावनि
चाहितिहारीतुमीचितमेहरिनेसनचार
सिंगारबनावन बोलनबीनमोझीनमनो
हरमेडोमैवेवीहेरेझोंडवावन २ वार्ता

76A

साधन कहीये जा ह शब्द को अर्थ होय रु
ढ कहीये जाको अर्थ न होय जोगरूढ जो
को नाम होय ना ही को कहे और शब्द के सा
थ विना ह्लेष आदि विषे कहत हे घेर मयो
जलजात ई ह्ला पानी को जात यह भी अर्थ
निकरे हे अप जोगरूढ वनी ते कंज कंना
म जल को नाम उपजे हे यह साधन मोती
औ सेवार एभी जल मे उपजे हे यह भी कंज
को न कह्यो यह सम कमल पर केजेन
ल ज नीरज पंकज इत्यादि रूढ भी हे याही
तरह नोसत शब्द सिंगार पर जोगरूढ हे
२ बिहारी सोरठा धुरवा होहि न अलि यहे
धुवांधर निचहुं कोइ जारत आवत जगत
को पावस प्रथम पयोद ४ वाकी पयजल
को देय लो शब्द पयोद मेघ पर जोगरूढ हे
और सब्द के साथ और को कहे हे नोसत
कला धरे औरहे आई गो हन गेह मे का मिति
नोसत न साजे इहां सिंगार जानीये अपर रू

२२॥ दवनिने वार्ता मेंडीघरमेंरहेउवाइसा
दिजानीये ५ विहारी दोहा गहरवना
वेलवि अलिकविनवनमोहकमान
आयवेकाईहोवदेतनरविनुरेगमतानि
५ वार्ता गदवसविहिमादिजानीये अथ
जोगिकवरीने वार्ता कीरननजाईइस
रीकेन्याहोयसोभीकीरननजाइकेहावै
चतुराईविनमैचतुराईकविनमेचतुरा
ईपवीनकीक्रियामेचतुराईयेमेरहा
ईचपलाईसुमाईआदिजानीयो अथ
शब्दवृत्ततेअवधालनताकेजनावने
कूअविधालनदोहा जाहशब्दकेकह
नहींरहमेंजोसुलषाय नहाशब्दकी
वृत्तजोअविधासोकराय ६ वार्ता जो
शब्दमेंअर्थहोयसोसहजेहीदेखायदे
शब्दकेकहतेहीं ७ विहारी ३ दोहा सी
समुकटकटकाछनीकरमुरलीउरमा
ले इहवानकसोमननसदावसोविहारी

जातिमेंहीहैं
नैयावकेंके
मतकेअनुप्रा
रजातिऊरेरवा
तिऊरेस्याकृति
(ाकवदर्षीम
त्योहैवापेंतो
श्रोपैकही
हीरहतहैं
शांति॥

77A लाल ७ वानी सीसमुकट आर जे श
केहैं ते आपने आपने वा वर्ण को कह
(आ) (मोरमुकट)
त है सीसमुकट के हैं सीसमुकट जानी
ये कटि कहै कटि का छनी कहे का छनी
इस कछि प्रइत्यादि का कहे जाते नाम वर्ण की प्रतीत नहीं होत कछू व्यतव
जानीये अषरार्थ की प्रतीत नहीं होत
है जासों सो अविधा ईश्वर को कियो सं
केत घट कहै पट नहीं जानीये पट कहें
घट नहीं जानिये अविधा को अर्थ नाम
जाको जो नाम राषे सो ईश्वर पुत्र को मा
तपिता राषे वही ईश्वर ७ ऐसा गुन अर
द्रव्य क्रियान में रहे निरंतर जान अवि
(जा तये) (ना)
धा तहा सु जाति में द्रव्य क्रि अनेक लषान को
८ वानी जान मैं अवधारा कहीं है वाकि
तो मैं अनेक मोन सो अवधारे थियत है
गुन में द्रव्य में क्रिया में जात रहत है अवि
धा न हो तहां कहीये जान मैं अविधा मा
नीये जैसे बालक को अवबनायो स्या
म रंग को छोटो बालक ने स्याम रंग को

ऐसो इत्य
वृद्ध को नाम
नहीं वन तें जौ ठि
प्रकहे इत्यह
द जान परत
है जासो वह
सबधा

स०

१८ छूटो तो सरीरको अध्यास जान्यो इसरीवार

वडे अध्यं त्वेन रंगको वसापोन वकाल

कने अंग विशेष सो जान विषे अध्वश

र कीहे न्न जानी यह जान में अवधा श्रो

त्र आदि इन्द्र रवसीन वीको ज्ञान प्रमान

के कहे सो होन है इेवरन कहे देवरनकी

पुतील इत्यादि येष्यक्रिही में अविधा जो

एक्य रुपी है तो ये जान न्हीं जान वहु

तन में एक है जानिको लक्षन पीछे क

ह्यो ईहां प्रसंग नैं कह्यो ८ अथ गुनद

रूपादि चौवीस

यकादंः सो हां गुन है आपनन्द यके द

रहै जैन

यक है गुन च्यार ते जे वागुन में काल यव

निरूपन कर

दिसा आत्मन बधार २ वानी गुन रूप

ई चतुराई निकाई रूपं रस आदि जानीये

अथ क्रियावर्नने वानी चलनो देखनो

बोलनो हसनो आदि जानीये विहारी उ

सोहा जुक जुकौ रूप कौ है पलन फिर

फिरजतर जसु आय बैरंधियागमनी

तं भाई

पीपा जो जाने वे
दास नाप काने

रमिलरीसवंअलीउदाय १० वानी
जुकवोआदिक्रियाजानीये अथलद
नालदन दोहा मुष्यअर्थकोबाधजो
रहेमुष्यारथजोग औरअर्थजोसोलषे
कहेलदनालोग ११ दोहा रावीसक्रि
मुलदनाध्वनिविनरुहारूप सोप्रयोज
नवनीजहाउपजेध्वनिकविमरूपे १२
वानी शब्दकोरुकअर्थमुष्यप्रधानता
कोबाधहोयसोनहीसंभवे औरइसरो
मुष्यप्रधानअर्थकोजोगहोयजाहिइत
सोऔरअर्थजान्योजायसोलदनाहैत
मेरेवटआयोमट... लोटिवोअंगारको
अंगारकोअर्थ~~आगनाको~~ लोटवोनही
संभवेअंगारकोअर्थदुष्य लोटवेको
अर्थसहनो अंगारकोअर्थआगनोको
बाधभयोमेरेवटआयोहैनरेरेष इत्यादि
मुष्यअर्थकोजोगहै केवललोटवोअं
गारकोहोयसोलदनानही ध्वनिमेंजे

स० १२
79

सोकंतु आगमसो व्रहेतु षहोतहे औसेहे
षविरहसो होत नहे १२ बिहारी दोहा
धुरवाहो हिंन अलिये हे धुवांधर विच
है कोर जारत आवत जगतकोपावस
प्रथमपयोर १३ वाली ई हाजारवेको
अर्थ दुषरेनो १३ दोहा विरहजरीत
षिजीगनन कह्यो नतु हे कई वार अरी
आवंमजंमीनरहवरे मतआजं अंगार
१४ वाती जरीको अर्थ दुषीउहे को अर्थ
दुषपाये अंगार ई हां गोनी लहनो १४
नुससिंगार। कवित्त जाकेरूपं आगेर
परतिकोरती कलागे तिलोमे रिछविके
तिलोतमो नन लहे वाती रतीको अर्थ
थोरो तिलको अर्थ थोरे बिहारी जान
नकी जई परेस्याम हरनं दुलहोय वाली
स्याम कहे कहां हरि लेकहे कानें स्याम
ई हां साथ्य वतानाचे र सुषी तुव कम
लकर इयारमें पली दुअर्थ केलाथने

79A

धनि अर्थ को योग ते लछना सई यहै ई

स्वरकी करी शक्ति नहीं यह राधी शक्ति है

जामै ध्वनि नं काटै सो निरूढ़ा जामे ध्वनिका

है सो प्रयोजनवती अथ निरूढ़ा उ॰ दोहा

डिगत पान डिगलात गिरि लखि सब ब्रज

बेहाल कंप किसोरी दरस ते धरे लजाने ला

ल २५ वार्ता ईहा ब्रज को अर्थ ब्रजवासी है

जैसा ब्रज देस वाचक है २५ बिहारी जिह है

नके लनि कुंज मग पग पग होत प्रयाग वा

र्ता ईहां ब्रज देस वाचक है या मे लछना नही

२५ दोहा स्वर दुतार मे बाह पुन लरन माल

वा आज लरन लखो सरवार है लरन समुद्र

नं निज काज १६ वार्ता हुदार आदि शब

देस वाची है देस नो जट है देस को लखोन

ही से मे वे है देस अर्थ मुख्यता को बाध भयो

प्रमान निको वचन है फेर कहे है देस लरे

है नाहि देषो ईहां देस मे शक्ति राषी है दुता

रि मारवार के वासी लोग लरे है ईहां धुनि

ब्रज देस है
... को वे...
लक भीतर
वनत पाते
... प्रगट ...
मन्व पवेहा
ल मै नव...
पाते ब्रज...
दुकी ...
ही मै लछ...
केरी ...

२वो

नहीं निकारी वक्रा को तात्पर्ज ये है सखा सी प
रहै यो लै निरुद्ध १६ दोहा पीठ दे हि मनि
लाल को मन ले दे वठ विचार हवा था हु वन में
रमो दे हु गने कनि हार १७ वार्ता याहीत रह
पीठ दे हु हवा था हु वन में रमो इत्यादि ऐसे जा
नीये १७ अथ प्रयोजन वनीतु विहारी दोहा
किनी व गोकुल कुलवधू का है न किह सिष
दीन को नैन जो न कुल गली ह्वै मुरली सुर
लीन १८ वार्ता इहां कुल में गली नहीं सम
वे गली ग्राम में से मवे ई हां गली को अर्थ
रीन कुल छोड्यो ऐसो ई कोन कह्यो कुल
को छोड्यो कहे कुल को त्याग आवतो यह अ
र्थ नहीं हो तो कुल में तो रहे है हरि विषे अ
ति आसक्ति गृह कार्ज विषे चित नहीं हरि
के रूप में छक रही है यह ध्वनि भाषाभूष
न दोहा चैन मीन नैने है पी ये सर ला व हु न
अनूप वार्ता नैन मीन ने इहां गो नी ल स ना नै
न मीन नहीं से मवे मुख्यार्थ को बाध मये नव

यहां पीठ का ०दे
ना नहीं वन तर्पीठ
प्रकार देने जैसा
पन नहीं वन तदाते
निरूपण इष्टे
इ किवार स्याद के
देना जानीए ।। कहो
किवार उतार के
कछू केपन को
। नहीं देरे ते पाते

408

मीनकेगुनलिये सुंदरताचेवलना
आरसरितावहतईहांमीलतनामीन
नेसरितानहीसेभवे ईहांसाधवसाना
लतनाभई ईहांसरिताकोअर्थओलस
तानुसविकारोदनकरेहेयहधुनिईहां
साधारनेलतनाकोउत्पाहनेहे साधव
सानागेनौइत्यादिकआगेकहेगे भाषा
भूषन दोहा कोकिलकीवानीअवैबोल
नसुन्योकपोत वानी कोकिलकीवानी
कोअर्थमधुरवानी ~~कोअर्थमधुरवानी~~
कपोतकोअर्थकवूतरसोकेवहे जाहि
नायकाकोवहिनायकाबोलतहे धुनि
कोअर्थसुंदरकेवनेमधुरप्रियवचन भी
षाभूषन दोहा नमसूपरकेचनलता
कुसमछहे एक वानी ईहांसुभाअर्थ
बोधवयोकेवनलताकोअर्थवीतुरी
कुसमकोअर्थवेदमांईहांविसेषधुनि
नहियोनेसाधवलतानाबिसईहांजानीये

स० ९१

81

विहारी दोहा सुषमोटे लटे लेलन ल

षलेलनाकी लोट वानी सुषकी मोटमो

टकोअर्थ वहुत दोहा नुवाकेनैननिम

नीरहत राति दिन लाल कौनवहेजत

नामहीजाकोघरसोवाल १८ वानी नैन

नमहीनेत्रोविषे जमुना महीं जमुनामे

जमुनाकोअर्थप्रवाहतामे घरनहींसे

यवे जमुनाकोनीर सीनलेनापविअश्रु

निकोअर्थ नैननमेवससौनहीसेनवे

नैननकोअर्थनजीकअश्रुनिकोअर्थनुम

वाहीकेआधीनहोएक घरीवाकोसंगछो

डौरतौरतनहीजानहौहमसोडीन

नहीइत्यादिधुनिजानीये १९ सवैया

देतहैपीठसषीगनकोजिनचेककेरा

वरीवानकहीरे मानकथानिकोपान

करेपिकवैनसोपैनमने निरहीहै जो

लौनसालनिकारहैवालनमानहैकोप

महीउमहीहै लालनिलोकोनहीमे

यहां सुषवं नहीवनतया नेतात्पर्य त्रिवलीकात्पं तसुंदरतान हीति करैपा नै

81A

है षोषनहावहरोषकेरहरहीहै २० वा
नी जोलगनाईवहवालअपनेमालको
नहीनिकारनतोलकनाईनहीमानैहै
किवातुमआपजोलोवाकेमालकोनही
निकारनतोलोवहमानहैनही कोपम
हीकोपमे पीठकोराननहीसंभवैहेनै
कोअर्थपिरवेठनोईहानिरूपाकपाको
पीवनोनहीसंभवैपानकोअर्थसुनवो
तुमारीवहुनचाहनहीहैइयारहभि
ईहारहीकोअर्थहुषी सोनिसोमालई
हालदनानरीमेघोषगायनकोस्थान
ईहंलदना २१ अथउकाहानलदना
काहे
सोहा अन्वयहितमुख्यार्थकोओरअ
र्थकरलेत मिलोरहतमुख्यार्थहेउपा
दानयहहेल २२ वालो अन्वयपरको
मिलापहितकोअर्थलियेअन्वैकेलि
येमुख्यप्रधानअर्थछाडिओरअर्थक
रे ओमुख्यार्थभीउहोलग्योरहेसोउ

स०
८२
82

पाहान लछना ऋप्यानि लहाउपासान
लछना को उदाहर्न बिहारी दोहा स्याम
हरिनदुति होय बानी स्याम नोरेगहै
ताको मानेरहो तो नहीं से मचे यह ऋर्थ
मैं दोहा स्याम को ऋर्थ स्याम रंग को नायक
सो मानेरहो तहे कवि नामे घनघ के
लिये स्याम को ऋर्थ स्याम रंग को नायक
दोहा स्याम को मुख्य ऋर्थ स्याम सो प्रीलग्यो
है स्याम को ऋर्थ दोहा पीतन नहीं रक्नि नहीं
याते उपाहान लछना स्याम कहे बिस
ऋर्थ श्री नहीं निकरे हे याते निरुहा
दोहा नील दोरिन दिषी ये सुर षाकद
तजान सजुन स्याम सवार यह नेनग्र
हनं सरसात २२ बानी जो सेकही मोलागु
रषाइ स्यारजा जो पेछे सैने गके मारेव
रछी के मारे इत्यार बिसेष लछनो ते
गसो मारे ते गवालो के मारे इत्यारि वि
षे नहीं लछना उपाहान लछना मे ग्र

82A

ज्यर्थलग्योरहतहे लक्षनलक्षनामे मुख्यार्थछूटजातहेयहवीचजानीये उपादानलक्षनाश्रजहस्वार्थाश्रापने अर्थकोनहीछोडे २२ श्रथउपादानल क्षनाप्रयोजनवतीतु० विहारी दोहा

सालनहैनेरसालसीकोहूंनिकसत

नाह मनमथनेजानोकसीबुधीबुधी

जियमाह २३ वार्ता केवलबुधीजीव मेनहीगतेबुधीवारीनायकाजीवमेग ईहे जोकोमदनचित्रमेबुधेनाकेरूप कीचतुराईकहीलोकरेइत्यादिकधुनि बुधीसहतनायकाबुधीहे २४ दोहा वेसीगावनविपनमेकज्जलकरतलु मार पागलटपटीचितहरेंहोप्रयो जनधार २५ वार्ता वेसीश्रारमेक्रिया नहीसंभवे वेसीलोगावेहेंश्रेसोहोयतो लक्षनानही वेसीगावेहेयाकोश्रर्थ वेसीवारेगावेहे कज्जलवारीलुमार

सं०
८२
83

करैहै इहांउपाधीनें लदनानुसारको
अर्थ मनहरैहै इहांलदनलदनाजा
नीये जोकोकज्जुलनुसारकरैहैताकेरू
पकीवडाईकहानाइश्यारिभांति २५
अथलदनलदनाल॰ दोहा नजेप
दतिजअर्थकोपरअन्वयसिधहेने
जोनपरेनहोंअर्थ॰अनुलदनलदेवि
जेन २५ वाती एकअपनोअर्थछोडे
परकहियेऔरपरनाकोजोअन्वयसे
हेथनाकीसिद्धकेलियेनहोंऔरअर्थ
जाहरजाानपरेनहोंलदनलछनावि
जेनजीननवारेकवि २५ निरूढालद
नलछनाउ॰ विहारी दोहा जदिपलों
गललिनौनेउ॰ तनपहरइकओक
सरुसेकवढियेरहेबैठेचटीसीना
क २६ वाती इहांइकओककोअर्थक
वही वटोरहेयाकोअर्थघईरहेयह
देयपरमेधुनिनहीऔरहसेपरनहो

88 A हासोवाकागतध्वनिहोय २६ दोहा का
कोमनवाधेनहीजेरोवोधनहार वार्ता
ईहांवधवेकोअर्थवसकरनो ऐसोलंवौरं २
हार आरमेलदनलदनो देदारसेसल
रवमेउपयोगीनहीयातेरसवासीलीये
औपागलटपटीचितहरवमेउपजोगी
हैयातेलदनेलदनानही अप्रयोज
नवतीलदनलदनाउ सुंदरसिंगार
व कवित्त अवहीचवा[illegible]चलजेवूहुपरहो ववावतिंश
माईगोकलमेफकफकपांवधरोयतहै
वार्ता ईहामुषसोफकवोनहीसेमवेहेअ
थीकोईजीवसोस्पर्सनहीकरोहोंपतिवृता
हौंयहछवि सुंदरसिंगार सवैया प्रीत
मगोनकिधोजियगोनकिमारकिमैनंम
यानकआरो पावसपावककलंकिसूल
पुरिंदरचापकिसुंदरआरो सीरोवियार
किधोमरवारहैवाररवारकिवानविचारो
वात्रवंवोलकिचोटचुमेविनचेरवधवि
वीरवहुई

स०
८४
84

मतान

चकोरीकोचारो २७ वार्ता चात्रकवोल
क्तिचोटचुभैहैचुभवोधर्मतीरवरछीको
है चोटपीडाकोनामहै तीरवरछीसो
पीडाउपजेहै ताकोचुभवोनहीचुभव
कोअर्थलागवो अतिपीडाआदिध्वनि
जोचुभैहैताकीपीडाअत्यंतहोतहै २७
विहारी विरहजरीलषिजीगनन जरी
कोअर्थदुषी जोकोईजरेहैताकोआठो
पहरकलनहीपरैहैइत्यादिध्वनि देतहै
वीठसषीगनकोइत्यादिमैं नदीमेंघोष
नहीसंभवैहै नदीकोअर्थतीरसीतल
तापविचरताआदिध्वनि विहारी दोहा
तोरसराच्यो आनवसकहेकुटलमतक
२ वार्ता ईहारसराच्योयाकोअर्थआस
क्तितोविनाओरनहीभावैहैइत्यादिध्व
नि यहजहत्स्वार्थजानीयेनतीआपनो
अर्थछोडेहै तीरकोकहैहैयाद्लीअजह
त्स्वार्थी यहजहत्स्वार्थीयहहै लतनामु

84A घ श्रोर याकेयेर्थ जहत्स्वार्थ जहत्स्वार्थ
जुदी लछना नही दोहा लछनमेंजे आप
ने अर्थ को सो जहत्स्वार्थी मान ततजेहेवि
ज अर्थ को अजहत्स्वार्थ वषान २८ वार्ता
श्रो लछन लछना विपरीत अर्थ मे होत है ।
याते विपरीत लछना लछन लछना सो
जुदी नही जैसे वाग विरुधा क्रिया विरुधा
मे स्वयं दूती का श्रेन अैन होत है २६ विप
रीत लछना उदाहरन दोहा प्यारे तुम नीके
लगत वन आए हो लाल मो मन को रंजन
करै विन गुन की उरमाल २७ वार्ता जहां
उलटो अर्थ सो विपरीत प्यारे को अर्थ दु
ष नीके लगत याको अर्थ वुरे लगत व
नि आये याको अर्थ विगर आये ऐसे आ
पनो अर्थ छाडि और को अर्थ लेत है याते
लछन लछना जानीये कवित्त प्राचीन
फूली वेई प्यारे तुमे फूल जे लगावत हेतु
मसवला धन मे सरस विसेषी श्रे रातके

जेआवतहेहोतहेवेचोरतुमआवतहे
जोरयोंतेसाहनमेलेषीये नेनहेनलाल
श्रीमहावरनमाल श्रोठवी चकारकाजर
तरह
कीरेषाहूनरेषीये आरसीलो निरमलरा
वरेकोमुषतामेमेरी चालचूनरीकोप्रति
विंवदेषीये २८ वार्ता प्यारेकोदुहूठीव
ईकोअर्थसाचीवेई तुमेसाचेलगावतहे
ऐसीजानीये विहारी दोहा आजमिलेसु
भलीकरीभलेवनेहोलाल वार्ता बुरीक
रीबुरेवनेहोजानीये विहारी दोहा वेई
गडिगाडेपरीउपट्योहार हियेन वार्ता
ईहाहारउपट्योहेऐसेजानीये अथसा
रोपालदन दोहा जाकोंजहांसुराषीये
ऽऽधाय
सोऊरहेप्रकास सारोपा आरोपकोवि
ऽऽधार
षयआरोप्यनिवास २९ वार्ता जोवस्तु
जावस्तुमेराषीये राषनकीठोर श्रोराष
वेकीवस्तुसोऊजहारहे आरोप्यकोवि
षयराषवेकीठोर आरोप्यजोवस्तुराषी

नतोमाधार
माधेयदेव
हीकहीएत
होसारोपा

85A

ये घट आरोप्यको विषयं जल आरोपाँऐ
से जानीये जहाँ दोनो रहे सो सारोपा जहाँ आ
रोप्य रहे आरोप्यको विषय नहीं रहे तहाँ सा
ध्यवसाना कहेंगे ४९ अथ निरूढा सारोपा उ
पादान लक्षणा ३ बिहारी दोहा सोहत ओढें पी
त पट स्याम सलोने गात "मनौ नीलमनि
सैल पर आतप पर्यो प्रभात ५० वार्ता
पीत जो रंग है ताको पट नहीं से वे पट तो
सत्रु को है तव लक्षणा ने पीत रंग को पट जा
नीये ऐसें ई स्याम रंग है ताको गात है वो
ऐसे ही वहे स्याम रंग तो गात नहीं लक्षणा
ने स्याम रंग को गात जानीये पीत स्याम
ए वह आपने अर्थ को नहीं छोडे है पीत रं
ग को पट स्याम रंग को पुरष ताको कहे है
या ते उपादान लक्षणा जानीये आरोप्य
मान को न है पीत स्याम आरोप्य विषय को
न है पट गात पीत स्याम रंग पट में गात में
राषी ये है याते पीत स्याम आरोप मान प

सं॰

८६ टगानआरोप्यविषयपहलोऊहैयातेसा
86 रोपाजानीये ध्वनिनहीयातेनिरुढा जोपी
नपटमेध्वनिकाहीयेप्रीतकोरंगपीतहे क्रि
यानायकाके रंगकेरंगकेसमानहे तोय
हीप्रयोजनवनीजानीये ॥ बिहारी दोहा
स्यामसुरतनचषरेष लाललालचमकत
चुनीचोकाचिहसमान वार्ता ॥ येमेहीला
लरंगहेताकोचुनी द्वैवोअसंभवहेचुनी
तोपाषानजानहे लछनातेलालरंगकी
चुनीजानीये लालरंगआरोपमानचुनी
आरोप्यविषय यातेसारोपा ध्वनिनहीया
तेनिरुढा इत्यादि वालकहालालीमई
लोयनकोयनमाह वार्ता ॥ यहांपहलव
नानहीलालकोधर्मलिलाईसोक्रोध
मेउपजेहेलिलाई दोहा स्वेतअधरो
रतलषोस्यामसुरथअसवार लालन
यनअरुपीतपरनीलभाहिहुनवार
॥ वार्ता ॥ येमेईस्वेनरंगहेताकोअस

86 A.

छद्रिरवोअसेमवहै स्यामरंगहैतांकोपुर
षद्विवोअसेमवहै लालरंगकोनेनद्विवो
असेमवहै नीलरंगकोवारद्विवोअसेम
वहै यातैसर्वांगरलक्षनातैस्वेतरंगवा
रो घोरास्यामरंगवारोपुरुष लालनेन
वारनेत्रनीलरंगवारेवारजानीये स्वेत
रंगअंगअरोपमानअप्प पुरुष नैन
वार एअरोपाविषय यातैसारोपा षुव
नहीयातैनिरूढा ३३ अथप्रयोजनवती
हारोपा उपादानैलछना॥ दोहा॥ डेकासुनसेको
पर्वत मार्ग
सहितअरिनगहै गिरिवाट धीरधरेको
जानलाषिपहिवेडूषकोठार ३४ वानी
पहिजोवेडूषकोठावहै ताकोजानोल
षिकेकहोकोनधीरजेकोधरसकेइहां
वेडूषकेठावकोचलवोअसेमवहै लछ
नातैवेडूषनिवारजानीये औरजेसेपि
अलेदोहामेस्वेतअरुश्यावतेआपनो
अर्थनहीत्याग्यो औसेहिवेडूषठावतेआ

वहएद जोहै एत
त तृप्त कद्द
अंठ सप्ति ईश
क्रोध्मा रोपा त्रि
का एकपा ऽऽ पा
२ठा ठ होमारो
पा म्या सा घेव

स०

८१ 87

पञ्चार्थ नहीं त्याग्यो याते उपादान लक्ष
ना जो ईहां वेदूषको ठाट इत नाई कहतें तो
उपादान लक्षना होती यह वेदूषको ठाट
यह शब्द कह्यो है यह पर आरोप्य विष
य वेदूषको ठाट आरोप्यमान याते सारो
पा यह वेदूष वारे जानत है जो ऐसो होतो
तो लक्षना नहीं वेदूषकी सघनता आदि
प्रयोजन याते प्रयोजनवती २२ अथ
निरूढा लक्षना लक्षना सारोपा ३ विहारी
पुरबतो
दोहा कोउ करक सें ग्रहो कोउ लाष ह
धन तहमसे वही है । लाषकरनवारे जो है
जार मोसे पानि जदुपति सदा विपत वि
दारनहार २२ याती ईहा जदुपति संप
त नहीं संभवै ताते लक्षना करके संपत
को अर्थ पालक जानीये संपत शब्दको
वाच्यार्थ दूर भयो याते लक्षन लक्षना
जदुपत आरोप्य विषय संपत आरोप
मान याते सारोपा ईहां तो ताद्रूप्य सें वै
धकर सारोपा भयो ध्वनि नहीं याते निरू

87A ॥२२॥ अथ नाराम्मल ० दोहा श्री रस्मि
रकर मानी पेर है नके छुइक पेर सो नाभ
नासु मो न पहु हरि धन ब्रह्म सुवेर २५
वार्ता श्री रुप राधिकोन है हरि श्री वेर नाको
श्री रुप राधि कर मान्यो धन कर ब्रह्म कर
पेर न हि राध्यो हरि धन है वेर ब्रह्म है २६
दोहा मई सुकोमल लरन है लरन सुम
ईटटारि मई हडोनी लरन है पर सलरत
सरवार २५ वार्ता कोमल मई लरन है
कोमल रे सजट है नाको मई है लरवोध
समवहे लछनाते कोमल रेस केजे पुरख
है सो लरन है कों मई मनुष्य वाची है रेस
जट है मई कोशल पाको अर्थ कोशल रे
पाके जो मई है सो लरन है यह लछना
श्री से ई दुहार रेस को श्री हडोनी रेस को
श्री सरवार रेस को मई है लक्षो अर्थ सेप
वहै लछना करके इन रेस के पुरख लोगो
ने ही भणिये सो जानीये कोमल रेस वि

श्रीरवस्र कोन है और २ कर मानी ॥ सो नारा मथना के जैसे घर विविध के प सकि हुई धके रहे तैनारा ब्रह्म हवं ध होहै ॥ किर वके कका लो सोपि मेव २ग्र ही है पं जे को रहं वंध हो मारे तो और वस्न के नेह पाल उहे और रके कहा घर २ कर न नाका पै के ब्रह्म दनारी बहीता ग्ले ही पट पै तं न नाती ॥ ॥

सं०

८८ षेजेपुरषहै हुंटाररेसविषेजेपुरषहै

४४ हैछोतीरेसविषेजेपुरषहै सुरवाररेसवि

षेजेपुरषहैतेलरतहै रेसनकोमुख्यश्र

पीवोधरयो याते लछन लछना औरहुको

प्रालदेयआरआरोपविषे पुरुषआरो

पमानरो ऊबहै याते सारोपाध्यवसितहै

निकारी है याते निरुहा सेवैध विषेसुद्ध

लछनाजानीये २५ अथलछनलछना

ता सारोपा सुद्धोजनवतीउदाहर्न दोहा है

सुषमोहनकोदरसमुक्तिसुकेशवनाम

सेपतिसेवनभक्तिकोयहहै हमेयरतिराम

२६ वार्ता मोहनकोदर्सनसुषनहीसेय

वे लछनाते मोहनके दर्सनते सुषहोत

है औसेजानीये केशवकोनाममुक्तिनही

सेयवे लछनातेकेशवकेनामतेमुक्तिहो

तहै भक्तिकोसेवनसंपतिनहीभक्तिके

सेवनतेसंपतिहोतहै यह लछनातेजा

नीयेदर्शनआरशवनकोमुख्यअर्थन

918 भूषन दोहा कनकलतापर चंद्रमा
धरेधनुषद्वैवान वार्ता कनकलतापर
चंद्रमाधनुषवानंकोधरे हुयनहीसंभ न
वन तवलछनातेकनकलतासीनाय
का चंद्रमासोमुषधनुषसीभौहे वानन
सेनेत्रजानीये श्रीनाइकाकीछवियेकन
कलता आदिकसर्वउपयोगीहे यातेउ
पमानलछना श्रीकनकलता चंद्रमा
धनुषवान एसर्वेरोपमानहै [illegible] रोप्यवि
षयकोननायका मुष भौहे नेत्र एनही
हे यातेसाध्यवसाना सुंदरताकोअधका
ईआदिछवि पुनः भाषाभूषन दोहा
नभ ऊपरकेचनलता कुसमगुछहैए
क वार्ता नभकेउपरकेचनलताकोओ
कुसमगुछको हैवोअसंभवहे लछना
तेकंचनलतासीदीजुलीकुसमगुछसो
चंद्रमाजानीये यह लछना श्रीकनक
लताकीजुरीकीछवियेउपयोगीहे श्री

स०

९२ कुसमगुछचेंद्रमाकीछवियेउपयोगी

92

हे योलेउपादान लछना कनकलता

श्रोकुसमगुछ एरोप्यमानहे रोप्यवि

षयकोनवीजुरीनोंश्रोचेंद्रमा सोनहीं

हेयालेसाध्यवसाना सुंदरताकीश्र

धकाई श्रारझ्यत्ति श्रपसुधागोनील

दान दोहा सवहीसुदलदनांसेवध

नमेंजान गोनीहेसादृस्यसेसारहेये

रुपमान२ वार्ता सवहीलछनाजे

दीछकहीहेसेवधविषेहेसुदकहीवे

श्रोजहेसादृस्यसेवधहोपतहागोनी

कहीवे२ सुदउदाहर्न दोहा कृस्नागो

पसषिमेंलष्योछविछकिरहीनिहार

हारिहरयोकरमाहर्नेश्रंगुरीलईउला

र२ वार्ता कृस्नगोपनहींसे कहेसद

नातेपहजान्यो किगोपकेकाजेकरतहै

यातेगोप श्रोगोपश्र वर्नेश्रपनोश्रर्थ

साध्योयातेलदनलछना गोपश्रारो

92A

प्पमान कृष्ण आरोप्प विषय याते सारो
पा भवति नहीं याते विरूढ़ा ई होंना तक
प्रसंबंध है और ज्ञान को कर्म किये और
ज्ञान कहावै न होंना कर्म संबंध जानी
ये याते सुध हार मीमे रोहै सो ओ करि
मा हते अंगुठी तुलाय लई ई हाकर मैं अं
गुठी प्रसंबंध है लछना तें कर की अंगु
री मैं ते जानीये कर पद को अर्थ बाधय
यो याते लछन लछना अंगुरी आरोप्प
विषै नहीं किवा अंगुठी रोप्पमान है
याते साध्यवसाना अंगुरी में अंगुठी
रहत है अंगुरी को कर कहनो ई हां अं
गंअंगी संबंध अंगुरी अंग कर अंगी
और उदाहरन पीछे संबंध के कहे पाती
को कर्म किये ठ्ठ स्व पाती हत्या दि पाती
न पान जानीये ॥ अथ पोनी विहारी
को मल से मैत्री कारी ॥ स्नान कर के
सो हू को नयन में जन किये वे ही और
नवारे के अंगुरि न विरह की वदे विरह

मैं तो तन्हो ॥ कहां तें ना वी न प्रत यैं तो री लछणा को अर्थ
प्रिय का जो कर्म है प्र प

प्रश्न ॥ प्रश्न इत्या दि मैं प्रश्न ते सपन ही है सक
पद वा ध प्रिय प्र पद है कर बोध नि सत रहत है पा को
उत्तर ॥ शब्द ज जो बोध है सोव ध प्रिय प को प्रत कंध कहै सो कहो ते ॥ मंत्र तो सत्य नि प्रार्थ ना नंब न करो हो ॥ प्रश्न वक्रिता सि वि तिरहै पीवे ध हे प ॥ उत्त ई हां को अप तात्री और केउ तें न्मपरव शा मद्द स्या दि प्र को पता हैं ॥ ३ ॥
प्रश्न ॥ इहां कंस पद मैं गोपी लव प्रहि को ते लछणा की कहा मोर्जा है

स०

२२ नवेरकुमार ३१ वानी इहां नेत्र कमल
93 नहीं ते सबै कमल को अर्थ घरन विमा
ल सुंदर आरजानीये कमल को अर्थ
वाध भयो यों ले लवन लवना कमल
रोप्यमान नेत्र रोप्य विषय यों ले मारोपा
सारूप्य से वैध सो गोनी ने वुन के सरूप ...नी के उन...
उपमान हारोपकी
की अध का ई आदि लेकें कवित प्राची
वनाके
न मैं वेया प्रान पियारी सिंगार सेवार
पतिपुन मित्र रूपको
लियो कर रद पैन रूप निहारो वेर सी
आनन को दुन देखी के पूरर हो हि यश्रा
वेर मारो खेजन ले नषत्र गन सुन्या सि पपारके
वृद्ध के मान मूर
न खेजन यों उपमा और नु सारो वीरके
चानको
चोव वकोरन की मनो वो पत्ते वेर चुग
चोग व नवारो २२ वानी नायका के सब से
अपने आनन की दुनको देख आनेद
पूरर हो है नषके अग्र भाग सो मैंन
नमै खेजन को खेजन पावत है तिन
की उपमा यों इस प्रकार अनुसार ल

93A

मान्यहोतहै ईहाकविनमेंचंद्रमासमान
आननताकीदुतियहहोनेलछनाको
मूलहैमेकहो चंद्रमासीआननकीदु
तिनहींसेयवे चंद्रमाकोअर्थलछनाक
रकेसुंदरआनंदरायकअैसीदुतिजा
नीये औचंद्रमासुषकीदुतियेउपयोगीहै
यातेउपादानलछना चंद्रमाआरोप्य
मानमुषकीदुतिआरोप्यविषय याते
सारोपा औचंद्रमाकेगुनलियेयातेगौ
नी ३१ दोहा गजगौनीमगलोचनीको
किलवैनीबाल बानी ईहागमनक्रिया
ताकोगजउपमाननहीं गजकीगमन
क्रियाउपमानहै गजकोअर्थलछनाक
रकेगजगमनजानीयेतिसकेसमान
गमनहै इहलछनागजकोअर्थबाध
केगुनलीयेमंदचालआरयातेगौनी
सुंदरतासुनोहरता आदिध्वनियाते
प्रयोजनवती औगंमगलोचनीमेलो

सैयो याने लछ्नलछ्ना गजारोप्यमानगमन
आरोप्यविषय याते सारोपा औ गजके

लछनल
ना ...
का गौनी
प्रयोजनव
ताकेउदा...

स०

८६ चनोकोउपमानम्रगनही म्रगकेलोच
94 नउपमानहै म्रगकोअर्थलछनाकरके
म्रगकेलोचनजानीयेतिनकेसमानलो
चनहै यहलछनाम्रगकोअर्थबोधमये
यातेलछनलछना म्रगरोपमानलोच
नआरोप्यविषययातेसारोपा औम्रग
केगुनलीयेहुउविसालइत्यादि याते
गोनीनेवनकीअस्येनवडाई आरछे
ति यातेप्रयोजनवती आगेकोकिलवे
नीविषे कोकलावचनोकोउपमानही
कोकलाकेवचनउपमानहै कोकिल
कोअर्थलछनाकरकेकोकिलकेवच
नलीजे तिनकेसमानवचनहै कोकि
लकोअर्थबोधनयेयानेलछनलछना
कोकिलअपकाकोकिलकेवचनरो
पमान नायकाकेवचनआरोप्यवि
षययानेसारोपा मनोहरकोमलआ
दिगुनलीये यातेगोनी वचनोकील

94A तिआदिध्वनि यातेप्रयोजनवती वि
वर ... श्वेत केशी व स्वर्ण जैसा है र
हारी दोहा सोहतधोतीसेतमेकनक गात कांति मालती
वरनतनवाल वाती इहातनकेरंगको
कनकउपमानही कनककोरंगउपमा
नहै कनककोअर्थलछनाकरके कनक
रंगजानीये किसकेसमाननायकाको
रंगहै इहलछनाकनककोअर्थवोध
भयो यातेलछनलछना कनकआरो
प्यमान तनकोरंगआरोप्यविषय यो
तेसारोपा कनककेप्रकासआरगुनली
ये यातेगोनीतनकीसुदरताकोअध
काईआदिध्वनियातेप्रयोजनवती
अथभेदसहतउदाहरनै अपविलछ
उपादानलछनासारोपागोनी ३ दोहा
पानपुरानोसीतअरिकेनरुनीकोमे
ल सुषहेरितुहेमतमेसवहीकोपह
तेल ५५ वातो पुरानोपानप्राचीनपा
न सीतअरि आग इहां रसोकोतेल

९५ 95 है सो यह लछना सो गहन होत है यो
से अवधा हूं नहीं कोनिलो सो जो होय
सो नेलक हावे याने नेलश व निलों के
जो नेल है ताको कहत है सर सो अलसी
को नेल लछना करि लीजे याने लछना
ते लके अर्थ नहीं त्यागो याने उपादान
को रूप है जो अनत सर सों के नेल है
तो मे सुष है सुषरो प्प याने नेलरो प्प
विषय याने सारोपा निलके नेल सम्मा
ने सर सो को अलसी को नेल है याने गो
नी जानी ये अश्व नहीं याने निरूढा २२
अपप्रयोजनवती उपादान लछना
कौउ राजा को पुत्र जो न होय तिस के पाप और
सो रोपा गोनी उ दोहा सहित सु राज
लोक जाने पोवर श्रीमत षत्रवन्त्रो संयुक्त हे व ताको उ कहत है राजा के कुमार के तुल्य
कुमार के जानि सुधी रुकुमार ताहि
सब कुमार जानते हैं ॥
को सब कहत है ए सब राजकुमार २४
वार्ता ए सब राजकुमार नहीं में सब वे
राजकुमार तो एक है लछना ते राज
कुमार के समान जानीये राजकुमार

को भी अर्थ कौ बन्यो रह्यो याते उपादान ल
क्षना यह और कुमार आरोप्य विषय रा
जकुमार आरोप्यमान याते सारोपा
राजकुमार कै सदृश और कुमार कहे
याते गौनी रूप की अधिक वड़ाई आदि
ध्वनि याते प्रयोजनवती जैसे सषी को
कहे इही नायका है सषी नायका नहीं है
पवै नवनायका के समान लक्षना ते जा
नीये यही शब्द सषी को जितावत है
याको अर्थ बाध नहीं भयो याते उपादा
न यह शब्द आरोप्य विषय नायका आ
रोप्यमान याते सारोपा सषी को औ ना
यका को सादृश्य संबंध है याते गौनी स
रूप आदि की वड़ाई ध्वनि याते प्रयो
जनवती और जैसे इही हमारे राजा
है ई हाहह जो कोई औं पुरष है सो राजा
नहीं संभवे लक्षना ते राजा के समान
जानीये राजा को अर्थ बाध नहीं भयो या

स०

९६० ते उपादान नहीं ई इह शब्द आरोप्य वि
96 षय रज्जु आरोप्यमान यो ते सारोपा
होइ कोसा इस से वेध है यो ने गोनी
उझार ना सूरना आदि की वडाई ध्व
नि यो ने प्रयोजनवती आगे इही दे
वता यह कहने और पुरुष मो देव
ता नहीं से गैवे लक्षना ने देवता सम
ज्यो देवता को अर्थ बोध नहीं भयो
यो ते उपादान इह आरोप्य विषय देव
ता आरोप्यमान यो ने सारोपा साइस्य
से वेध सो गोनी ते जड़ सादि की वडा
ई ध्वनि और इही परमेश्वर है ईसा
पुरुष परमेश्वर नहीं से गैवे लक्षना
ने परमेश्वर समज्यानी ये परमेशुर
को अर्थ बोध नहीं भयो यो ते उपादान
यह शब्द आरोप्य विषय परमेशुर
आरोप्यमान यो ने सारोप्या साइस्य
से वेध नो गोनी पालने को बनेरपा

96A

इत्यादिकवर्णाई ध्वनि यातेप्रयोज
नवती ईहाइहीसब्दकहेसाध्यवसा
नहीं इहआरोप्यविषयकोबोधक
है जोयहशब्दसोहामेनकहेतोयही
होहासाध्यवसानाकोउदाहर्नहोय
सवनकोउदाहर्नएकठौरमेंदियेहैंव
नहोयसबलछनाध्वनिनिकारैनहीं
प्रयोजनवतीध्वनिनिकारैतहांनिरू प्रयोजनवती
ढा होइ गूढ अगूढ सुव्यंगनते फूलल
तन हैं मोन अगूढव्यंग हियोमेंन
सीरे भयेमैरीझे लषलाल आनन्दि
हरेगातनमेंराजतहैं सबबाल ३५
बानी ईहागातनमेंचंद्रमानहीसंभवै
नवलछनातेनषछतजानीये चंद्र
माकोअर्थबाधभयोयातेलछनाल
छना चंद्रमाआरोप्यमानहै नषआरो
प्यविषयनहीं यातेसाध्यवसानान
षकोग्रोबालचंद्रकोसादृस्यमेवधहै

स०

९१ यातें गोनी जो चंद्रमा सें औनबमें औनष
97 मेत्रे रनहीराषे नौता रात्मसें वेधकरके
यह लक्षना सुद्धा होवे व्यंग यह सभ्यारा
पकासोसें योग करकें आयेहो नहीं श्रेचा
श्रेचीयें यह लंदंनासुद्धां होवें नषठनल
ग्याहे यह व्यंग गूढ है याते गूढ प्रयोजन
वती लक्षन लक्षना साध्यवसाना गोनी
है औरु षंडना को रीझवो असंभव है ल
क्षनाने रीझवे को अर्थ कोपवती इत्यादि
जानीये रीझवे को अर्थ वाधयो याते
लक्षन लक्षना रीझवो रोप्यमानक ह्यो
कोप आरोप्य विषयमो नहीं कह्यो
याते साध्यवसाना ध्वनि यह बोलबोह
सवो इत्यादिकन कीजे तुम अपराधी हो
यह प्रयोजन गूढ है याते गूढ प्रयोज
नवती औरु हृदय को औने त्रन को सीत
लहैवो असंभव है लक्षनाने नपं जानी
ये सीतल को अर्थ कोमलयो याते लक्ष

97A

नलक्षना सीतलहैवोरोप्यमाननम
हैवोरोप्यविषयसोनहीयानेसाध्यव
साना ध्वनिपरह तुमारेरेषसोमाकोअ
मनदुषहोतहै यहगूढ़व्यंगहैयातेगू
ढप्रयोजनवती रूढ़ोलक्षनाहैइनमेसा
ध्यसेवेधनहीयाते रागोनीनहीसुद्धहै
औ विपरीतलक्षनाहूहै सीतलकोवि
दीतअर्थतनलीयो रोऊकोअपीषीजी
लीयोयाते अयथअगूढ़व्यंग३ दोहा
मोहनकीसोभासबीसषिसोकहतनसु
नाय पीवतकाननकामिनीवूंघट ओट
उठाय भईवाली इहाकाननसोपानकर
वोअसंभवहै लक्षनाकरकेसुनवोजानी
ये पीवनशब्दकोअर्थवोधभयोयातेल
क्षनलक्षना तुमारीसोभाकेसुनवेमेया
दरसोमनलगायोहै यहव्यंगसोजाहर
है यातेप्रयोजनवतीअगूढ़है दोहा
हेतुकहेफलधर्मगनधर्मीगनकहेहे

न जितीफलचलीलछनावलिसमेरउ
देत ५२ अष्टधर्मगनफल मिलैलो स
वैया देत है योविसभोगनकोइप्माइमेंन
दीमे घोष वाली ईहांनदीमे घोषको है वो
असैमवहै लछना करकेनदी कोतीरजा
नीये नदीको मुष्य अर्थ प्रवाहनाकोवा
धभयो याते लछनलछना नदीको सी
तलतापवितरता आदिफलसोधर्मग
तहै कोसीतलता आदिधर्मप्रधकजा
नीये अष्टधर्मीमे उ कवित्त श्रेवरसज
घटा |कवी|
लमे घटैवरसोछायो हरिनेसी छबिवा
गकीनतुगकीनिवारनीकी मतलमे मे
नैब
कनिचैनेकनिमचाई घोषके किनसामि
लीधुनिवारचेककवानकी वगनकीपा
तकिहूमोनसोसद्यो है जालकाह्मैक
वोरमनदेहहैपषानकी सुनपिकगान
मवा॰।
की विहारसोभामानकी सुकैसहूषमा पर्वत
नकी सहेगीकामवानकी ५८ वाती सा

९४R

नपर्वतनासिषर इनकोमैकिसीप्रकारस

होगी क्योमेरोकठोरमनहै इनकोसहवो

ऐसेमवैहैलदनानेइनकेदुषकोसह

वोजानीये ध्वनियहमेवडोसमर्थहैदुष

सहनमे दुषधर्मकाहधर्मीदुषसहिवे

मेकाहकीअधकाई हमारोसरीरपथ्थ

रकोहैईहापथ्थरकोसरीरनहीसेमवै

लदनानेदृढसरीरहै ध्वनियहमेतो

समदुषसहनहोयहधर्मीगनपलनरी

मेघोषईहांनटलदनामैअधकाईसीत

लथ्थादिधर्मकी ऐसेजानीयेयहमेरफ

लवतीकोनिलटाकेनहीक्योनिरुढामे

ध्वनिनहीअपपरमेवाकामेलदनेवरन

ने सोहा मेरनिरुढाकेजिनेओरुफलव

तीश्रेग हैलसुपरमेवाकामेंहहविधकर

नषसंग ५९ अप्पपरमे उदाहने सवैया

देनहैपीवमधीगनकोइसादिमजानीये

अपवाकालदने सोहा जोकहिवेको

जोगपदैवाक्यनाहकोलष परसमह
अन्वयसहतनबोधकअर्थपरेष ५०
वार्त्ता जोकहिवेजोगपदहोयताकोवाक्य
जानीये औरजोपदनकोसमहहैअन्व
यकेसहतअर्थकेजितावनवारोसोमीवा
क्यहै कहिवेजोगपजोहोयवाहीमेलक्ष
नाहोय सोवाक्यमेलक्षनाजानीये जो
औरमेलक्षनाहोयकहिवेजोगपजोहै
तामेनहोय सोपदमेलक्षनाजानीये अ
थवाजोपदमेराकलक्षनापरसोपदमे
लक्षना जोपदमेवहुतलक्षनापरसोवा
क्यमेलक्षनाजानीये जैसेदेनहैपीतस
षीगनकोयासेवेयामेसषीकोवचनना
यकसोहै सोकहवेजोगईहैनायकहै
तिनमेलक्षनानहीकरी लक्षननायका
कीपीठमेंकरी औराकपदमेराकहीलक्ष
नापरीहै याते पहपदमेलक्षनाजानीये
५० अथवाक्यमेलक्षनाकोउदाहरनसोह

99A

प्यारे तुम नीके लग इत्यादि दोहा जानीये
वार्ता ॥ इहा नायका कौ वचन नायक सो
है यातें नायक हिये जो गर्व है तिन ही मे ल
क्षना करी षंडता को प्यारे कहिवो नीके
कहिवो असें मव है लक्षना कर के प्यारे कौ
दुष अर्थ जानीये ॥ इहां लक्षना शब्द ने अप
नो अर्थ त्याग्यो यातें लक्षन लक्षना अने
क न सो प्रीत करन हो फेर लोरन हो दुष दु
न हो इत्यादि ध्वनि औ नीके को अर्थ लक्ष
ना कर के वुरे जानीये मुष्य अर्थ को बाधम
यो यातें लक्षन लक्षना ध्वनि यह तुम अ
पराधी होइ त्यादि औ षंडता को वनि आ
यक हो असें मव है लक्षना ते विगरयौ
य जानीये मुष्य अर्थ के बाध ते लक्षन ल
क्षना ध्वनि यह तुमारो दुष रन के चिन्हा
कर चिन्हत है औ तु मो सो भोग कीयो है
ए लक्षना सर्व नायक मे कही है और प्या
रे तुम नीको लागन यह दोहा को एक य

रहै तामे है लछना करी याने वाक्यी ल
छना और पीछदेत है याम्मे इतनी ई परके
कहे लछना को बोध होत है औ दोहा मे जो
सारोप परकही ये तब परन के मिलने
लछना को बोध होत है याते वह परसे
लछना है यह वाक्य मे लछना अपल
छना के असी मे रूकपने दोहा उपादा
न जो लछना लछन लछना नाम रूढ
प्रयोजन भेद ते चार होत अति रोम ४१
वाती एक उपादान लछना निरूढा १
दूसरी उपादान लछना प्रयोजनवती
एक लछना लछना निरूढा दूसरी ल
छन लछना प्रयोजनवती यह चार भेद
जानीये दोहा सारोपा पुन चार है साध्य
वसाना चारि सरजपारी हरि कहे आठ
भेद निरधार ४२ वार्ता सरजपारी को
सरज के पार रहन वारो हरि कविसो क
हत है उपादान लछना लछन लछना

उपादान सो
लछण लछना
ए दोउ

100A केजेमेरहैतेसर्वसारोपाहोतहै उपादा
नलक्षणानिरूढासारोपा १ उपादान
लक्षणाप्रयोजनवतीसारो २ उपादान
लक्षणानिरूढासाध्यवसाना ३ उपादा
नलक्षणाप्रयोजनवतीसाध्यवसाना ४
लक्षनलक्षणानिरूढासारोपा ५ लक्ष
नलक्षणाप्रयोजनवतीसारोपा ६ लक्ष
नलक्षणानिरूढासाध्यवसाना ७ ल
क्षनलक्षणाप्रयोजनवतीसाध्यवसाना ८
यहआठभेद चारनिरूढाकेचारप्रयोज
नवती ४२ दोहा भ्राहोसुधालक्षणाश्री
हेगोनीहोत यातेजाषामेकीयेषोडस
भेदहोत ४३ वार्ता उपादानलक्षणा
निरूढासारोपाशुद्ध १ उपादानलक्षणा
प्रयोजनवतीसारोपाशुद्ध २ स्यामपुरु
ष यहउदाहर्न स्यामरंगकोपुरुषहैयो
असंभवहै लक्षणातेंस्यामरंगवारोपुरु
षजानीये स्यामरंगकोभीअर्थबोधन

होय प्रयोयातें उपादानलक्षना श्यामरे
गआरोप्यमानपुरुषआरोप्यविषय
यातेंसारोपा श्यामरंगकोओपुरुषको
तिनसेंवंधहैसुद्ध छानिनहींयातेंनिरु
ढा जोयाहीमेंछानिकाहूपे सुंदरहैउरा
रहैमैंनसमहैनोयहीप्रयोजनवतीहो
य उपादानलक्षनानिरूढासाध्यवसा
नासुद्ध ३ उपादानलक्षनाप्रयोजनव
तीसाध्यवसानासुद्ध ४ कज्जलमनहरै
कज्जलकोमनहरवोअसंभवहै ल
क्षनातेंकज्जलवारेनेउजानीये सोमन
कोहरनहै ओमनहरवेमेंकज्जलभीउ
पयोगीहैयातेंउपादानलक्षना कज्जल
रोप्यमानहैनेत्रआरोप्यविषयनहींया
तेंसाध्यवसाना कज्जलकोओनैननको
संजोगसेंवंधहैयातेंसुद्ध यामें औरहू वि
कहियेतौनिरूढाहोय औ[illegible]काहोय
नेत्रश्यामतसुंदरहै कज्जलहीमनको

व

101A हरनहैनेगँकीवस्ताईकहालछकहीये
नवयहीप्रयोजनवतीहोय लछनलछ
नानिरूढासारोपामुछ ५ लछनलछना
प्रयोजनवतीसारोपामुछ ६ मुषचेरहै
ईहामुषचेरमानहीसेमवैहै चेरमाको
अर्थसुंदरप्रानेरसायकलछनाकरकेजा
नीये चेरमाकोअर्थवोधभयो मेतेलछ
नलछनाचेरआरोपमानमुषआरोप्य
विषयरोऊकहेयानेसारोप्याध्वनिनही
यातेनिरूढा जोमुषकीसुंदरताऊजलता
आदिध्वनिकाहियेतोयहीप्रयोजनव
तीहोय मुषमेओचेरमेभेदनहीराष्यो
अभेदकीयो यातेताद्रूप्यसंवंधकर
केमुषहै जोमुषचेरविषेसमतासव
ऊअर्थहोतोतोसादृस्यसंवंधलेगोनी
होतीसोईहानहीहै ईहातोकह्योहेमु
षचेरहै मुषपराधीनस्तराहकोहै चे
रपराधीनआरसराहकोनिनकोएककि

सः
१०२
102

यो सुष चेरहीहै याते याभेता रात्मासेवे
थहैसादृस्यनहीं सुष वेरहैयहहैयजो
शव्दहैसोसादृस्यसेवेधकोरोधकहैयाते
गोनीनहीमईसुषहीहै लहनलहना
निरूढासाध्यवसानासुख ७ लहनल
हना प्रयोजनवतीसाध्यवसानासुष ८
ऊरपरहैसेसुहीहे इहाउरपरसे सुनहीं
सेमवे लहनाकरकेहै कुचजानीये से
सुशव्दकोअर्थबाध भयोयाते लहन
लहना से सुरोपमानहैकुचस्यारोपवि
षेयनहीयातेसाध्यवसाना ध्वनिनहीं
याते निरूढा जोयाही मेध्वनिकाहोये
सुषरहै कामसलहर है इत्यादि तो प्र
योजनवतीहोय ओरइहा स्फूर्ववत
कुचओरसनराहकेसेसुओरसनराहके
तिनमे भेदनहीहै या व्याथ भेदकोपायो
तेतादात्मसेवेधकरकेसुषहै उपादा
नलहनानिरूढासारोपागोनी ९ उपादा

102A नलछनाप्रयोजनवतीसारोपागौनी
१० नायकासषीहै ईहांनायकासषी
नहीसेमुषेलछनातेनायकाकेसमा
नजानीये नायकत्वसहतसषीहै
नायकाकोअर्थवोधनहीमयोयांतेउ
पादान नायकाआरोप्यमानसषीआ
रोप्यविषययांतेसारोपा नायकासषी
कोसादृस्यसंबंधहैयांतेगोनी ध्वनि
नहीयांतेनिरूढा जोयाहीमेरूपगुन
कीवडाईआदि ध्वनिकादीयेनवप्र
योजनवतीहोय ऐसे ईईस्वरराजाहै
ईहाराजाईस्तुरनहीसेमुषे लछनाक
रकेईस्वरकेसमानजानीये ईस्वरत्वस
हतराजाहै ईस्वरशब्दकोअर्थराजाप
रउपयोगीहै यांतेउपादानईस्वरआरो
प्यमानराजाआरोप्यविषययांतेसारो
पा सादृस्यसंबंधतेगोनीध्वनिनहीयां
तेनिरूढा जोपालनपोषनआदिध्वनि

सं°
१०३ काढियेतो प्रयोजनवती होय उपादान
लक्षना निरूढा साध्यवसाना गौनी ११
उपादान लक्षना प्रयोजनवती साध्यवसा
ना गौनी १२ राजा को कोई कहै आज ईश्व
र देष्यो ईश्वर को देष को जपतप कीये वि
नाश्रम से नवहै लक्षनाते राजा लष्यो जा
नीये ईश्वर को अर्थ राजा पर उपयोगी वे
याते उपादान ईश्वर आरोप्यमान है रा
जा आरोप्य विषय नहीं याते निरूढा जो
याही से ध्वनि काढिये पोषन करत है पाल
न करत है तो ईही प्रयोजनवती होय ल
क्षन लक्षना निरूढा सारोपा गौनी १३ ल
क्षन लक्षना प्रयोजनवती सारोपा गौनी
१४ विदूष साधु को रस ईहा साधु को र
सि विदूष नहीं से नवै लक्षनाते विदूष
को अर्थ उघट जानीये विदूष को मुख्या
र्थ भ्रमत लोको बाधन भयो याते लक्षन ल
क्षना विदूष आरोप्यमान साधको रसी ग्रा

साध्यवसाना राजा को श्रो ईश्वर को
सादृश्य संबंध है याते गौनी ध्वनि नहीं याते

103A

रोप्यविषययाते सारोपा विप्रषको श्रो
साधुके दर्सनको साहस्यसंबंधयातेगो
नी ध्वनिनहीयातेनिरूढा जोयाहीमे
ध्वनिकाहियेमनुकेभयकोदूरकरतहै
तोपहीप्रयोजनवतीहोय लक्षनलक्षना
निरूढासाध्यवसानागोनी १५ लक्षनल
क्षनाप्रियोजनवतीसाध्यवसानागोनी
१६ हरिभक्तअम्रतपानकरैहै औरको
अम्रतपानकरावैहै ईहांहरिभक्तनको
अम्रतपानकरवो अरु औरनकोकराव
वो असंभवहै लक्षनाकरके हरकोसुज
सु व्यापकहतहै औरनमेकहावतहै
अम्रतपानकोमुख्यअर्थरोतु औरमेबा
धमयोयाते लक्षनलक्षना अम्रतआ
रोप्यमानहै सुजसआरोपविषयनहीहै
यातेसाध्यवसाना अम्रतको औसुज
सकोसाहस्यसंबंधहैयातेगोनी ध्वनि
नहीयातेनिरूढा जोयाहीमेसुजसकी

सं.
१०४
104

वड़ाई आदि ध्वनिका होये तो प्रयोज
नवती होय इनि सोरह भेद दोहा याके
आवनिरूढ है आठ फलवती जान गूढ
अगूढ सुव्यंगनि फलवति सोरह मान
४५ वाली आवनिरूढ को भेद जुदे रहे
औ आठ जे फलवती के भेद है ते सर्व
गूढ व्यंग करके सोरह भेद हो तहै उपा
दान लछना गूढ प्रयोजनवती सारोपा
सुध १ उपादान लछना अगूढ प्रयोज
नवती सारोपा सुध २ उपादान लछ
ना गूढ प्रयोजनवती साध्यवसाना सु
ध ३ उपादान लछना अगूढ प्रयोज
नवती साध्यवसाना सुध ४ लछनल
छना गूढ प्रयोजनवती सारोपा सुध
५ लछन लछना अगूढ प्रयोजनवती
सारोपा सुध ६ लछन लछना गूढ प्रयो
जनवती साध्यवसाना सुध ७ लछन
लछना अगूढ प्रयोजनवती साध्यव

104A

सानासुद्ध ८ अैसे हुआव भेदगोनीमेहो
तहै उपासानलछनागूढप्रयोजनवती
सारोपागोनी ९ उपासानलछनाअगू
ढप्रयोजनवतीसारोपागोनी १० उपासा
नलछनागूढप्रयोजनवतीसाध्यवसा
नागोनी ११ उपासानलछनाअगूढप्रयो
जनवतीसाध्यवसानागोनी १२ लछन
लछनागूढप्रयोजनवतीसारोपागो
नी १३ लछनलछनाअगूढप्रयोजनव
तीसारोपागोनी १४ लछनलछनागूढ
प्रयोजनवतीसाध्यवसानागोनी १५ ल
छनलछनाअगूढप्रयोजनवतीसाध्य
वसानागोनी १६ एफलवतीकेसोरह
भेदहै सोरहफलवतीआवलिरूढानि
लायेचोवीसभये केरसोरहफलवती
केऔरभेदकहतहै दोहा फलकोवासमु
धर्मसेकैधर्मीकैधर्मीमेवास बहुरफल
वतीलछनावानिसकहीप्रकास ५५

स॰

१०५ वार्ता आठमेदनिरूढाके औमारहुफल

105

वतीकेभेदपैसोधर्मगमनफलधर्मीमे

फलयोनेफलवतीकेवतीनमेदमपे

आठनिरूढाकेमिलायेचालिसमेदम

ये अवफलवतीनिरूढाके असीमेदक

रतेहै दोहा आठनिरूढालक्षनाव तिम

फलवतिभेद परमे अरूपुनवाक्यमेस

वहीहोतअभेद ४६ वार्ता आठनिरूढाव

तिमफलवतीसर्वचालीसभेदमयेसो

एईभेदपरमेहोतहे औएईवाक्यमेहो

तहेयाप्रकारलक्षनाकेअसीमेदहोत

हे ४६ दोहा चलनकहुंवकतकहुंपी

तध्वजापहरात मधुरकेपदमेलषो

मोहनकोरणजात ४७ वार्ता यादोहा

मेचलनकहेकोईजहतस्वार्थामजह

त्स्वार्थीकहतहे सोनहीहे चलेहेवेल

नामरणकोकोईकहेहे रहागमनकिया

हेलक्षनानहीं पूर्वदेसकोविभागपरदे

105 A सकोसंयोगरूपमेंभीसंभवैहै जोपूर्वरे
सकोविभागपरहैसकोसंजोगरूपमेंनहो
यतोलछनावनेयोनेईहांलछनानही
६० काकसोरहीकीरछाकरोईहांउपास
नलछनाजानीये काककोअर्थरहीषा
नवारेतिनमेकाकभीजानीये पोंनसोपो
षीकीरछाकरोपोनकोअर्थपुस्तकके
विगारनवारेतिनमेंपोनभीजानीये दूध
सोंसरीरपोषाईहांदूधकोअर्थशरीरके
पोषनवारेतिनमेदूधभीजानीये काहू
कोबुरोमनकहो ईहांबुरेकोअर्थऔर
भीसर्वऔगननिंदाआदिकतिनमेबु
रोभीजानीये गुरकीनिंदामनकरोईहां
गुरकोअर्थऔरभीजेसेष्टपुरुषहैतिन
मेगुरभीजानीये निंदाकोअर्थऔरभीस
र्वअवगणतिनमेअवगणभीजानीये इन
सर्वलछनानमेकाककआदिसबदनकोमु
ख्यअर्थकोबाधनहीभयो अरऔरअर्थ

१०६ 106

नको लछना करके ग्रहन सर्व और नयो
पोनेएसर्व उपादान लछना है कोकसो
रक्षा करो और नसोन करो पर ऐसे नवहे
लछनाते सर्व षानवारे तिनते रक्षा करो
ऐसे जानीये कागको अर्पणी भीवम्यार सो
पोने उपादान ऐसेई पोननेरक्षा करो औ
रननेन करो पर ऐसे नवहे लछनाते जा
न्यो और नने भी रक्षा करो और पोनको अर्पणी
वम्यार सो पोने उपादान ऐसेई और नसो
न पोषो लछनाते जान्यो और हनसो भीपो
षो और दूधको अर्पणी भीवम्यार सो पोने उपा
दान ऐसेई वुरो मनन करो और सर्व औ
गुन करो लछनाते जान्यो और औगुन भी
मन करो और वुरे कहनको अर्पणी भी वाधन
हीभ पोयाते उपादान लछना ऐसेई ति
दान करो और अवग्या सर्व की सर्व करो
पहन हीसे नवले लछनाते जान्यो और हर
की भी ऐसे सर्व अवग्या भी मन करो तिन

106A मैतुरु औ त्रिंदशी वनोरही अर्थबोधन
हो न पायो याते उपादान इत्यादि विषे अज
हत्स्वार्थी उपादान लक्षना जानीये वक्ता
को वाच्य जो अर्थ है ताही मे लक्षना होत
है जैसे कह्यो नदी मे बाग है सो नदी को
वाच्य अर्थ प्रवाह ता मैं लक्षना भई और स
व को वाच्य प्रवाह है ता मैं लक्षना नही ल
क्षना तो इही छुह प्रकार की है परु जहा जैसे
अर्थ मे होय सो नाम कहावे सर्वही लक्षना
जो समुद्र विषे होय सो समुद्रार्थी जैसे क
ह्यो छत्री जात है इहा छत्री सर्व को कहवो
असंभव है क्योजाको छत्र रहे सो छत्री जा
को रे डर है सो रेडी इस मुख्य अर्थ को बाध
भयो और प्रमानन को वचन है फेर कहे है
छत्री जात है इहा लक्षना ते एक छत्री के
संग सो सब छत्री जानीये यह उपादान
लक्षना समूह विषे है याते समूहार्थी क
हावे है जैसे त्रिजी की विषे जहा लक्षना

होय सो तटस्थ लछना है इश्यार लछना जा
नीये अपन से ते पने लछन छोपै मुष्य अर्थ
को और अर्थ लेरहे मुष्य निह उपादान ल
छन सुलछन जहां रहत मुष्य नाहि रोप्य रोप
पल रहत एक है सारोपा कहि रहत न सा
ध्यवसान साह्य पल रोप्य भेद सह गौनी
सुहोत सादृस्य मे सुद्धा सव सेवे धगन
मुष्यार्थ वाध मुष्यार्थ को जोग सु लछना
अर्थ भनि ८० वार्ता मुष्य अर्थ को ईश्वे
र अर्थ को लेके मुष्य रहै रोप्य पल रोप्य
विषै साध्यवसाना में रोप्य पल रोप्य वि
षय न हीं रहत औ जहां मुष्य अर्थ को वाध
होय औ मुष्य अर्थ को जोग होय अन कहि
ये और अर्थ को लछना होय इह मुष्य लछ
न है लछना को उदाहर्न उपादान गावन
सु वेन मन्दरन सु कञ्ज ल लछन लछना
कल सल अंगार सु घन जल सारोपा
सुन नि सारि वस हहि जन सखीर सवर सा

107A ध्यवसानाहेसवैलसासिजुनद्वैधनुसर
ससवदननकेहरीधरनिपतिगोनीपेकज
करचरनमुछहुद्वाकलेसपावसप्रवल
आयुधघनहरिजननसरन ४८ वाती ६
हचैनवैसकोगायवोप्रसंसवैहै लछ
नातेजान्योवैसीवारोगावतहै औगाय
वेपरवैसीकोअर्थउपयोगीहै यातेउपा
दानलछनाअविनहोयातेनिरुढाकजु
लकोमनहरवोअर्थप्रसंसवहै लछनातेक
जलवारेनेजानीयेकजुलकोअर्थमी
मनहरवेमेउपयोगीहैयातेउपादानलछ
नाअविनियहजाकोकजुलहीमनहरन
हैनाकेरुपकीवडुाईकहीलछकहीये
यातेप्रयोजनवतीआगेफलसलनहो
सेसवैलछनातेसलकोअर्थहुघराईजा
नीयेसलशब्दकोअर्थवाधसयोयातेल
छनलछनाअविविवनिरुढाओघनज
लसेगानहीसेसवै लछनातेश्रेगारको

स०
१८
108

सषीती सुन आर जानीये श्रृंगार को अ
धी नायक भयो याते लछन लछना आकु
लना आर ध्वनि याते प्रयोजनवती ह
रि को जस समोई और सहे काव्य बने है
हरिजस और हूतन नही और हूतन को अर्थ सु
धरं अलंकारादि हरिजस रोप्य विषय ते
न रोप्यमान याते सारोपा आगे ही मवे
लषे चंद्रमा धनुसर धरें होय ये असे मवदे
लछना ते हेमवेलसों नायका मसमसों मु
ष धनुषसों मैं हे मरमसों सेव जानीये हेमवे
ल आदि रोप्यमान है नायका आदि आरो
प्य विषय नही याते साध्यवसाना आगे
समवरनन हीसे मैं वेने लछना ते चंद्र
मा को गुन लीजे चंद्रमा को अर्थ सीतल मु
ष आदि जानीये साहृस्य संबंध तें गोनी
धर लिय निरा जाके हरी सिंह नही नवके
हरि के गुन लिये केहर को अर्थ बलवान
निर्भय इत्यादि जानीये साहृस्य संबंध सो

गोनी आगे चरन पंकज नही न व पंकज
के गुन लीपे पंकज को अर्थ लछना ते अ
रन कोमल इत्यादि जानीये इहा होमा हूस्य
से वेधयाते गोनी पोवसरि तुकलेस नही
लछना मैं कलेस की करनवारी जानीये
कारन कारज संवेध वषी कारन कलेस का
जे पोते सुष और रुआपु सघन नही लछ
ना कर घन आर वला को वधावनवारो जा
नीये कारन कारज संवेध सो सुष मक्ति को
हरि ही आप्यो है हरि आप्यपन ही लछना
ते रहे कजानीये हरि आप्यपे में नरा त्मसं
वेधपोने सुष ४९ इति लछना अथ व्यंजना
लछन दोहा [illegible] व्यंजना को गजो मुक्ति
करन के पोग ध्व[illegible] जो प्रति ध्वनि होत
है नगन रमें केविलोग ५० वाती आगे ध्व
नि ने रकहेगे परके अर्थ को कहे सो [illegible] वे
जना व्यंजना हूत सो ध्वनि करे है जो मुक्ति
कर वे को जो ग्य सो व्यंग वा प्राद अर्थ ते जो अ

स० १०८ 109 आर्थी

(ध्वनि)
धिक अर्थनि करै सो व्यंग चमत्कार विशे
ष अधिक कूं ध्वनि जैसे आवाज होत है पवन
सै नदी सै हूं सरी ध्वनि होत है ऐसे कविता
(व्यंग)
सै धुनि जानिये कविता आवाज सम तासै
(पर्वत दर्पण)
जो ध्वनि निकसत है सो नगर नर की ध्वनि
सम जैसे प्रति ध्वनि होत है तैसे ध्वनि जानौ
(त्रिविध)
ये ५. भाषा भूषन स्वर गच हाये पतिनते
(ते मै तो को कहा कहौ)
तेंग कहा कहो तो ह वचन का ईहा निरा ष तो
क लुनि व्यंगनता तें अपनो स्वर्ग चद वो ध्व
नि अपरकेर व्यंजना ल० दोहा जहां न्य
(तात्पर्य रब्या एक को ...)
विधा लछना नाम ज्यो न समर्थ शब्द अ
र्थ को व्यंजना रचे तुरी अर्थ ५१ वाली
जो वृत्ति शब्दार्थ को और अर्थ करै सो व्यंज
ना कहावे शब्द के अर्थ को और ही अर्थ रचे
सो व्यंजना सो व्यंजना दोय एक शाब्दी एक
आर्थी शाब्दी व्यंजना दोय एक अभिधामू
ल दूसरी लछना मूल आर्थी व्यंजना अ
नेक है गे तात्पर्य वृत्ति कै ... अपना री

व्यंजना व कहते हैं जो श
ब्द का या का अर्थ ...
वे दूसरा का और रही
अर्थ र चे सो व्यंजना
और उस को जो व्यं
जना हांति करेगा
है व ह अर्थ ना भ
वधा से ति करे ना
लछणा से ति
करे ना तात्पर्य
से ति करे वह
व्यंजना जानी

109A

जेजनालक्षनाकहेजेजनाशब्दकोए
कहुअविधामूल । दूजी लक्षनामूल हैदु
अभिधा के मत में जानियो
नेहुमेमतिअनुकूल ५२ टीका जोअ
विधासो होय अथवालक्षनासो होय
सोशब्दकीजेजनाकहावे अथअविधामूल
वस्तुओं का कहनेवाले को वस्तु का ज्ञान करावे है
लक्षन बहुवाचकशब्द है सो एक अर्थ
में जोगादिककर जानीये जोग सुअ
विधाजन्य ५३ टीका नानाअर्थवाले शब्दके
सोयनीनअर्थकेशब्दकोएक अर्थमेंराखे
ऐसेसंयोगादिविषे जोगादि सोहा जोग १ वि
योग २ सुसाथ ३ पुनअरुविरोधको जान ४
अर्थ ५ प्रकर्न ६ लिंगकहु ७ अन्यपा
सुसैन्नमान ८ । ९ हे सामर्थ्य ९ सुओचि
ती १० काल ११ व्यक्ति १२ अरु स्वरा १३
१३
यादिशब्दअर्थकेभेदकेहोनहुमेल ५४
अर्थको
औरइनहीनतेजोगादिकशब्दकेअर्थको
भेदकरे है अपनसेजोगलक्षन सोहा अ
वाचक
कोकार्यहैशब्दराकलक्षनलक्षनाप

जोअविधासे ध्वन
ति करे है सो अविधा
मूल ध्वनि । जो ल
क्षना सो ध्वनि ३ प
जे है सो लक्षनामूल
ध्वनी जानीए ॥

ध्व

संयोगादिक कर ख
संयोगादिकों कर के
बहुवाची शब्द को
एक अर्थ मे राखे
[illegible]

पामेतीनमे
प्रथम एक अर्थ
एक तो संयो
गादिक
औरएक अर्थ
वाच की सन्निधि
जानकता ॥१॥
औरसंयोगा
दिकनको
औरअर्थन
कीप्रतवं
धकोता ॥२॥
औरदूस
रेकार्य
मैंभयो जानो
दिति ॥३॥

[illegible] नहीं होता है प्रथम एक कार्य मात्र की जानकता ॥ सो यह न नहीं है
[illegible] कार्य होता है वाके उच्चारण की जिनमें वाके कार्य हैं इसकीए
[illegible] प्रतिबंधकता भी
[illegible] होने से ॥१॥ और प्रतिबंध [illegible]
[illegible]

११०

योहोय अर्थ वियोग करसो लेयो गढ़हराप
पप वानी वियोग को पर्यायो हो अर्थ रहे
जैसे संजोग मै सो संजोग ते जहां होय पती
नेरा व होय ता मे एक शब्द अनेक अर्थ
अर्थ वाची होय जैसे गराप मलहन वि
धु विधु को अनेक अर्थ विधु लहत है गरा
प मलहन है जानवे को जोगता लहं
जासो जानी पे सो लहन गराप ल विना
विधु यह है वियोग कि पी तो सो विधु को अ
र्थ भगवान चंद्रमा नही क पूरन ही राछ
स न ही अपसंयोग ३ दोहा हरि सो मत है
चक्र सो शिव कर लसे त्रिसल पुष्कर सो
मिन वेर सो वनपलास के फल पहचानि
हरि लक्ष चक्र लहन शिव को अर्थ मह
देव की लषतु नही पुष्कर लहत चेरल
हन पुष्कर को अर्थ आकास न लावन ही
आगे वन लहत पलास के फल लहत न
वन को अर्थ वागजलन नही दोहा वन

110A

कीसो प्रोकंज है सरकी सो मो नीर ग्रेवर
सो प्राजो चंद है धरकी सो प्रा बीर ५७ वानी
वनज लसै लछ कंज लतन वियोग
की ये एक ही अर्थ कें जु दिखावन ईहा सी
वन को अर्थ जल वागन ही सरन लाव
सो लत नीर लतन सर को अर्थ वा नेन
ही ग्रेवर लत्यं जो चंद लतन ग्रेवर को अ
र्थ आकास वस्त्र नही धर लछ्यो चीर ले
तन धर को अर्थ सरीर धर प्राव सो पावै
धरनी को सो नाम है सो न ही है अथ वियो
गयः दोहा नाग ने सोहत सर विना राग
कहां विन तान वागन सोहत अर्थ विन
मुख न लसै विन पान ५८ वानी सर के
वियोग कर नाग को अर्थ हाथी सर्प नही
तान के वियोग कर राग गावनो प्रीतन
ही अर्थ के वियोग कर [illegible] वचन वाटका
नही पान के वियोग कर मुख को अर्थ मा
नन्य आदन ही साह वर्न्यो ल० दोहा

स॰

११८ अर्थी अनेक है कहन जहं सब ही शब्द
।।। वकाय है प्रधान सब नहीं न होसा हवज्यो
दृह्यमाणपरे वार्ता सब शब्द अनेकार्थ
होय सब ही शब्द प्रधान होय लक्षलक्ष
नन ही होय सा हवज्यो को अर्थ साथ अ
पसापद॰ दोहा जीनन तहां संपत्न तहां
नहां धर्म को जोर अरि करि सकें न सत्रु
तांह रि अरजुन जिहं और ६० वार्ता
अर्जुन के संग करि हरि कृष्ण रवि चंद्र
इंद्र पोनसिंहन हो हरि के संग कर अर्जु
न पार्थ वृंदन हो इहां लक्ष लक्षनन हो
हूनो शब्द प्रधान है संजोग सो प्रकरन
सो चिन्ह प्रकरन में एक ही शब्द बहु वा
चक होत है इहां हरि अर्जुन दुनो बहु वा
चक है अपविरोध॰ दोहा देष्यो रावन
राम में लष्यो ऽले वतुराम में इन सो कूरा
मन मही कोन गोरि को स्याम ६० वार्ता
रावन के उल्लेख के विरोध कर राम को म

कीरामचंद्रजीपरसरामनही दूजोरा
मबलदेवरामचंद्रनही इहांसंजोगन
सोलक्षलक्षनकेअभावते इहाराम
रावनदोऊप्रधानहे औरामप्रलंबपै
दोऊप्रधानहे पैइहांसाहचर्यनही
साहचर्यमेदोऊशब्दअनेकार्थवाची
चाहीये इहांवैरप्रधानहे अर्थलक्षन
दोहा अर्थहितेबहुअर्थकोसब्दजु
वैएक साहचर्यविनअर्थन्यसंग अर्थल
खोसविवेक ॥२॥ वार्ता जोशब्दबहुतअर्थ
कीवाचकहोय अर्थकहेएकपदारथको
समुझावैसाहचर्यविनाअर्थन्यसंविध
विनाअैसेसोअर्थव्यंजकजानीये उदाहर
दोहा विधसोंगनि (प्रोवत) जोगीलहेहरिमय (स्वरूप)
जगतविहार चित्रभानु (नवते) गहेहुतेहरेअ
वरहसोमुरार ॥२॥ वार्ता गहतारेतिन
कीदुनको चित्रभानुसपैहरतहे इहांवि
धकोअर्थनारायनचंद्रमानही हरिको

स०

११२ 112

अर्थ भगवानईश्वर आदरनही चित्रभानु
सूर्य अग्निनही अंबरको अर्थ वस्त्र आ
काशनही इहां अंबरसे निधनही घन
बरषन ईहां घनमो बरषत अंबर सो पर
लगेहै अंबरसे निधहै अंबरसे विधसोग
नईहांनही जवसवपरको अर्थ करे
औरसो भुकुनहीवहिरावे बेरबुरानब्र
मानरेपनवविधुको अर्थ नारायन अ
सेईगहहुतिको हरिवो औरसो नहीवह
रावे नव चित्रभानुको अर्थ सूर्य जानिय
नहे अंस ई और बसनको हरनो नहीव
हरावे नव अंबरको अर्थ वस्त्र जानीयैहै
सोहा इंद्रियंवसंकरं घरनजें सबलोक
रैंविराग बहुधनंकनिंसोंजोगनैं सब(जीव)पर
लहैंसभाग ११ वाती बहुनधनकोकन
वेकी न्याईगनै सबपर शिवको स्थान
भाग्यसहमनपुरषसब महादेवमे मारन
ही और पर्वबन अपाप्रकरील० सोमो

112A एकशब्दबहुवाचकआवे प्रकरननहोय
सेगवषाने टीका जहांएकशब्दबहुवाच
करहैप्रसंगमेंएक विषैवहुरापोइकरन
नागते उःखदेतनही
उराहरनै दोहा पावकतेराहेकप्रवललो
कविनकेवषान दियोमहावलेजानके
विष नाव
गरलभीमकोप्रान ६४ वार्ता कौनेकवि
वषानसके समुद्रमथनकेप्रसंगमेंपी
समहादेव नारणकेप्रसंगमेंभीमसेन
न कोदुर्जोधनेविषदियोयहकेषारे दोहा
वहुचषचेवलकुरिहमनतरसमयकर
भवता
नवनाय रहेउरवसीउरलगीराजनहै
हरिराय ६५ वार्ता गोपीकीउक्तमेनेत्रन
कोवहुनचेचलकरहमनहो श्रीसर्वको
वनायकेरसमेप्रेममेकरनहो उरवसी
धुकधुकी विंवाजोउरमेंवसीनायकाको
देवीकेप्रसंगकर वहुनजैहैनेत्रतिनेच
चलकरहमनहो रसमयजलमय उर
वसी श्रमसरामहरशब्दकोअर्थपक्षआक
व

स०

११२ 113 रहूलसकोंजनाकरइंद्र अथचिह्नलं० दोहा
वहैचिह्नजाकोनहींसकैवियोगवनाय
जोवियोगताकोकरैऔरअर्थठहराय
६६ वार्त्ता जोनिसकोवियोगकरैतोअर्थ
वनै उदाहर्न दोहा विनभूषनमनकोद
रेकाहेकरतसिंगार लुवछविपारलहे
नहरिजाकेनैनहजार ६७ वार्त्ता हरइंद्र
कोनामहजारनेत्रकोहरि हजारनेत्रको
वियोगनाहीहोयसकै दृढलहतहै हजा
रनेत्रविबाँहरिनहायकरनादिकरीए
जाकीप्रतीतहोयसोइंद्रकीप्रतीतनहीं
राजाकेनेउइन अथअन्यसंनिध दोहा
एकशब्दकेसंगनेऔरअर्थहिराय बहु
वाचककेशब्दकोअनिसंनिधइहैभाय
६८ वार्त्ता बहुवाचकजोशब्दहैनिसको
एकशब्दकेसंगते औरजोअर्थहैसोठ
हरजाय एकहीअर्थकोजिनावैअथवा
औरशब्दकोइनकोमिलायकेअर्थकीजे

113A

जैसे और जो कोई एक शब्द है तिसके सं
गते बहु वाचक जो शब्द है ताको अर्थ ब
हर जाय सो अन्य सन्निधान उदाहर्न
दोहा घन बरसत पलन सुमन कामब
लावन तीर न पोत है पियको लख्यो लिय
धरसकेन धीर ६९ वानी बरसन के संग प
लकें संग घन को अर्थ मेघ लीजै को घन
नही सुमन को अर्थ फूली रेवता नही व
लावन किंवा को मके संग ते नीर को अर्थ
वान किनारो नही निसा कारी भारी घटा
ई हा कारी के संग कर निसा रात है रसौं नही
पीया बिन लागत है खेंबुर डरावनो ला
गत के संग ते खेबुर मे घना तार मो पा ह
टो नही अपना मर्थ ल० दोहा व्यर्थ मई
कवित ऊन ने और अर्थ सुलखाय ताहि क
हे सामर्थ्य सब रहहिं बिध मे रहि पाय ७०
उदाहर्न दोहा सुनि गनि तन जे समाधि सु
खजनी तन जे सब जग मानर हे न तिपात

स०

११५ कोवोलतनाधिकमधुमत्त ११ वार्ता मधु
114
मदरातनाकोपानकोकिलकोनहीं चैत्रमा
सिकनहींकविकौउक्तिव्यर्थहोयचैत्रही
सोमत्तजनायो दोहा छलवलकरिसंग्रा
मलरिगयेदुवनसबहार तुवलषसषम
रसपुनरहेनगनकोधार १२ वार्ता दुवन
सत्रु नगजवाहरतनोकेधारनसोववाव
नहीं नगपहारतनोकोधारनोराषनोसब
वेनहीं बहुवाचकशब्दमेलदतानहीं ई
हांकविउक्तव्यर्थहोयपहारकोकहतहै
सैन्नंहींपांचितमाह सोमकोदीपचितमे
नहींसेयवैकोप्रकासकनहीं ईहांकवि
कीउक्तव्यर्थहोयकेकोयदीपहीकोजिता
यो अपच्योचितोल० दोहा दोयअर्थके
शब्दतेनिकरेजोगअर्थजोग जोगअर्थनहें
कीजीयेसोअचितोप्रयोग १३ उदाहर
दोहा दुर्निवारसंकटपरैलषचिनअति
अकुलाय नहेंनहेंगुरुमुषनिकोगुरु

114A पदहोनसहाय ७५ वानी दुर्निवारक
दुःकरकेजो निवारैजासुहसुखनेनजोद
श्रेसंकट गुरूपदेगुरोकोचर्न गुसुष
कोसोयअर्थएकतोगुरूकोसोसुषदेय
हतोअयोगसुषको[illegible]पमांनगुरूनही 3
देदैहै इसरोअर्थजोगुरूसोमनसुषर
हतहै सोहा रेमननसवनेनिरसरहुसर
मरोमनेहाहि यहेसि षावनरेतहेतुल
सीनिसदिनतोहि ७५ वानी निरमको
अर्थकमरमसरमकोअर्थअधिकर
मरतवा
संसुनमबकेसोयअर्थ एकतोमनम
४ के
वैपावनोयहलोअ जोगइसरोअर्थ रे
मनसवजगतनेनंनिरसरहु रामतेअ
धिकरसरहुचितरामविषेरमजुक्तिहोहु
रामविषेअसमज्ञिहोहु जगतसोरसछुको
रेहा कनकबरतननकामनीमोहतम
ननेरलाल वानी कनकस्वर्नधनरतन
ही देहंसोचितीहेसामर्थनहीसामर्थी

सं०

११५
115

होउ अर्थ मैसे रहे हरहे नवक विउक्ति
व अर्थ होय ईहालत्तना नही सोय अर्थ
को शब्द जहो लीजीये नहा लत्तना नही
समय उदाहरन दोहा चित्र भानकोरूप
ओर जनी मैं ग्राति होत हरि छवि जैसे
दिवस मे भोनु ववरन उदोत १६ वार्ता
रजनी दिवस समय सो प्रधान चित्र भा
नु आगमर्थ नही हरि मर्थ चंद्रमा नही
रात मे हरि छवि ईहा चंद्रमा दिन मे हरि
प्रकास ईहा मर्थ अथ व्यक्ति ल० दोहा
बहु वाचक सब्द वेना वे लिंग वचन उ
न व्यक्ति कहावे दोहा काहेको सोचत
सखी काहे होत बिहाल बुधवल हठल
प्रतिष्टा कर राषि है पति ने रीन ववाल ११ वा
र्ता अति मा रिका है ते री छत्र स्त्री लि
ग कहाई हो पति को अर्थ लाज स्वामी
नही स्वामी वाचक नहो ने रोपनि च्या
होये न है प्रोषित पति का जानी ये

दोहा जाको आननकंजसो जाकेनैनविसा
ल देषीवेंजुलकुंजमैमंजुलननवदिवा
ल २८ वार्ता देषी स्त्रीलिंगबालको अर्थ
बालाबालकनही आछो विधकहै विधा
न आछो विधकहै बुसा जाकेनैनबहुव
चनकह्यो याते दोऊ नैनविसाल जानी
ये आछो नैन ईहां जोनसो इकवचनजे
से ब्रासन आयो ईहां ब्रासनशब्द जान
वाचक है सब ब्रासनको कहत है ये आ
यो यह यांको एकवचन है यांते एकही
ब्रासनकी वनीत भई औसे जानो जान
सो चिंत्तसो कवि विहारी सोहन ओग
मुचणविरिग
ढापायके ओनवटजस्यो जराय जीत्यो
तरवनदुतिसुदरपरस्यो नरविनिपपा
प २९ वार्ता ईहां जीस्यो इकवचन है याते
यह अर्थ एकतरवनरविको जीत्यो तो इ
सरा तरवनको कहवानहै इनो तोरवि
वेइको जीते इत्यादिश्चैवविजानीये अथ

सं०

११६ देसउ. रसलैपुननजरेन हैचसननविकाङ

धाम ज्यो बिहरन घनस्यामन ज्यो बिरि

रनचूजंरोमे ८० वार्ता मेघमे रसजलको ले

के फेरन उरेन है तैसे रुक स्यामनेमे

वृजनमदेसरोमव लरेव परसरोमदा

सरधीन है घनस्याममे चहुरिनहोरोहा

देख्यो विहरनगगनमे राधाहरिइकसाथ

वार्ता इहा राधाहरिको सह चार है तऊदेस

प्रधान है इहा राधान ऊहरिचेनमाचि

हारी हरिराधाइकसाथही चले गलीमे

जात वार्ता गलीदेसइहा राधाहरिको

श्रीविलासचेनमानही रोहा यहनेरह

यरकारकी धुनिमे अविधाम ल श्रुतिमे

स्वरितादिकस्वरनिध्वनिनहिकविष्णु

कल ८१ वार्ता वेदमे स्वरितादिकस्वर

करिके ध्वनिहोत है श्रुतिवेदमे उदात्त अनु

दात्त स्वरित स्वर सो ध्वनि होत है सो ध्वनि

काव्यमे कविको अनुकूल नाही इनिम

116A

विधामूलध्वनि अथ लक्षनामूलध्वनि
उदाहर्ने प्रीतमरीतसबमोतेजोकाहूसो
नीचियार कोसबे बसीकामनीकरीयोया
उरहार ८२ वाती हारकरीनेही मवे
हारकोअर्थकेठलगाई लक्षना हारने
अर्थत्यागोयोनेलक्षन लक्षना हारशेष
माननायकारोप्पविषयघातेमारोपा हा
रकोओनायकाकोमाहूस्पतेवेधहैयाने
गोनी इकघरीकोनायकाकोजुदीनेही
करेहे अतिप्यारीहेइत्यादिध्वनि ओर
जहांप्रयोजनवती लक्षनाकहीहैतहां
ध्वनिकहीहे अथअविधामूलैलक्षन
मूलध्वनिकेठकरवेकेलिये छपे जो
गवनेजाकोवियोगरहि लताहेलक्षनाह
माहचर्जेलुप्रधानशब्दवहुवाचीसबम
नवेरिपसर अर्थअर्थसोइकठोकक
विधर लिंगचिह्नदेठकोलरेस ओचिती
उचितवरी प्रकरनवावक वहुइकति

स०

११७ यमवचनव्यर्थीसामर्थीनन अनिसंग
117 शब्दकेसंगकरिव्यक्तिमानतिन्नलिंग
वचन वाना जहां अनेकार्थवाची शब्द
सोजाकोसंजोगवने किंवाजाकोवियोग
वनेसोऊहोरहमेलछनरदे एकलच्छ
बहुवचनवाची
रहेएकलछनरदे वागोरमेवहुवाची
शब्दआपनेएकहीअर्थकोकहेनहां
संयोगतें १ औवियोगतें २ अविधामूल
जोलबी[illegible] [illegible] [illegible]
केजनां जोजानवेकोजोग[illegible]लछजामें
[illegible]
जानीयेसोलछन औजहांसबैशब्दअनें [illegible]
[illegible]
कार्थहोय औसबैहीशब्दप्रधानहोयसो
मिलकेएकहीअर्थकोकहेनहांसाहच
र्यतें ३ औजहांपरस्परबैरकरकेएकही
अर्थकोनियमहोयनहांविरोधतें ४ ज
हांबहुअर्थकोशब्दकिसीअर्थमेंएक
स्थानमैंकविधरैनहांवहुशब्दएकप
र्थकोसमुझावैनहांअर्थतें ५ लिंगना
मचिह्नकोजहांबहुवाचीशब्दकिसही

हतेएकहीअर्थकोदृढकरेक्योंजिता
वेतहांचिन्हनेजानीये यामेचिन्हदृढर
हे चिन्हकेछूटेवहिअर्थनहीरहे जहांरे
सकरकेएकहीअर्थकोकहेतहांरसने
९ जहांशब्दकेदूअर्थहोयतिनमेएक
जोगअर्थहोयएकअजोगअर्थहोय
~~मेके~~ तहांअजोगकोत्यागकेउचितअर्थ
करीयेतहांऔचितीने १० औजहांए
कशब्दबहुवाचकरहेप्रसंगसोएक
मेठहराईयेसोप्रकरनने ११ औजहां
कविकोवचनअर्थहोयकेबहुवाचीश
ब्दकोएकअर्थजितावेतहांसामर्थने
१२ जहांअनेकार्थशब्दकोएकअर्थऔर
शब्दकेसंगकरकेजान्योपरे तहांअनसं
गनेयाहीकोऔच्यसंनिधकहतहे १२ ज
हांबहुअर्थकेशब्दकोएकअर्थलिंगऔ
वचनजितावेतहांव्यक्तिने १३ लिंगप
हनेस्त्रीलिंगपुलिंगजानीये वचनने ए

स०

११८ 118

कवचनवहुवचनजानीये द्विवचनमा
षामेनहीहै लिंगवचनजहांअर्थकेभेद
केहोयतहांव्यक्तलेजानीये जाागनसोजो
१भिन्नहोयसोव्यक्तिकहीये एअविधाम
लव्यंजनाकेभेदभये औ लहनाजाकोम
लहोयसोलहनामलव्यंजन उदाहर्न
कथ्ये जोगचक्रजुनहरि वियोगविनच
क्रनुहरि पुन सांपश्रीमधजुनेविरोध
रा ...वनमुरेमसुन अर्थहे नविधुमुक्तिश्री
मविषपियोसप्रकेरन सहस्रनयुनहरि
चिह्नअन्यसंनिधुघनवरषत सामर्थ
मनायिकमधुसमयविधनिसरसेसुधा
सुरग गुरुमुषसहायऔचिन्हव्यक्तनिवि
धमोलहनेगगमग ८४ वार्ता चक्रकेस
हतहरिविसरहेईहांसेजोगनेअविधा
मलव्यंजना हरिशवदवहुअर्थकोहेतो
कोचक्रकोसंजोगहे चक्र लहनहे हरिल
दाहैयातेहरिकोअर्थविसरहेइतनहीक

कमलनही यसचक्रनो विरहयैहैयाते
यहविरहहीने कौनहोय उत्तरविरहकेवि
योगकियेवह अर्थनहीरहतनहो औरु
अर्थहैजातहै ईहांवियोगकीयेभीयही
अर्थरहतहैयहमेर औचक्रकेविनाहरि
है ईहांवियोगतेअविधामलकैजनो
चक्रकोवियोगकियोतोभीहरिकोअर्थ
विष्णुहीजान्योऔररनही यहकाहूसोव
हीमिलत लक्ष्यलवनयामेभीजानीये
पूर्ववत भीमअर्जुनसाथहै यामेसाह
चर्यतेअविधामलकैजना साथपरमा
हचर्यकोभीवाचकहै ईहांभीमकेसंग
तेअर्जनकोअर्थपांडवजानीये इहांको
औखेनकोअर्थनही औअर्जुनकेसंगतें
भीमकोअर्थभीमसेनजानीयेशिवनही
यहल ईहांभीमअर्जुनकोसंजोगहैताते
यहसंजोगहीनेकौनहोय केवहीसौव ह
र्यहीनेकौनहोय उत्तर संजोगमेलक्ष्य

स०

११९ 119 लक्षनदोऊ होतहै यामेनहीयहभेद प्र
श्न ईहांवहुवाचकशब्द प्रसंगकरणकअ
र्थमेठहराये यातेप्रकरननहीतेंक्योनहोय
उत्तर प्रकरनमेंएकहीशब्दवहुवाचकहो
तहै सोआगेआवैगे ईहांभीमअर्जुनदोहै
शब्दवहुवाचकहै यहप्रकरनसोभेद रा
वनरामसुनेहैतुह्मे ईहांरावनकेविरोध
करकेरामकोअर्थरामचंद्रजानीये वलम
द्धोपरसरामनही प्रश्न संजोगहीतेक्यो
नहोय उत्तर लक्ष्यलक्षनकोअभावहै प्र
श्न रामरावनदोऊ शब्दप्रधानहै यातेसा
हचर्यहीतेक्योनहोय उत्तर साहचर्यमे
विरोधप्रधाननहीहोतऔवहुवाचीदोऊ
शब्दहोतहै यामेविरोधप्रधानहै औरराम
यहएकहीशब्दवहुवाचीहैयहभेद मु
क्तकेहेतकारनविधाविलहैईहांअर्थते
अविधामलकेजना ईहांमुक्तिपदार्थवि
श्नहीतेसिद्धहोतहै यातेविधुकोअर्थवि

119A षुजानीये चेंद्रमा नहीं कपूर नहीं राहसन
ही पूप त्रिशब्द के संगते विधु को अर्थ वि
षु जान्यो तो अन्य सें निषेधही ते को न होय
उत्तर ईहां अर्थ के कीये ते विषु को अर्थ जा
न्यो जात है यह रीत अन्य सें निषेध में नहीं न
हां सुन नहीं अर्थ समझ्यो जात है अन्य सें नि
षेध के उदाहर्न में कहेंगे घनवरषन ईहां घ
न सो वरषत है सो पर लगे है यह अन्य सें नि
षेध है ऐसे विध मुख्य है तें ईहां नहीं लगे है जब
सब पद को अर्थ करे ओर सो मुक्ति नहीं ठहरा
वे वेद पुरान प्रमान देयत न वा विध को अर्थ ना
रायन जानीये यह भेद ओर लाद्वर्ग में दो
ऊ शब्द बहुवाची होत है ईहां एक विध शब्द
ही है इतनो साद्य वर्ग सो भेद ओर महातीत
न विषै भीम को दियो ईहां प्रकरन ते अवि
धा मल खोजन ना जो समुद्रमथन को प्रसंग
होय तो भीम को अर्थ शिव जानीये भीमसे
न नहीं जो मारथ को प्रसंग होय तो भीम

कोअर्थप्रीतमसेनजानीये ऐवनही प्रीत
सेनकोदुर्योधननेविपरीतपरहकयादे
यामेप्रसंगप्रधानहेयानेसर्वसामेरहेश्री
सहस्रहजारनेत्रनकेसहितहरिइंद्रहेईहां
चिन्हनेअविधामलकेजना हजारनेत्रयह
चिन्हहेयानेहरिकोअर्थइंद्रहे कमलवार
र स्तर इस्यादिनही प्रश्न हजारनैनकोसं
जोगहेयानेसंयोगहीनेकोनहोय उत्तर
याकोवियोगनहीवनायसकतकोहजार
नेत्रकोवियोगवानहीह्वैसकतहृदलद
नहै जोहजारनेत्रविनायसकतकोहजार
हरिचैसकेहिपेनहोयकरनारकरिकेराजा
कीप्रतीतहोयगीइंद्रकीप्रतीतनहीयह
मेर प्रश्न सहसनयपाशब्दकेसंगकरकेह
रिकोअर्थइंद्रजान्योतोअन्यसांन्निधहीने
कोनहोय उत्तर अन्यसंनिधमेंएकशब्दको
अर्थहोतहै इहांसहसनयनहैशब्दहैश्री
चिन्हकीप्रवलताहेयातेहरिहीनेजानी।

120A

ये हरिको अर्थ अवधाकरकुह्य औ मेज
नाकरइहजान्यो औ घनवरषत है इहां
अनयसे निधनते अविधामूलमेजना वरष
नशब्दके संगते घनको अर्थ मेघ है सो ह
कोयन औ कपर नहीं औ मधुवसंतमे पि
ककोकिलाम नहोन है इहां सामर्थते अ
विधामूलमेजना मधुनाम मदराको तो
कोयानकोकिलको नहीं मेजवे है याते उ
नमत्त होय औ मधुनाम चैत्रके महीनेको
भी है सो मादक नहीं है याते मादिकविना
उनमत्त है वो नहीं मेजवे है औसे इहांक
विकी उक्ति अर्थ होय के चैत्र ही सो मत्त जि
जायो याको लक्षन मीका है सो नहीं मिल
त प्रश्न कविकी उक्ति तो लक्षना मे भी अर्थ
है अर्थको जिनावे है याते इहां लक्षना ही
को न होय उत्तर वहुवाची शब्द मे लक्षना
नहीं होत यह क विनको वचन है औ सम
यविधुनिम अर्थ निमराज विषे विधुचेद

स०

१२१ 121 माहे तब चक्रका समान होत है इहां समय ते
अभिधामूलके जना रात्र के समय ते विधु
को अर्थ चंद्रमा है वुस्यान नही प्रश्न इहां रि
सा अरु विधरो ऊ शब्द बहुवाचक से है
जिस हर शीको भी नाम है ताते यह माहे च
जी होने को न होय के जिस विधको संजोग
हे याते संयोगहीने को न होय उत्तर साहे
चर्य मे भी संजोग से समय को अभाव हो
त है इहां समय प्रधान है यह मेर आगे
हे समुधा सरग अर्थ तिय कनक के वरन
हे यामे भी चिनी ते अभिधामूलके जन
इहां कनक के दो य अर्थ एक तो धतूरा सो तो
अजोग है धतूरे के वर्न तिय नहीं संभवे है
तब दूसरो अर्थ सुवर्न तिस के वर्न जानीये
यह जोग अर्थ कियो प्रश्न यामे तो कवि
को उत्तम अर्थ नई तो यह सामर्थ्य हीने को न
होय उत्तर सामर्थ्य विषे तो अन्य अर्थ मे संदे
ह रहत है तब कवि की उत्तमार्थ होत है

121A आयामेएकहीअर्थमेमेरेहहेइसरेमेव
होपहमेर प्रश्न जोएकअर्थमेंसंदेहहे
आइसमेरमेनिश्चहेतोई हांलक्षनाहीको
नहोय धन्तरेकेवर्नेतियनहीमेमवैहे ल
क्षनाकरस्वनेकेवर्नेजानीये ईहांतोलक्ष
नापूछहे उत्तर जहांअनेकार्थकोप्रश्नहो
तहेतहांअविधामलक्षजनाहीहोतहे
लक्षनानहीहोतयह प्रश्न मकहहीआये
हे जोऔरठोरमेश्रीकोकूइनकेजनामेय
ह प्रश्न करेताकोयही उत्तर दीजे जैसे गं
गामेघोषईहां लक्षनाहैसोगंगाशब्दवहु
वाचीनहीहे प्रवाहहीकोवाचकहैऐसेजा
नीये आगे विधमैविधब्रह्मामयोयोमेम
क्लिंश्वविधामलक्षजना ईहांमेपहशब्द
पुलिंगकसोयाते विधकोअर्थब्रह्माहीजा
नीये विधाननही जोविधमईवहीयेतोय
ईशब्दस्त्रीलिंगताते विधुकोअर्थविधान
जानीगे ब्रह्मानई ऐसेईवहुवाचकमेवहु

स॰
१२२ 122

वचनएकवचनमेरकोजिनावनहैसोछे
थ्येमेनहीजिनायोउपरसोकहतहै जा
केनेनविसालईहाव्यक्तिमेजोकेयहव
हुवचनकसोयांतेहोउनैनविसालजा
नोये औरजैसेकाहूनकसोवुरानऔ
याईहावुासनशाबजाप्तवाचकहैसर्व
व्राह्मनकोकहतहै पैईहाव्यक्तिमेआयो
यहएकवचनहैयातेएकव्राह्मनकीप्रती
तभईजानसोभिन्नसोव्यक्तियहकहुहीघ्रा
येहै यहनेरहवकारकीध्वनिमेअविधा
मलहै औवेरमेउदात्तअनुदात्तस्वरित
स्वरसोध्वनिहोतहै सोध्वनिकाव्यमेकवि
कोअनुकूलनहीहैयातेनहीदसमेरक
केअविधामलव्यंजनाकेचोरहमेरकहे
है इतिअविधामलव्यंजना अथलक्षना
मूलव्यंजनाकोउदाहरन कृष्णकोपाठ
लक्षनागंगमगंअर्थ गंगामेंमगराहहै
यामेलक्षनामूलव्यंजना गंगामेमाईन

नहीसेग्रैवेलछनाकरकेकिकिनारो
मानिजानीये गंगाकीसीसीनलछनाग्री
रिधजति यांकोलछनमूलहै यहजोल
छनामूलमेंजनाहैयासेलछनाकोउ
योजनहीकेगजानीये ग्रौमिच्छनही
इतिशाब्दीकेजना अथआर्थी दोहा
वक्ता१ श्ररुवोधव्य२ पुनवचन३ वाक्य
४ अविसेग५ देस६ काल७ रसजानी
येचेष्टा८ काकु९ प्रसंग१०॥८५॥इनद
सकेपरभावतेउपजतजेअर्थविरूप वक्ता
रिकवैसिष्टतिहकहनमुकविकुलम
प ८६ वानी वक्ताकहनवालावोधव्य
जोकोसमुझाईये वचनवैसिष्टतावाक्या
र्थमेंजानीये वाक्यार्थवैसिष्टप्रभावन्हि विलख
लखननाजानीये अथवक्तावैसिष्टतो
लेसभाप्रकासकोउदाहरन दोहा दृगनि
नषेजनचातुरीवचनमुहुसमान
कहोमभुकिमोसोवेधेहरिननमनहैंषा

न ८७ प्रीतमकौपहरीनसषिमोहकही
नहिजाय ऽऽकनहौढिगहोरहनपल
वियोगनसुहाय ८८ वार्ता मोहिसौतुर
रीऔरनही नायकमोरे ई स्वाधीनहै
इत्यादि कई होयअर्थ सौवक्ताकेप्रावते
स्वाधीनेजनावक्ताकीनिपुनताकरि
विहारीउ॰ सषिसोहनगोपालकेउर
गुंजनकीमाल बाहिरलसतमनोपि
येदावानलकीज्वाल ८९ वार्ता षेडतो
कीउक्तिसोयह अर्थनिकरैहैयहसोनके
गरकीमालाहै सोमोहदुषदेतहैइत्यादि
जोऔरकीउक्तितोमालाकोवरनन
अपवोधव्यंग्य हैउ॰ मोहितमैचित
दैफिरी सषीनिकुंजनमाह चयेअंग
श्रमस्वेदकनलयोसुप्रीतमनाह ९०
वार्ता मेरेअहितमेचितदेफिरीहेतें
प्रीतमपायोयहविपरीतलक्षना ई हां
बोधव्यंसषीनाकोतिलकननोते छोवै

123A तेनायकसोंसेजोगकरसुहदुषदेनको
भाईहै भाषाभूषन सुरगचढायेपतित
तेगंगकहाकहुतोइ वचनको ईहांगंगा
जीकेप्रभावतेंगंगाजीकीसुतितिध्वनि
तेऊवोरसषीश्रोगंगाजीकोधधनतिन
केप्रभावतेश्रग विहारी वालछवीली
तोयनमेंवैठीश्रापछिपाय अरगटहो जाता
पानलमोपरगटहोत लषाय २१ वाली
नायकाछवीलीनायकानिमेंआपको
छिपायकेवेठीहेनाकेआगेचोरसुदरी
कीजोनरवगई वेसनिसुरनीहेतुमवा
नेदेषहुगेतोरीझहुगेइत्यादिध्वनिनाय
कवोधकतोकेप्रभावनेश्रपवचनवेसरह
इकटकदृगनेस्वछसहिनिरषतहोमो
हरवहीहारश्राही तुमेलषतनकहा
विचार २२ वाली मेरेहारकीस्वच्छविमि
लनचकोरषतहुते वहीमेहोहारमें
सषीकोप्रतिविंवपरगोणोनवदेषणे

अवसषी गई काहे को हमारी ओर देषो
केसव सवैया दूरतें देषन को जु हे दीनप
वाई हुती लिषहे लिषवौती देषमिल्यो
मनहौ हे मिली मिलषे लवेहू को मिली
मनमीठी ऐसे से ओर चलाय हो केशव
केसे हू कान्हकुमार देटोठी है हेनवार मु मिष
रारके नार ज्यों टूटे है लाल हमें तुम ई गी मित्रता
९३ वार्ता मना लके नार षीचै व टे है हमै
तुमे प्रीत वटेगी इत्यादि वचन में छवि वि
हारी नो चलि हे मलीय वनी नागर ने रवि
सोर ज्यो तुमनी के कर लषो मोकर नी की
ओर ९४ वार्ता तो मलीचनी चलेगी ना
गर प्रवीन प्रवीन होय सो आपने मोग्य
चाहे हमारी करनी ओर देषो हमारे कु
टिलता की करनी तुम छिमेगी हमरी
न तुम री नरयाल आदि जानीये अथ
वाच्यवैम छ नरनी मन मोहन पहे वा
ग कलिंदी तीर सुरन वेधु सो मेर गन

124A राजनलहोसमीर ९५ वार्ता सुरतलमे जोग
कोवेधुहै आरपीउपमाकरिसमजानीये
जोसषीकौउक्तनायकासोहोयतोवाच्य
वैसिष्ट जोसषीनायककोसुनायकेनाय
काकोकहैतोअैसेविधवाच्यवैसिष्ट
मेएकअर्थजोगतेसिकस्योयहसुरतस्वा
रपस्यानहै यहीअर्थफेरव्यंजकसयोसु
सईहारमनकरो दोहा सवैकहेंयरनार
कोजगमेवहुतप्रवीन यहरचनाताकी
लषीराहुवधकुचकीन ९६ वार्ता राहु
केहाथनहीतोराहकोइस्त्रीकेकुचनको
प्रयोजननहीयाहीयेयहराकअैगअर्थ
फेरइहीअर्थकोजकसयो विधकीआग्या
नताआदिधावनिंकोयोतेवाच्यवैसिष्ट
एकअर्थसोजहाइसरोयटीनिकरेसो
वाच्यवैसिष्ट केसव सवैया आपनही
घरसाईपरीजुरआईसिषलाईकीये
घवहाऊ पोरीयेआवेरतेओइतेपरऊ

स० २५५
125

चेमुनेमुमहा दुषपाऊ काहू निवारहु म्या
यनयोइन आनिलकोलगहोवहराऊ
मोसंगएसवसोवन आवैचिहोइनकेसं
गसोवनजाऊ ९७ वार्ता यहसेपूरीकवि
नकोअर्थ घरमनोहै यहराक अर्थव्यंग
सोनिकस्योफेरयही अर्थव्यंजकभयो तु
महमसोरमनकरोइत्यादि ध्वनिको
ईहांचक्रिबोधव्यंग्यसहायकहै ईहां
रेयननरुननहै तोकोमहायकपरहै जो
बूढीवृदासोकहेतोवाआतातानबालक
सोकहैतोमहायकपरनहीं तोतोअरिय
अर्थहोय अप्रअन्यसेनिधउ· दोहा सानु
ननदंसोप्यौसरनकहिकरि घरकोकाज
छूटहोपकेहोपनहिंमा इसमयमोहेश्वा
ज ९८ वार्ता ईहांउपपतिकेनिकटतेसंध्या
समयकोसंकेतइत्यादि ध्वनि पिछला
दोहा उनेहेर हरिकहनइनि साँविजमुना
केतीरसेलेनजानहोहारकोअमूल्योआनन

जमुनाकेजल लेनगई थी

125A

औरे ९९ वाली नायककेसमीपतेनदीतट से केतकवनायो मायाभूषन किलैं गयोश्रलि केवरैं छाडसुकोमलजाय वचनका ईहाना यकनायकाकेनजीकह्नीवचनश्रौर सोयाभ्ना यकासुरेरीछाडश्रौरनायकापा सकोगयोयहच्छवि विहारोदोहरा नाहिपरागनहिमधुरमधुनहिविकास इहकाल श्रलीकलीहीसोंवंधोश्रागे कोनहवाल १०० वाली नायककेनजीक केहेतवचनसेविधकोडरमहनेजानी ये नायकनजीकनहो यतोयसंगकोडरा हनेहोय श्रपदेस ३ दोहा श्राईलाल विलोकीयेराधोश्रापसमीप जानोया हीनश्रोरसोजाईमंगलदीप १०१ वाली मंगलदीपदिससो छविनिषहेंश्रतिसु दरीहेपद्मनीहे दोहा कोनतुरीइनमे सिरेकोलायकहेजेग कोहीकाछीघोरो रहेश्रवीयहेतुरेग १०२ वाली को

हे भ्रमर
कोमल चंवेली
अन्य कौन ... वह नायक ... व्याप्ति कर्यो तो
नायक कुसमीपल होय तो पलव्यांग नहि ति करतो
हे
हालहूगो
हे
वा नायका केर डोली
देषौतस
...
बौद्ध
देषयहै
मीको
काछी कच्छ देसके घोरे
सरवदेस

स॰
१२६ हौंकाछीन्यूनहै अरुकीसिरहैपहरे सने
126 नवीनवपुकरी
छवि दोहा मैंगोवपनहि सासुघरसंषि
वनत ज्ञानन
स्नौंमोंभागहै हांनवनदैंवासकहिं अन
तंवसोघनस्याम १०३ वार्ता गोवधनकी
तुमरहै मेरी हेसषीनईकोकहि हेस ने
षिलैकहि घनस्यामसोपहचर्षीतिजैन
हेसहै गोलेछवि ईहारहोहमसोरमन
करासेकामनकरोकोई इस्यारिजानीये
गोवधइस्यादिसहायकपर हेसकोजक
स्नाघरकोजानीये सुद्धसिंगार उत्साह
ने सवैया सासुरेकोचलींबाहरवागवि
लोकनहींअषियांसरऔंईं जानतहीं
सजनींजियकीतिनकानवे आवतनहीं मे
समुझई देषविनांपहिलेहींमलीरन
केलकीठहरकोंपठनाई जानजहांकों
काव वाग
मेरर तहांपुनसुंदरसनेघनीं चेचराई १०४
वार्ता देसकहीयेस्यानईहांमेरेरखा
गरेसनेछविपरपुरुषसोंतिहचिंत

126A

विहारकरोगीकोईदेषेगोनही इत्यार

जानीये १०४ अथ कालतु दोहा नहितु

उतपके

चायचेचलचषनचितनवनैंजतनवनेंगा त

घर

सं अचैंलाजकोराषहे आयोफागुनमा

स १०५ वार्ता चेचलचषनकोकानेत्रब

कोलेउचायकहियेउतपकेनहीदेषत

हे अर्थपह नहीऊंचीनजरदेषेहैनही

वासघरकोछांडेहैपहअर्थफागुनमास

सोध्वनिरंगडारेगागुलालडारेगोगारी

देहगेइत्यादिजानीये दोहरा नपोवयस

वसंत वजीर

रितराजयहसमेंवेकोमकोजानं सुति

कोमननहिंरहसकैकहांतिहारोमान

१०६ वार्ता वचनमेंबिनामनायेनायक

सोमिलेगीधीरजननहीरहेगोइत्यादि

ध्वनिजानीये विहारी कियोसबैजग

काम

कामवसंजीलेंजितेअजेयकुसमसर

मकरमान

हेसरधनुषकरिअगहनैंदेय १०७ वार्ता गहनन

ज्योमानत्रीसोसषीकोवचनहोयनोध्वे

नि जो मेरे मनापेन जायगी तो विना ही
मनापेना पकु के पास जायगी ते रो मान
न हीर हेगो इत्यादि जानीये विहारी मि
नायक को नायक
ले विहरत न चिबुरत मरत नु है पति चित
नवीन
रसलीन नैन न विध है मैन रिनु जगत
एक परकारी पती विशेष
जुरा फाकीन १०८ वाली मानती सो सखी
को वचन है मैन प्राधान्ये श्री रूप रस सहाय
कारी अथ चेष्टा वे सख्य पिछला दोहा
हरि लालिचो है वे पनने रे षी नि पमुष
वनायका
मल घान चतुरजन ल मैं दियो वेधु जी वकै
पल १०९ वाली हे पद हिरी मैं वन मैं मिला
नाम छंद को
पहो पगो पद चेष्टा ले छवि कोर चेर नाकु
लकल चोरु अथी को जो समुझावे चेष्टा
सो पांक हावे विहारी गुरुजन वि
चे लप कमल सों मैन चले होपो स्याम ह
रिसनमुषकर आर सो हिये लगाइका
प ११० प्रसिद्ध है दोहा प्रीतवरो मष विको
पिय आगम का हक हो गुरुजन वि

वंधुजी वगुल
दु पहसी तो पा
हो दुपहर लई
तो जल मै गेरखे
हो जल को ना
मवन है वहांसे
वनली ऊ ते
का डि डपह
र के वन मे
जाऊ तो पहले
गाकल मे चेष्टा
सो निकर पे जो
वे षा न करती
तो न हो नि
करे पाहे
ते चेष्टा है षष ॥

127A चवाम विहसन न हो वे रोग ही कि मकार
न छवि रोम ॥११॥ वार्ता वे नीको नो मंक
वरी कव आयो रो पद ध्वनि प्राचीन
कवित वासुरी के विचरत के मौर मर ला
ई सषी मतो वट पल्लव ले कुंवल मारी सौं
मनन कुरान या मे आप ही सो ध्वनि है हा
न कान रहे के सुनो क सो राधका कुमारी
सो री जी रिजवारी आलि मन मे मग रहे
कै आपुन ने वाह मुष दाण्यो नील मारी
मो खेवर मे गावहै विहस उठी चली प्या स्ती
री क सो आज ई हां रही पै इमारी सो ॥१२॥
वार्ता वे सो वट मे नायक को रस सो अकुला
ने है आपनी और देष्यो प्रकाम मजिला पोसा
षमारी सो मुष दाप्यो वे इ मा अस्त मपेमि
लोगी इत्यादि ध्वनि अथ का कुचे सहुल
कवि कहत ने का कुसुर मेरे ज्ञान सो हातु
घन घहरन चपला चलत कियो मरन
नगराज समय मुहावन रसिक विरपी

स०

१२८ यं न चैहै आज ॥१४॥ वार्ता ऐसे सुहावर
128 समय मे प्रेहरस कनायक पीवन चैहै
याकों अर्थ स्वर ग्रेर नें आवे गोपर ध्वनि
ऐ मी ठोर मध्यम काम ऐसे समय नाय
क परदेस रहे गोई हेतु न मकाम नका
र करि जहां निषेध कीजे न हो मध्यम का
म न चैहै ऐहै यामे नकार विना जहां नि
षेध कीजे न हो तु न मकाम करी रि सो ही
जाहुगी सहज है सो ही और रि सो ही करी
जाहुगी न हीं करी जाहुगी ई हा न कार नहीं
आपे पाने उत्तम अपवृ संग वेस ह दोहा
सु आ पीय नों आय है सजे नीया हीं वौर
जो कर नों सो की जीयें अवको करनें ग्रेबा
र ॥१५॥ वार्ता जो परकीया को प्रसंग होय
तौ और नायका आपने उपपति सौं मिल
ने गई है ताको वचीहै तो अपर सो मिल न
पाई ध्वनि जो स्वकीया को प्रसंग होय
तौ गह काज घेग नाई ध्वनि बिहारी

128A कोकहिलकैवहेनमोलषेवडीहैमूल
होनेदहिगुलावकीइनडारनवेफल ॥५
वानी जोप्यारेगुनवालाकोराजानेवहुतु
रीयोतोवडीगुनीकोववनरानतोगुनवं
रानतोद्दान जोकपतकोवेदामप्तहै
तोउसेगसोतहांमीलगे जोवुरीसरन
केपुषकीलुगाइसुंदहोपतोतहांमीलगे
जोकेउसेगहोयतहोपढछपीलगे जो
कोउसेगहोयसोनजीकनहीरहे अन्य
सेविधमेवहनजीकसुननोहोय तोकुस
हनेनहीतोवहीउसेगवैसहकोउराद
नेजानीये दोहा किनेगयोमालिकेवरे
वानी ईहानायकानायकसमीपहै कोक
हिलकैइसारेतोहामेउसेगचाहीयेउहा
[illegible]नपरवानचलीहेसोपुरषउहांनहै
जोउसेगअमासेविधमेंमकमिलेतोसे ८
[illegible]मिलछवानेहोय ताधावाधकमावउसे
गमनही ताछाजाकोरोकीयेवाधकरोक

स०
१२९
129

नबाला बिहारी बेनईहोनागरिबेडेजिन
आररनेआव फल्योअनफल्योमयोगवई
गावगुलाव ११६ वार्ता ईहाअवासिपाई
होकेकेप्रसंगमेकोईकहतहे नहोप्रसं
गसोसिपाईपरप्रीतलगेहे सिपाईगीरीनेई
होकोनप्रछेहे औसेहीआलोपेतनआले
कहिआछोसुनसीआछोगवेयाआछो
सुघरआरिकेप्रसंगतेधसि ईहाजोको
प्रसंगचल्योहेसोसिपाहीआरिकनजीक
हे याते अन्यसंनिधहे पेयामेकछुप्रसं
गमीकछुमिलतहेसोषनही पुनबिहारी
औरहेसयानगरमेजैपोआपचिचोरका
नसोजिनप्रीनकरकोपलटईबिहार ११७
वार्ता जोसभामेओसोप्रसंगचलेकोईएक
गुनीगवारगावमेआयोहेकरकोईकहे
कूहांतोबहुनगुनीघराबरपेहेनहोको
ईपहसेहापडेनवप्रसंगकोउसाहनी. कहे
अपसेंनिधनाहिजानीयेजोकाहूकोसुन

129A

यकेकाहू चितकहेनो थेंन्यसंनिधहोय
पुनसोहा ३ तुवकरनीकोकहिसकेमेरी
कन्हाजुवान जैसोपोपैतुमकोपोजानन
सकलजहान ।१८ वार्ता जोभलाकोपसं
गहोयतोभलाजानीये जोबुराकोपसंग
होयतोबुराजानीये इतिप्रसंगवक्ताश्रोतारि
एक कनैकको उत्साहनैयारो आवतहैयातेव
क्ता श्रोतिकोएकत्र उत्साहनै अथवक्तावा
प्रसंग कापश्रोतावरेसकालको उत्साहनै एकत्र
सवैया कहितहोसखीवकहाकरीयेपि
यआयेनहीकिहंकारनसों चपलाचहु
कोरंपयोरघटानटरैचिक्कुंकेजकेहार
नसों नपसैनकोचीरसमीर हरेमनमेर
सुगंधकेभारनसों जुकिसौंगनवेलनवे
लिंगेद्रुंमंवलयंवकेरवकीभारनसों
।१९ वार्ता नायकाकीसखीपतिकहतहै
कहुकीरवारानरपकचपलाचीजुरीओप
पोरपेवीओघटाहै औरचितपेरोकेजके

...नाम...सधरजोहेपरसराम

स०

१३०

हारनसोनहीटरनहैऐसोलीनभयोहै

औमैनकामदेवराजाकोवीरसुभटजोप

हमेरसमीरपवनहैसोमेरेमनकोहर

नहैऔसुगंधकेभारनसोजुककरकेल

ववेलऔप्रेवनकीऔकरेवनकीजार

नसोलागनहैकिंवावेलजोहैनवेली

नवीनसोरेबच्चेवारिकाकीडारनसोजु

ककरकेक्याचाहनाकरकेलागनहै

किंवाजुकीहुईजोडारैहैतिनसोवेला

लागनहैईहावक्रोकामपीडनतापका

लोकेप्रभावतेसामर्थवोधकईहासखी

हैजाकोवुरूवेहैपवनमनकोहरनहै

इत्यादिवचनकेप्रभावतेसामर्थ्यविदे

सगयोहैमेरएकलीइत्यादिप्रसंगते

कुंजदेसकुंजवनविनानहीहोतहैनि

जैन देसकेप्रभावते कालचहैऔरूपे

पकीघटाहोयरहीहैपरपुरुषवुलायौ

मैविहारकरों इत्यादिध्वनिजानोयेया

130A हीनरहस्यौरुवौरुजानीये अपमेछेपनें
लुपो वक्रामहसुगह्योकूपानमे अरिगु
रमाजन पुनवोधकामसेसमपरसधर
लषकोगाजन (वाक्य। हे) वचयेनेगकरसकन
(शिवजी) कहामोदियेअभित्तवष वाक्यौरविधि
षाराकिपोकरनौबुधंलाधिं अनसेगजा
पहेंविपनमाधिंयेहकूजनंकोकलसु
षर'रहसमपयमानमनिकरिअलिभाषो
मावनसामवर १२० वानी कोडकहतहै
मेमहजनुमावहीसोकूपानतरवार
पकस्पोहै तोनेअरिनकेपुरमाजनहै
ईहाध्यनिपहजोमेरोसकरतरवारय
करतोकहेजानीये कहाहोतोमोहसमा
नऔरुवलीनही ईहाध्यनिपहजोमेरो
अर्थसोवक्राकेषमावनेंआंधीध्यजना
है वक्रकीनिपुनताकरके पहवक्रावेस
ष आगेपरसधरलषकोगाजनअर्थ
काहूनेकह्यो वहसधरजोहेपरसरोम

स०
१३१ ताकोतेरेषकेकोगर्जतहै इहांबोधक
परसराम किंवा वह पुरुष ताको सत्रु
भयो ताके प्रभाव ते यह छत्रिनि करि जि
न परसराम ने इकीस वार छत्री ते रहत
पृथ्वी करी है तो हगरीव की कहा गन
ती ही इहां बोधक के प्रभाव ते आंपी को
जता यह बोधक वे सह आगे वचन
गकर सक्ति कहा मो हिये अगिन चष अ
पीका हनेक सोअनेग काम की कहास
कत है ताके अंग होत है ता से शक्ति है
त है के मनो अनंग है हमारे हिये में अ
ति चषशिव है सो शिव ने अगिनि के नेत्र
सो को मको जरायो है सो हमारे हिये में है
हमारे पास का मन ही आवे गो इसा रिषि
पी वा कामो निकर्यो पाले वचन के प्रभा
व ते आपी को जता यह वचन वे सह
याही को वाक्य वे सह कहत है आगे
वाक्य नीर निधपार किये को करनार

131A डुलषअर्थ नीरसनिरोधजोसमुद्रहेताको
षारोकौयोवुझायेयामेकरनारवुझ्याकी
वुद्धज्ञानोपरी याअर्थमेतेपदअर्थनिक
स्योजाहनीरसनिधमेवहनुरतनहैलक्ष्मी
कोपिताहैअंमतकोघरहेताकोषारोकी
योयाअर्थ सोआगेज्ञानपसोवुझ्याअगा
नहेइत्यादिध्वनि ईहांवाच्यअर्थकेप्रभा
वतेअर्थाकोजनाप्रश्नपदवचनहोते
कोनहोय उत्तरवचनमेएकअर्थसोनहो
इजोअर्थनिकरेतहांवाच्यवैसहेवच
नवैसहनही आगे अनसेगजायहोवि
पनसषिजहकजनकोकिलकवरहेना
यकसषीसोकहतहेसेविपनवनको
जायहोवैसे [illegible]नहेजहांकोकिलकजन
हैईहांनायकसमीपहैतिनकोसुनाय
केनायकानेकहोनानेवनमेंसकेनजि
नायवोध्वनि ईहांअर्थसोअन्यकेसंग
केप्रभावतेअर्थीकोजनायाहीकोअन्य

१३२ संन्निधतै अर्थकौंजनायकहतहै याही
कोंओरुकीद्विगतै अर्थकौंजनायकहतहै
आगेयहसमैमानमतकर अली आपे
सावनमासवर अर्थसखीमाननीसोक
हतहै इहसमैमानकोमतिकरै सावनको
मासआयोहै ॥ हो वर्षाकालतोतेछोपि
यहसावनमेंवीजुरीचमकेगीमोरवोले
माननहीरहेगो यहकालकेप्रभावतेंआ
पीकौंजनायोकोनामकालवैमह ॥५॥ छप्पै
चेष्टाविपरीतिप्रअरुमिलनहिनेललचि
चितावनंवालजोरहै केजंभईमगमाह
गिरावनंकांकुनंगेहै पाननाथंथनरेसि
कंकहावनंयहप्रेडनयहटगोडदेसवसभै
वहींकंकुनभैहै पाननाथथनिसरनिके
कहावनआवनंपरसेगजहोंपरसेग
करओरुजहोंआवतप्रगटलजमुकलो
चगामीमुसेगजैहै सहजमुगावपट
॥२१॥ वानी सखीसखीप्रतिकहतहै नाय

132A क नायका की और मिलन के हित लाल
च सो देषत हुते नव नायका है कमलन
को जोर के मग मार्ग मे गिरावन भई ईहा
चेष्टा के प्रगटावन ते आपी को जनाना नहो को
ई क्रिया और सषी को समुझावन हो चेष्टा
के प्रगटावन ते आपी को जनाई हा कमल जो
र के मार्ग मे गेरदिये यह क्रिया यासो आप
नो मिलन जिनायो कि या मे हाथ जोर क
हत है जल जान पथ मे मिलाप कि या मे
पथ मे जानत हो अब मिलाप को सावकास
नही मे हाथ बांधके यह कहत हो ईहा चे
ष्टा है सक्ष आगे सषी नायका सो कहत है
प्राननाथ नायक अमैन रसक कहावत
है सो लोपै न ही आवैगो याको अर्थ स्वर
मे हसो आवैगो यह ध्वनि ईहा काकु के प्र
गटावन ते आपी को जना यह काकु वै सक्ष
आगे कोई कहत है यह पैडत गोड देसत
पडै के अब नाही आवत है अर्थ कि अब आ

१३२ 133 याईहै ईहांदेसकेप्रभावतेअर्थीकोजं
ना मोंइदेसकहेयहछत्रिनिकसीकिय
ड़ोपंडनहै याकेसमानइहांऔरकोई
नही यहदेसकेसह औजहांप्रसंगके
रके औरअर्थप्रगटआवनहै नहोंप्र
संगकेप्रभावतेअर्थीकोजनना कोईसर
रारनैनीचकोप्रधानकीयोहै यहवात
चलेपटेहैसोलीननीचगामीजलको
संगस्यागईहानेरोयानपघटजायगो
छत्रियहनीचकोप्रधानकियोसोसाघ
टजातहैयाकेसंगकोत्यागनोईजोग्यहै
यहप्रसंगकोउदाहर्न प्रश्न यहअसं
निधहीतें अर्थीकोजनाकोनहोय उत्तर
ईहांजाकोप्रसंगचल्योहैसोहाजरनही
है यातेप्रसंगहीतेअर्थीकोजनाहै असं
संनिधमेजाकोप्रसंगचल्योहैसोहाजर
नहीहै यातेप्रसंगहीतेअर्थीकोजनाहै
असंनिधमेजाकोसुनाईयनहैसोहा

133A औरहोतहैपदऔर अपअर्थरूपवरनतें
तीनरूपहैअर्थकेवाच्यलक्ष्यकरिव्यंग
यातेंत्रिविधसुव्यंजनाहोतंसवेपदव्यंग
१२२ वाचो अर्थकेतीनरूपहैवाच्यकरि
लक्ष्यकरव्यंगकर अविधाकोअर्थवाच्या
र्थकहावै लक्षनाकोलक्ष्यार्थकहावैव्यं
जनाकोव्यंगार्थकहावै व्यंगकहिये
औरयाऔरसोतीनप्रकारकीव्यंजनाजा
नीये अथवाच्यार्थव्यंजना पिछलो स
वैया कहितहीसषीवकहाकरीयेइस्या
रिईहोपरकोजोअर्थहैनाहीसोध्वनि
नई अथलक्ष्यार्थव्यंजनापिछलोरोह
मोहितपेचितरेप्यौरीइस्याहिरोहावोध
व्यंउराहनेको। इहाविपरीतलक्षनासों
केरध्वनिनई अथव्यंगार्थव्यंजनापि
छलोसोहा सवेकहेकरिसारकोइस्या
रिसोहावाच्यसेवैसषकोउराहनेइहां
प्रवीनगवारव्यंजनासोअर्थनिकस्योरा

हुवधूकेकुचअर्थयाकेंगार्थसोकेरथ
कैतिकसोविधालाकोअज्ञानतासोज्ञा
नीये दोहा अर्थशब्दकेआसरेशब्दअ
धारसुअर्थ एक होतकेजकजहोएक
सहायसमर्थ १२६ वार्ता अर्थशब्दके
आसरेरहतहै शब्दकोआधारअर्थहै
अर्थनहोकेजकहोयतहोंशब्दसहा
यकरें शब्दजहेंकेजकहोयतहें अर्थ
सहायकरे यामेप्रवीनशब्दसोसहाय
करयो अर्थको अर्थकेजकरयो आ
गेराहवेधकुचकीनपदशब्दकेजकहु
वो औरअर्थजितायो अज्ञानतोको
सोयाशब्दकोसहायकरयो तोअज्ञा
नशब्दरेनेसोध्वनिनहीहोतीजोराह
कोहायनहींतोकुचकाहेकोकीयपद
विधकोअज्ञानताध्वनि अपशब्दवर
नने दोहा अविधालक्षनाकेजनायोते
तीनप्रकार शब्दसुवाचकलक्षकर

अथ तात्पर्याख्यालंकार ॥ जो पदार्थ अन्वय है सस्त ताकै
तात्पर्य व्याख्या करत कहावै ॥

134A क्यों जु कहै बिरधार १६४ वाली जो पद के
अर्थ की अन्वय को समुझाय देय सो ता
तपर्य व्याख्या वृत्ति कहावत है अन्वय शि
लाप को नाम जैसे कसो नदी मे घोष
है हां घोष को अन्वय तीर सों है यह समझा
य यह तात्पर्य व्याख्या है नदी मे घोष
है नीको स्याव्वो है हां घोष को अर्थ शब्द के
नहीं है क्यों जु ना सो गायन को स्यान जा यो
तो को यी स्याव जो नहीं से नवै है हां लछ
ना सो घोष को वासो जानौ पे अविधावृत्त
सो नदी को अर्थ प्रवाह लछना सो तीर
क्यों जु ना सो सीनलतादि तात्पर्य
व्याख्या वृत्ति अन्वय मात्र समुझावै है तात्प
व्या र्य को जो अर्थ है सो तात्पर्यार्थ कहावै
जैसे ओरु वृत्तिनि के शब्द है तैसे या वृत्ति
को शब्द नहीं है यह क्यों जु ना के नजीक ही
है तो ते को उक्त विवाही मे गनी है इति
तात्पर्य व्याख्या वृत्ति १८ अथ वाच्य व्याख्या वृत्ति

स

१३५ ताकोलछन चौपई ऊपरसोतुपरतारण
135 हिरावे आक्षेपाख्यातातहसु ताके वाली
जोपरको अर्थकोऊपरसो रावरेपसो
आक्षेपाख्यानृग्निकहीये उसोहा रीतर
पालकृपालकहिकरनवेरगुनगान
तुवछुविदारीटरननहिअटलविहा
रीकारह वाली सखकोवचन हेकृष्ण हे
वतुमकोरीनरपालकहिकेऔकृपा
लकहकेवेरतुमारेगुनकोगावनहे
औतुमारी छविदारीनहीटरनहे अट
लहे किंवातुम अटलहो निश्चलहोई
हातुवछुवि सखिकेवचनिने सखिके
हरपनेनहीटरनहलनोअर्थऊपरसे
आपो यह आक्षेपाख्याहेलसई आक्षे
पाख्याहेलकोजोअर्थहेसो अक्षिपार्थ
कहावेअथआहारविषेसोयहीहेनहोत
हेकोईयाकोसोकेजनाहेतिहीसे ग्रेत
भेनकरतहे ॥ दोहा ॥ योसेहीअपरदूषन

135A

कोउ न होय उत्तर ईहां तुव छवि टेरी टेटर
तन छिपहु क्रिया नक्रि के नेनन को प्रति
केहरूप को धेच के सो वैहै पोलें आछे
छानू तन ही है होन पर दूषन न ही है ही
न पर से छे को अर्थ न ही आवै है यह भेद
इति व्यंजना वृत्ति इति श्री हरिचरनदास
कृते सभाप्रकासे षष्ठी उल्लासः ६ अथ
काव्ये १ मध्यमे काव्य
काव्य भेद वरनिबे सोरठा उत्तम मध्यम अ
२
धम पुनि भेद काव्य के तीन ईहां होत सब
नि भेद जे नें लिषियो सुने को ऐ परवीन १ वार्ता
ईहां काव्य में जे ध्वनि भेद होत है ते लि
षत हैं अथ उत्तम काव्य लछन जहां
वाच्य ते रहत है अधिक चमत्कृत व्यंग
ता ही सो ध्वनि कहत सो उत्तम काव्य स
व्यंग २ वार्ता रसव्यंग रचना के सहत
वाच्य कहियै अर्थ तो ते अधिक चमत्कृ
त व्यंग सो ध्वनि वही ध्वनि को नाम उत्त
म काव्य जो वाच्य ते अधिक अर्थ सो व्यंग ।

उत्तम काव्य
है है जहां वाच्य
सो मध्य कचम
कार त्रि करे ।।

स०

प्रसन्न
136 १३६ जो मन को रंजन करे सो ध्वनि अथ
छाया मैं
अंग उदाहरन विहारी मिलं परछाहे
चांदनी / हर राधा / शरीर
जोन्ह तोर हे दुहन के गात हरि राधाइ
क साथ ही चले गली मे जात ५ याते
गली मे जात ईहा ऊपर सो अर्थ आवै सो
अंग चमत्कार न होय चमत्कार होय सो
न ध्वनि दुर्जै को देषत जात है मन मे डर
त है इत्यादि मे चमत्कार नहीं याते अंग
पोस के महीने मे
अथ ध्वनि विहारी पोस मास सुन स
स्वामी / असवार होके
षिन सो साई चलन सवार गहकर वी
चतुर / नायकाने / (अलापो) / ग
न प्रवीन तीय राग्यो राग मल्हार ५ याते
वर्षा के काल ते जो भिन्न होय
पोस की वर्षा जाको निषिद्ध है अकाल
वृष्ट मे जात्रा नहीं कीजीये मल्हार गाये
वैशिष
वर्षा होयगी नायक नहीं जाइगो काल वै
ष्ट्य वैसिष्ट्य ते चमत्कृत अंग सो ध्वनि
जानीये जो व्यंजना है तिसो निकरे सो ध्व
नि चौपई व्यंजना नाहि निकारै सुर
एक काव्य को
र अंग सो ध्वनि उचारे दोहा काव्य एक ध्व

दूजो वाच्यअर्थ तो मुख्यहै पछौ व्यंगसो लक्षेप
136A विकहतहैगुनीभूतव्यंगहोय जेरसो
जा मैं व्यंगसो लक्षेप होय के हू काव्य रस होहै
वगुनीभूतककाव्यमध्यममेंहोय प
वानी एकेध्वनिकाव्यएकगुनीभूतव्यं
गसो मध्यमकाव्य याकेयात्र भेद मध्यम
के काव्यकैहैं सो हां भेदसोयध्वनिकेहैं के
अविधालक्षनामूल सुविवक्षितअवि
वक्षित वाच्य विवक्षित वाच्य
वाच्यक्रमकोलो वैहें
विक्षितरवाच्यक्रमहमनिमूल ६ वानी
विवक्षितवाच्यअविविक्षितकाव्यहै
क्रमहुनो सोपहिले अविविक्षितवाच्य
कहीयानेकहोयाकमयैमन्तिमूलप
हक्रमनहोपहलेअविविक्षितवाच्यक
हेंगे सोयध्वनिकहीहै शाब्दीआर्थीये
देकरेएकअविधामूल दूसरोलक्षना
मूल अविधामूलध्वनिविवक्षितवाच्य
कहावे लक्षनामूलध्वनिअविवक्षित
वाच्यकहावे लक्षनामूलपोरीहैं तो लक्षीकाट्य न्यायकरे
तेपहिलेलक्षनामूल लक्षन ध्वनि
मुख्य
अविवक्षितवाच्यहै अर्थांतरसंक्रमहजो

ग ललनामूलसुकहतहै मेरहोयक ताकेहै
त्रिलोग वानी अर्थ निकसा होयमेर
एक अर्थांतर संक्रमितवाच्य दूसरो
अत्यंततिरस्कृतवाच्य अर्थांतरसंक्र
मितवाच्य ललना अर्थ अनर्थ करमोत
कैं ओर अर्थ मे जाय ताहि अर्थ मिल
सार्थ ता अर्थांतर सुलषाय ॥ ८ उदाहर्न
महरीके उर सुरहर मन लेन लाल को वा
ले का है को नैकरनहे मान कपट को
जाल ॥ ए वानी न होय कछु अर्थ निरर्थ
क जानकर कै ओर अर्थ मे जाय मिले
तिसंओर अर्थ सो मिलके वाको सार्थ
ता होय न हो अर्थांतर संक्रमित इहो
सखी कहत है महरी के जो उर है सो ला
ल के मन को हरि लेत है महरी के
वैरन को मन को रोप को प्रसंग बहे
ध्वनि सो महरी वैरन सहन जो नैहे
इहा महरी को अर्थ निरर्थक मानके

ललनामूलध्व
निकोनामस्य वि
वक्षितवाच्यध्व
नि ।। ताके द्वै भे
अर्थांतर | अत्यंत
संक्रमित | तिरस्कृ
त | तवा
वाच्यध्व | च्यध्व
१ | २

137A

और अर्थ कौं न सौं तापका कौं तौ सौंपि
लकै साधै भयो यातें अर्थान्तरसंक्रमि
तवाच्यध्वनि सुगमरीत उपादान ल
छना प्रयोजनवती सो जो ध्वनि होत
है सो अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यध्वनि
कहावै याकै उदाहरन पिछै बहुत कर
आयै है अत्यंततिरस्कृतवाच्य ल.
और अर्थ तें अर्थान्तर मुख्य अर्थ वेकाम
अति सु तिरस्कृत वाच्य न है होत सु ध्व
नि कौ नाम (१०) वानी जहां और अर्थ तें
अर्थान्तर मुख्य अर्थ वेकाम अति सु ती
रस्कृत वाच्य न है होत ते ध्वनि कौ नाम
१० वानी जहां और अर्थ है सो अर्थ ता
प्रयोजन होय मुख्य अर्थ जो वाच्य अर्थ
सो जहां तिरस्कार होय तहां अत्यंततिरस्कृ
तवाच्यध्वनि उदाहरन दोहा केवन रग
सुरंग छवि लोचन चपल विसाल बा
लन वेली रूप लषि भयो लाल उर मा

स०
१३८
138

ल १० वार्ता सखीसखीवचन केवनस्वर्न
नवेली नवीन और सुगम लाल हार
भयो हिय लाल को हार होनो असे सब है
हार को मुख्य अनिकम्या है हार को अर्थ से
गमये को अर्थ रहत है जीनकी अधकला
ध्वनि है हो और अर्थ ही सो प्रयोजन है
याते अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ध्वनि लक्षणा
मरीजे प्रयोजनवती लक्षना सो
ध्वनि होय सो अत्यंत तिरस्कृत वाच्य
कहावे ताके उदाहरन पीछे बहुत कहे
इति लक्षनामूल ध्वनि अथ अभिधा मा
मूल ध्वनि विवक्षितवाच्य लं० सोहा
विवक्षितवाच्य है
विवक्षितान्यपरवाच्य है ध्वनि ये है अ जतं असंल क्रम है तनं अ सलतनं
१ २
विधा गावं असंलक्ष्क्रम संलक्ष्क्रम
असंलक्ष्क्रम
पहिले द्विविध गनाव ११ वार्ता जो वि
वक्षितान्यपर वाच्य ध्वनि है ताको तो अ
कहा असंख्यान अविधा है सो प्रथम है उ
कार की एक असंलक्ष्क्रम ताके सल

लक्रम जहां क्रम ने जान्यो जाय सो असं
लक्ष्यक्रम ध्वनि जहां क्रम जान्यो जाय
सो संलक्ष्यक्रम ध्वनि असंलक्ष्यक्रम ज (तीनतरहका)
हां रस ध्वनि भाव ध्वनि औ तिनके
आभास का रसाभास भावाभास औ
भावसांत भावसंधि भावसबलता
भावोदय इत्यादि में होत है विभाव इत्या
दि क्रम नहीं है तितावी सो ध्वनि होत है
क्रम जान्यो नहीं जात है याते असंल
क्ष्यक्रम ध्वनि भई प्रश्न विभादिकन तें
रस उपजत है सो यह तो क्रम ही है अक्र
म कैसे (उत्तर) जैसें रव क्रो है ते विभावादि
कन को तो जानत है और स निमेष
ही होत याते अक्रम प्रश्न जो ऐसें क
है तो रस की प्रतीत में विभावादिकन
की प्रतीत नांहीं होय (उत्तर) प्रतीत तो होत
है पै ध्यान करस की याई होत है छिन्न
भिन्न कर देत नहीं है याते असंलक्ष्यक्रम प्रश्न

जोप्रतीतहोतहै क्रमहीरसतो कोयोमे
तोज्ञायोकि विभावादिकनहीतेस्थाई
प्रगटतहै उत्तर प्रदीप घटकीन्याईए
कहीवार विभावादिकनकोओरस
कोप्रकासहोतहै याते अक्रमहीरसो
प्रश्न याहूलोतमेइतनीविषमताहै
दीपकतोसरूपमात्रहै औविभावादि
कज्ञानतेमात्रहै यहसमतानमिलीउ
त्तर विभावादिकजीसरूपकरकेअंगन
मेविद्यमानहोतहै प्रश्न यामेतोयहज्ञा
योप्रथमविभावनकेसंजोगतेफेरअ
नुभावनकेसंजोगतेफेरव्यभिचारीजे
हैतिनकेसंजोगतेस्थाईप्रगटतहैयह
क्रमहीहै उत्तर विभावादिकजद्यपिवि
द्यमानजीहोतहै तोऔरसप्रकासहै
केचित्रकोषेंचलेतहैऔआपसूक्ष्म
हैइनतेभिन्नहै केदिषाईनहीदेत
कालक्रमकोइहरूपकेतौवरनहीहै याते

139A रसध्वनि अक्रम हीहै अथ लक्षक्रम भे
द दोहा सबदसक्ति करि एक है अर्थसक्ति
करि दोय शब्द अर्थ दोऊन करि भेद ती
न दोहा १२ वार्ता एतीन भेद हैं एक श
ब्दसक्तिमूल ध्वनि दूजी अर्थसक्तिमू
ल तीजी उभयशक्तिमूल ध्वनि अथसं
लक्षक्रम भेद शब्दसक्त्युद्भव वर्नन दोहा
वस्तुरूप अलंकार ते शब्दसक्ति भव दोय
अलंकार ते भिन्न जे वस्तु ताहि को जोय
१३ वार्ता शब्दसक्त्युद्भव ध्वनि द्वै प्रकार
की वस्तुरूप अलंकाररूप दोय एक पद
ही ते एक अलंकार ते [illegible] अलंकार ते
भिन्न जो अर्थ निकरे ताको नाम वस्तु है॥
दोहा शब्दसक्ति ते व्यक्ति जो होत वस्तु मैं
लंकार शब्दध्वनि तहां जानो पद की नो
सुकवि विचार १४ वार्ता ए द्वै भेद हैं अ
थ शब्दसक्ति वस्तुरूप दोहा सेलगाव
[illegible]

स०

कथ ऊँ ऊंग्रान

१४० 140 होहरि विरथपयोधरसेन १५ वार्ता को
ऊर्द्धो पाछिक सो कहत है इहां पहार को
ना वहे सत्यासार सामग्री नहीं है ह्म
पहार की रहनवारी है विसेषचतुराई
नहीं है जो उपभोग चाहत हो ह्म सो श्री
सक्ति होय इत्यादि वस्तुरूप ध्वनि शब्द
सक्ति ते जानीये शब्दसक्ति जल सो हो
शब्द फेरके री जीये वाकी जो पर्याय
शब्द पर्याय ठिक रहे नहीं शब्दसक्ति जु कहि
यादवाती शब्द के फेरते शब्दपर्याय नठि
करे सो शब्दसक्ति मूल ध्वनि इहां जो
पयोधर को बोल्यो वारद घन इत्यादि श
ब्दरी जीये तो जो उपभोग चाहत हो तो
ह्म सो श्री सक्ति होय रहो यह ध्वनि इ
है सो नहीं ठिकरे औसे शब्दस सु
ब्दव को पर्याय शब्दसक्ति ते उद्भवउल
पत है जा ध्वनि की भाषा भूषन ऊधो
कुब्जा वस भयो निठुर न वहै निसान वा

140A

ती जाको गुन नहीं सो पर गुन में कहा
जाने इत्यादि रूप वस्तु के ग इहां हू वि
गुन की ओर चतुराई कहीं न होय तो ही
नहीं बने अथ पमा व्र सहित श्लेषलंकार
पण जाको कर सब दिसन में सो मल कर २३ औ किरन
द्विजराज ब्र औ चंद्रमा है द्विजराज रहे विष्णुपद में सुरचि सु भगवान के चर्ण औ आकाश
बहादर महाराज १२ वानी बहादर
नरेस के सो है जाको कर जो है दंड सो स
ब दिसा विषे है औ जिसे द्विजराज ब्रा
ह्मन सो याको पावन है औ विष्णुपद
जो है विष्णु के चरन तिन विषे जाको
भली रुच रहत है ऐसो राजा है इन
शब्दन कर सूर्य समजानीये सूर्ज के
किरन
सो है जाको कर जो है किरन सो दिसा
विषे है औ जिसे द्विजराज चंद्रमा सो
याको पावत है कि उ सूर्य मंडल ते चं
द्रमा प्रकास को पावत है औ विष्णुप
द जो है आकास ता विषे जाकी रुच को

सा०

१४१ 141 नरहतहै दिसाकर द्विजराज विधुपर
एशावसकमलहे दे दुग्रथकेहै इन
शावनकरलज्ञेसो ओगरपनसोउपमा
नोउपमेयनाकेग जोवरकीठोरकिर
नकहीये अणुवारेउ कहीये द्विजराज
कीठोरवाहीकहीये अथवावेदयाक
हाये विधुपरकीठोरहरकेवरनक
हाये अथवाआकाशकहीये सोराजा
सो ओमर्दीयसो समनारूपध्वनि जोइष्ट
हेसो नहीविकरे यातेरशावसकम
लहे इनते उपमालंकारकोंगनयो
सवैया हाटकपाटविचित्रवनावनेआ (सुवर्ण, सुंदर, छलकर)
नंगहेअरिवैरिनमानो गापन ओमेस (शत्रुनकेपकरत, वैर नहीकरत, गवैये, घररानीकोनाम)
छिपीनसुराषनधारनहैं कुलकान (इनसोंछीतरोरापत, लज्जा)
पिछानो वोधनसेर ओसानकुकोन (सेंहा, रतहैं, कु)
कपाट औगजकोविवहारहि पानो सोहरदे (सेन, निसा...लाउन वासीसोहरदे)
षेतुलाषेजहोहरिसाहिसुषेसजिहा (केवि, साहि, वारएत)
नमेजानो १० वानी दिसाहेहाटककपाट

141A

इन्द्रादि सब स्वरूप लहे । तिनते समर्था
तसाहसो औ साहस महाजन सो उपमासो
उपमेय पनो छोग पावत साहे । केसो है । हाट
कस्वर्न को जो है पाट से बासन ताको वचि
त्र सुन्दर रचना वत है । फेर के सो है (व्यान) भवन जो
है छलते तासो श्ररि सत्रुन को पकर लेहे
वैरिया ही लको नही मानत । फेर के सो
है गापन जो है गवे पां औ महिषी जे है व
ग मा तिन को भली प्रकार सो राषत है
औ कुल की कान को काल ज्या को धारत
है । फेर पान पा के सो है । शेर जो है सिंघ
तिन को बाधन है । औ रान जो ब्राह्मन को
दीजयत है तिन को चुकावत है । क्याद
न है । औ गन जो है हाथी तिन को जो वि
वहार है सो जिसने अपने ही कही यहि
रे से श्राप्यो है । फेर के सो है जाके लाष
मुहर देषे दिषाई देत है । औ सो पातसा मोहरलगा
है हिं ... के फिन के सबनन ते महाजन वरवाही

स॰ १४२
142

सोपानशांकोजानीये महाजननकेलोहै
हाटदुकान कपाटनकतेतिनको
सुदृढबनावतहैं फेरवेमहाजननकेस
हैव्याजकोचोरितजोहैकर्जतोकोप
रकेकाहूठकरकैगहतहैकालेतहै
फेरकैसेहैगापमजोहैगकोचोमहि
षीजोहैमेलतिनकोम्राक्षीनराराष
नहै फेरकुलकेहिपेसर्वमहाजननको तकही में जो का ता लेतहैं
नकोताषरीमेधारतहै फेरकैसेहैस
(वहै) रवाटनेंलवेकोतोकोबांधनेहै चोर
नेजोहै (महसूल) जगाततोकोचुकावतहैं चो
विवहारकेविषेगजेवस्तुनापवेकोतो
कोकथनहै ओस्वनजोहैजगाततो
कोचुकावतहै ओवि चानतहै फेर
कैसेहैंतिनकेपासमुलाषेमोहरहै
दृहाहूसबलसूतेउपमालेकारबेग
अपहारसविधअपर्णपाकिजलदान हो
हाहीनेहैपापीयकेरहै लोगकोअर्थ

ज
रावसमिकेवी
चजोप्रावदेप
उत्पावकाजोप
...काचीजोप्र
...मो...

...नकरसबेरी...

142A पीछा कैं जल सुजानी पे वरनन न सुक विसम
पी वानी पाव कौ पपीपा दिये ते मेगकौ चषी
ने जाय सो चषी स कुंजन के होये विहारी दो
[gloss: प्रलय करनवारे — मिल — मेघ]
हरा प्रलय करन बरषन लगे जुरि जल
[gloss: इन्द्र — अहंकार]
धर इक साथ सुरपति गर्व हर्यो हरषि गि
[gloss: कृष्णजी ने पर्वत धारन कर हाथ पै]
रधर गिरधर हाथ वानी वीर पाति नायक का
को इहां है सषी नायक कौ वीर गुन सराह
त है प्रलय नास कैं वा ध्रेग की चेष्टा जा
नी रहै प्रलय करवे कौ वरसवे लगे प्र
लय काल कौ मेह ऐसे स्यावरसे है सो
मेह जुरि कै मिल कै एक साथ ही बरसन
लगे प्रलय विना इहां मन हि वरसैं गय इह
ग्रय वेहां नहीं राषी तव गिरधर श्री कृष्ण
जिनो हरषि कै राजी ह्वै के रषि वीर कौ स्याई
है यासो वीर रस आयो गिर जो गोवर्धन ता
को हाथ पर धर के सुरपति इंद्र के गर्व को
हर्यो ईहां जो सब को फेर प्रलय की ठो
र मैना सं लिखे सुरपति की गे रषि ईद्र लि

स०

१४२ ऐसो पीव्रजकी रिहां ध्वनि निकरै पर
143 जानीये अवं अर्थशक्त्युद्भव ध्वनिके वा
रह भेद है तह अर्थ तीन प्रकार को है एक स्व
तःसंभवी अर्थ दूजो कवि प्रौढोक्ति सि
द्ध अर्थ तीजो कवि निबद्धवक्ता की प्रौढो
क्ति करि सिद्ध सोहा अर्थ शक्त्युद्भव होत है
बारह विधि ध्वनि मान वस्तु अलंकृत
चारि विधि स्वतःसंभवी जान २ वार्ता
स्वतःसंभवी ते वस्तु औ अलंकार चारि
वस्तु में है वस्तु की ध्वनि है
विध वस्तु सों वस्तु ध्वनि १ वस्तु सों अलं
कार ध्वनि २ अलंकार सों वस्तु ध्वनि
३ अलंकार सों अलंकार ध्वनि ४ ये चार
भेद स्वतःसंभवी के होत है सोहा कवि
प्रौढोक्ति सिद्ध हू तें ना के चार प्रकार कवि
न बद्ध ते चार ये बारह भेद उचारै वार्ता
या ही विध चार भेद कवि प्रौढोक्ति सिद्ध अ
र्थ में एक कवि न बद्ध वक्ता की प्रौढोक्ति में जा
नीये ये बारह भेद है अथ स्वतःसंभवी स

143A दोहा जगतप्रसिद्धजुअर्थतेउचितनअर्थ
कोगहिय ताहीअर्थहूकोकहतस्वतःसं
भवीजोय याते जगतप्रसिद्धअर्थकोस्व
तःसंभवीकहतहै अथस्वतःसंभवीव
स्तुसोंवस्तु ३ बिहारी दोहा प्रलयकर
नबरषनलगेजुरिजलधरइकसाथ
सुरपतिगरबहर्‍योहरषिगिरधरगिर
धरहाथ ॥२॥ याते इंद्रकोपराइवस्तुसों
ब्रजकीरक्षावस्तुव्यंग कोइकहै इहांका
व्यलिंगअलंकारहै वस्तुसोवस्तुकेसे
नहोयकहींपैअलंकारतोसबठौरहै इहां
ऐसोविचारैअलंकारसोध्वनिहैकिए
वअर्थसोध्वनिहैइहांशब्दअर्थसोध्व
निहै पुनः बिहारी दोहा सुरतनेहाल
रतनानकीउपमासोवंसुरवहराय हरी
रागबिगारमोबैरीबोलसुनाय ॥४॥ याते
सुरतनवइस्याकिस्वतःसंभवीवस्तुसोंना
[illegible] विरहकिनायकसोमिलाय

काव्यलिंगजब
नकुसोंअर्थ
समर्थ्यसुतेय

सं०
१४४
144

करवोइत्यादिवस्तुव्यंग पुनः बिहारी चीकने
दोहा वेंदी भाल के मैं भाल तंबोल मुख सीस सिल
सिले बार नैन दृग अंजन करमो रंजे षरी एही सह
जं सिंगार २५ वाली सखी ब वचन नायक
सों वेंदी भाल आदि वचनः संभवी वस्तु ए
तनांही सोतुमवेंसहोहुगे औरहि विसेष
सिंगार करेंतव कहा आने कहा होय इत्या
दि वस्तु व्यंग इहां जानें अलंकार सो व्यं
गनहीं पराधीन है सोव्यंग है अथ स्वतः
संभवी वस्तु सों अलंकार ३ दोहा मृप वें हैं
हार हैं रंतो हिलषं नवरसु सकलं जु हाव
है सब ही के सीस परते रा नैन जे बडो वै मान
२६ वाली उपमान उपमान इहां वमन
व्यतिरेक उ उपमान तें उपमे अधिकै दिव इत्यादि वस्तु नालोक लरयै सो केतनेनेन वै
है केतनेनेनहीन मेहैं ताको सर्वेन मैं है
~~ताको सर्वेन मैं है~~ पहें व्यतिरेकालंकार
व्यंग उपमान तें उपमेय में विसेष ता सों
व्यतिरेक ऐसे व्यंग सें वचनार्थ अर्थ के ले

ता

144A कारणाक्ता लेकार रसको वढावै सो अले
कार रसतो मुख्य रूप है ताको अलेका
र कैसो करवढावे कि जैसे सरीर विषै सो
रस वढै जैसे सरीर के जे विषय है तिन
सो रस वाढै है कि वा विषय रससो सरी
र वाढै है सषी वचन सौ अलेकार है
विहारी दोहा वेई चिरजीवी अमर नि
धरका फिरो कहाय छिन विछुरे जिन
की नहीपावस आवे सिराय २२ वानी
चिरजीवी आदि वस्तुसो निषेधाभास अ
लेकार योग निषेधाभास ध्वनि गन अ
लेकार अप्रस्वत:से रवी अलेकार सो
वस्तु उ. नीप ज्याकुल प्रियके विरह लहे
नेही बहु धीर पुनतन मनहरषत भई
लषि घनसरस सरीर २८ वानी तिय पि
यके विरह ने व्याकुल हुती फेर घन पे
घते सरस अधक है जो नायक को सरी
र तो कोरषा के हरषत भई है। स्वत:से

स०
१५५ भयौ ॥ अनुभयोत्र व्यतिरेकालंकार सौं वि
145 रह कौ नाम सूकूटै गोप्य है वस्तु व्यंग है ॥ विहा
री दोहा ॥ इप्यासे प्रगट कौर सौं प्रलितु
लाय के मूल ह्वै है फेर ब्रासन रितु ६ नजार
नैये कल ॥ २५ ॥ वानी ॥ इहां प्रमाणा अलंकार लेका
रे स्वतःसंभवी तौ सौं सनतुरसु व कौ सेय
ही लिहीन जान ह्वाडौ ये नै ॥ इहां तरि रूपव
स्तु व्यंग सुंदर सिंगार ३ ॥ सवैया ॥ सारो सु
वानं प ठावन कौ सव कौ ममि मोहि हीको
टेरपठेये पास गये पिजरा नके सुंदर रैको
कहो ततु कहि तुने ये मोर ये नारके वी
जीन के मेरे मानक मोतिन कौ मुखने ये पावत है
तीछन नैचौ चौ की चोट निते नैनन चौ पहि चित्त में है
ले तनं जैवै हिग जैये ॥ २० ॥ वानी ॥ इहां स्वतः
संभवी मात्रा ना कै अलंकार सौं परतु रूप
सं भोगकर होय ता को गोपन रूप वस्तु व्यं
ग ॥ जहां आपनौ सरूप छिपावै सो मात्रा
क्रि ॥ बिहारी दोहरा ॥ जिनदिनदेखेवेकुसु

मग इतु वीर विहार अवग्रै तिरही गुला
व के अपने निकट लीजे र २१ वाली इहां
स्वतः संभवी अर्थ क्रिसों जाको धन गयो
है सो अर्थ सो लसन तुहव कैगं ॥ अथ स्वतः सं
भवी अलंकार सो अलंकार उदाहरन दोहा
सत्रुवधू के अधर की तें तुमि टावत पीर
सेगर मैं निज अधर को चावन के रनधीर
२२ वाली सत्रु आपनी स्त्रीन के अधर चाव
न है तव तिन को पीरा होत न है तें अपनो
अधर चाव के सत्रुन को मार देत है फेर वे
अपनी स्त्रीन के अधर के स चावैं पाले उ
न की पीरा हटत न है उन के मरे पाछे यो
तें आपनो अधर चाव के सत्रुवधू के अध
र की पीरा मेटत न हो आपनो अधर चावन
कै सत्रुवधू की अधर की पीरा मेटत न हो य
हां विरोधाभास ॥ स्वतः संभवी जा ही सम्मै
अधर चावत न हो ना ही स मै पीर मेटत है
अधर चावनो कारन पीर मेटवो कारज

जग्रेजहां वि
वध सोपेवि
वध जहलोप

अतिसूपो ह्रिं मी क्रूपनहूं कारन कारज लंग

१४६ 146

सोसापहोहैयोतेषुकुमातिसयोक्रूके
गंरसिकधियासबैयादूरतेंरेषनकें
द्वैहैरीनंपताईहुतीलिषहींलिषचीठी
रेषमिल्योमनहोहैंमिलीमिलंषलवे
हूंकोंमिलीमनमीठीचेसमेंघोरच
लायहोकेशवकेसैंहूकान्हकुमाररे
टीठीद्वैहैंनवारसुरारिकेनारज्योंटूट
हैलालहमेंतुमईठी ॥ वार्ता ॥ इहांवे
नःसेमवीमनालकेनारज्योंहहांतष
लेकारंसोंकावलिंगवेगंचीनकोंनहो
टूटनोसमर्थनीयसोमनालकेनारसो
पुष्टकियोमनालकेनारषेंचेंसोवदेहै
विहारीदोहा चीनमैंहगंमीचनंप्रिया
पानपरससुषपायं जानपिछाननंभ्रजा
नेलोनेकनहोनजनाय ॥ वार्ता ॥ अ
जानसोमानोअजानहैस्वनःसेसवी
मनोवाचक उत्प्रेक्षा मैं होत है॥
उसेछोंसोपायोयोह्रियेगवियसंयोग
रूपहरूसाधनहै इतिचारमेदस्वतःसे

मि. ह कट कोपी सायवो पुर्ण ...

नवी॰ अथ कविप्रोक्तिसिद्ध ल॰ दोहा कवि
रचन
कल्पित जो अर्थ है नही उचित कर ज्ञान
कविप्रोढोक्तिसु सिद्ध तिहि वरनत सवंहु
ज्ञान रूप वानी जो जगत प्रसिद्ध अर्थ है
औ उचित अर्थ है सो व्यक्त॰ मे नवी॰ अर्थ है
और जो कवि कल्पित अर्थ है जगत प्रसि
द्ध नही औ उचित अर्थ नही सो कविप्रौ
ढोक्ति सिद्ध अर्थ कहिये अथ कविप्रोक्ति
सिद्ध वस्तु सो वस्तु उ॰ दोहा तिरछी चित देखना
अकास नखत के मन के पकरने
वन चुभन चित जु वसन गहन न सुवेन
वांधन के स जु देसगति लखि को लहे तु
चैन अर्थ वानी जु वजंन ज्ञवान पुरुष सु
देस सुर रंग गन वाल कौन है जो देखके चै
न पावे चितवन को चुभवो वचन की ग्रा
हकता मन की इत्यादि कविप्रोढोक्ति सि
द्ध वस्तु तो सो नायका सौं सखि लेहि न सुबच
ही इत्यादि वस्तु अंग कविप्रोढोक्ति मे क
वि को वचन होत है के वि निबद्ध मे कवि

स०
१५७ कोपयोधीनोपकनायकासखीइत्यादिको
147 वचनहोतहै यहीपैरंजानोपै विहारी
कविवचन सोरठा पावसकठनजुधीर
अबलाकोकेरसहिसके नेऊंधरतनधी
रंरस्त्रीजसमउप्यजै २६ वार्ता रस्किसी
बीजेहैसमझिनकोपेसेनिपुनसकसोधी
धीरनहींधरत पावसविषैपीडाकोकहे
रताकविप्राहोक्तिवस्तुतासोंधीरहरितु
नसोंवर्षामैकामकीअधिकाईलोगनको
अधककामपीडाइत्यादिवस्तुव्यंग विहा
री दोहा कविवचन किपोसवैजगको
मवसजीतेजिनेअजेय कुसमसरहेस
२६ रधनुषकरअगहनेनवरेय २७ वार्ता
अगहनकोअजेयकोंजीतनोइत्यादिक
विप्रोक्तिसिद्धवस्तुतासोंअगहनको
मकोसाधकहेअगहनविषेविसेषकाम
होतहै सर्वमाससोंअधिकइत्यादिवस्तुव्यं
ग अपकविप्राहोक्तिसिद्धवस्तुसोंअलंका

पूर्णिमासी को चंद   पृथ्वी

रउ-नाहर्न दोहा पूरनमासि मैहिकोकर
तु से तैरे नको पाप उज्जल नगको करन है
नेपनो जस इक माप २ वाली इकमाप
(रात्रि दिन)
रहै सु माप है के काहू सो मिल के नहीं क
रन चेइ जाकी माई ईहां कवि प्रोढोक्ति सि
द्ध जस को उज्जल करनो वस्तु तासौं वेद
मासो जस अधिक उत्तम यो कस्य तिरेका
लंकार बिहारी दोहा वैठरही अतिस
घनवन पैठ सदन (घर) तन (शरीर) माह देखु दुपह
री जेठ की छांहो चाहत छांह वाती छा
या अयैन स घनवन मे पैठ रही है दोय
पहर मे वाहरं छाया नहीं रहत सदन घ
र मे तन सरीर मे पैठ रही है दुपहरी जे
ठ की देष के छाया भी छायाको चाहत
है ईहां छायाको छायाकी चाह कवि प्रो
ढोक्ति वस्तु तासो काव्यार्थापत्ति (ताप) अल
कार योग छाया जड छाया चाहै है तो चे
तन की कहा वात है यह काव्यार्थापत्ति

काव्यार्थापत्ति की पो
के पद कसजात ... कौवात

स॰
१५८
8

पुनह बिहारी दोहा करो कुंवलनंजगंकु (कुवातं)
टललानजोनैनेरीनरिपाल दुषीहोइ
गेमरललहिपवसनुग्रिमेंगीलाल ५॰
वार्ता मनकोमरललनाकुटलिताकविक
लिनवस्तुतासोतुमारेलापकहेरेहै
तासैवसे दुषीहोहुगेईहोसमालंकार
छेनिजानीय अपणोदोक्रियालंकार
सोवस्तु॰ दोहा प्रोहधनुषहगवानसो
केशपासविस्तार नुवजनमनकोगह
तहेनगूसैनरुनीनार ५१ वार्ता नुग
जननपुरुषमनिनकोइनवाननसोमनग
हतहे प्रोहधनुषहस्यादिकविप्रोहोकि
रूपकालंकार तासोहजारजनननकरेसो
इनसोनवचे प्रोहनेत्रकीनेगसोवसहे
पहस्यादिवस्तुकोग पुनह॰ दोहा॰ का (कवि)
लंकनेकोप्रहकोमनोराग्योहोनरवार (स्वर्ण)
घरतेनिकस्योयजनकोविचहोलीनो
मार ५२ वार्ता मालकविकेनामकविप्रो

मालंकार
समझानी
एवपाजो
गकोसंग॥

145A होक्ति कारि कनककामनी सों तरवार रू
पकालेकार तासौ जो कोई कनककामि
नी सों आसक्ति होय ताकों वैराग नहीं हो
य इत्यादि वुत्युत्पेग विहारी दोहा वृज
वासनको उचितधनि सो धनरुचितनके
यसुचित नपायो सुवतई कहो कहाँ ते
होय ५२ वार्ता श्रीकृस्नको धनकहनो
कविप्रोढोक्ति कछुरचना सो वाल पाने
पायो याक्ति अलेकार कृस्न कस्यो वाही
को रा कलालिसनासों कह्यो वृजवासी
को उचितधन पानेपायो क्ति तासो जो
को धनरहे है सो न चित न रहे है किवारू
पकालेकार सो पह्चानिजानीये विहा
री उ. दोहा सांपकसम सायकनयन
रेगे त्रिविधिरंगगात झषो विलख डुरजा
लघजर तं जलले जानि लजात ४५ वार्ता दोहा
सायक इत्यादि कविप्रोढोक्ति व्यतिरेका
लेकार कहि नेत्रन कों सेरजो मोहनता

पर्यो योक्ति कालंकार सो कछूर चना सो वात॥

ग्रंथ ... नहायो

स०

१४९ 149

आदिवस्तुवोग जो नायकाकौतुक होयतो
कहि विविह कौतुहल ने जानौ पे अपमधि
प्रौढोक्ति सिद्ध अलंकार सो अलंकार उ-
कवित दुर्जन सो जौन अरु सज्जन सो
नौलुगुर देवनि सो प्रीति नो हसुजस है
पानीको धर्मनिको साधक अधर्मनिको
वाधक सुहरिको अराधक पै पोध सावधा ११३
नीको सेगरको सरकरै सारिरको दूरं सुम
गुननिको पूरमान मलै अभिमानीको है स.टी
सवे सम्पन व्यवहार रनरे सबलो न्यावे
सो नेरोजो विवेरोइधपानीको ४५ वानी
नोको हूपानन रवारको जसहे नरवार
वहार रकहावन है पाने सपीवेसको स
वन है सपीवेसी है इधपानीको विवेरो
है सकरन है औरपै नहीं होन औसोन
रोन्यावहे ज्वसात जोमिन्सो होयतौवो
ने विनारन है है संबन सावधानीको स
ऊ कविकल्पन रूपका सेओन्गे ...

149A

सारीकेनु महीं ग्रैसो सावधान इसरो
नहीं ग्रँच पालेकार वेग सावधानीको
समुझ उपति हु नहीं याने बिहारी दोहा
नाहनरा पावकझवलनु हैवसनचहु
पास मानहु बिरहवसंतकेग्रीषलेन
उसास ४६ वाली ग्रीषकोवर्नन पाव
कझगतोनेझवलजोरावर लुए जुडै
रातिलझवैमैनु विकहतहे नाहिनको
ग्रपीनहीहे चहुपास चहुग्रोरवसंतके
बिरहसो ग्रीषमेगरमउसास लीनीहे
इहामानोत उस्येताग्रलेकार कर ग्री
षजेठमे उसासकविकल्पितनासोग्र
नुष्ककीकहावतहे पहकावाफीपति
प्रसंग मै प्रसंग निकरे
ग्रलेकार किंवाप्रस्तुताकुर इति कवि
प्रोढोक्तिसिद्ध के चार भेद ग्रणकविनि
बद्धलक्षण० दोहा वक्ताग्रोताग्रारिज
तोकलोकविवजाप नोकिजहोप्रोढो
क्ति तह कवि नि बद्धसु कहाय॥८
॥ प्रथ

उपजे पहिरप
मान जहांको
हित आ नांव प
तो है ॥

स०
१५० 150 कविनिबद्धवक्ताकीप्रौढोक्तिकरिवस्तु
सोवस्तुउ॰ दोहा जावककुसलौंनुतपांक
योलेरेलागतनपांय वार्ता कविनिबद्ध
वक्ताकोइकोंमानेताकीप्रौढोक्तिंजावक
लगेहैताकेविषेतपस्यावस्तुतासोंच
रनकीतुलैयता अरिवस्तुव्यंगविह
री करीविरहव्यैसीतउसैलनछांड
ऐनक देषतहुं
तेनीचेदीनेहैं वसमाधिनकोहते
लहेंनमीवं ४८ वार्ता मध्यनायकाको
वचन आषननआगेवसमाधैनकरियेरे
षतहे तोप्रीनहींपावतऐसीविरह
नेकरीहे इहाविरहमेंकविनिबद्धसषी
उक्तिनायकसोमस्तुकेनैननमेंवसमा
कविकल्पितवस्तुतासोनायकाकीअ
तिक्षीनतायोंतुमवेगमिलौयोइस्यारि
वस्तुव्यंग पुनः बिहारी दोहा छालेप
१.३=
रिवेकेडरनिसकैनहाथछुवाय ऊऊ 327
कतुकीपेंगुलाबकेंझ्वांझेयलपाय
६

४९ वार्त्ता इहां कवि निबिड सखी जो है
कि गुलाब के ऊ वासों ऊ[illegible] वे वस्तु ते
सो नायका को सुकुमार ताव स्तु जोग
पुनः बिहारी दोहा कहि पठई जिय भाव
तौ पिय आवन की बात कली जोगन में
फिरै जोग न जोग समान ५० वार्त्ता इह
कवि निबिड कमसखी नायका को जो है कि जो
गन जोग समान वस्तु ता सो आने रसि
लन मनोरथ आरि थान पत्तक वि नि
बिड बकाको जो है कि [illegible]र वस्तु सो अलेका
र ऊ॰ दोहा को पत्त [illegible] उपदेस करले
है पारि मनाय वार्त्ता को पल [illegible] मालिं
दो ६ [illegible] सखी को उपदेस करिके मनाय लेहै भ्रमर
को किल अली को उपदेस करनो कवि नि
बिड बक्का को जो है कि वस्तु ता सो कोकि
ल में सखी को आरोप रूप कालि सपो क्ति
कि वा जोग विशेष जोग संबंध अतिसयोक्ति
है बिहारी दोहा पोसों [illegible] ल बलि चातुरी

मत्तसपोत रूप को जहां
[illegible] को तान ॥

सं०

१५। 151 लेनहिजानतनैव कहेरेतपरहरागट
हीउपज्योप्रसंगसेव पा वानी ईहोक
विनिवहुवक्राकीओटेकैकरियसेव
कोकहनोपहवस्तुतासोंपसेवविषेचु
गलकोआरोपरूपकातिसयोक्तिकि
वासेवेधातिसयोक्ति पुनः विहारी दोह
सहीरंगी लीरंनजगेजगींपगीसुष
चैनआलिसोहेसोहेकिपकहेहसोहे
चैननपरवानी ईहाहेकविनवहुवक्रा
कीओटकरनैननकोकहवोईहवस्तु
तोहानेननविषेचुगुलकोआरोप
रूपकासयोक्ति किंवाअसेवेधातिसयो
क्ति पुनः विहारी दोहा वेईगडुगाडेपरी दो० ए
उपट्योहारहियेन आज्योंमोरमतेग
मनमारगुलेलनमेन पर वानी ईहा
हेकविविवहुवक्राकीओटेकैकर सैन
गुरेसोमारेहेयहवस्तुतासोंमेनसैन
हाननकोआरोपमोनेरूपकातिसवोकि

151A अथ कवि निवधवक्रा की ओठो क्रिकर
अलेकार का रसो वस्तुउ दोहा विरह म
नोंन पमरन को पढुन तु कुंजन मोर घ
न सेवक जोहरक हन मान मेंन को चोर
५४ वार्ता इहां कवि निवद्ध वक्रा की ओ
क्रिकर मोर को विरह को पदि वोइ सादि
उप्रेक्षा लेकार सो कोमकी फोज आवे
दि है इस्यो वस्तु व्योग ग्राचीनु कुविल उरा
हर्न कुविल लेसो व्रषवोहन लगन उ
रसाहने सीले सो विधवाहन विराजत
विजेक्यो है [redacted] तेसे मकुटो के
वाट लेसोही दिये ललाट लेसोही विलो
लाल कवे को मन पे ज्यो है कहेनी लक व्यावे
तेसी नरुनाई छाई जोवन न पन सो पि
रत वैक्यो वैक्यो है छुटी लट माल पे
विराजे गोरे गाल पे सु मानो रूप माल पे
विपाल के वेठ्यो है ५५ वार्ता वषने

१५२ ननकी वाहन दृष्ट उरमे सोहत नवरंगकौ
152 सीलागत है विधवाहन मगनैन विजै
कोलाहमको हुयो विराजत है तैसोई
नके देष वेको पियाको मन पैसो है एव
सत्रपो है ऐसो वक्र नयो फिरत है अप
ने आपको ऐवके काम रोहके वैको है
रूपरूपी जो माल स्त्र है ताकी रषवारी
करत है औरु के लैवे को सामर्थ्य नही
इहाक विनमे धवक्रूर सषी ताकी डोहै
कैकरि उत्प्रेक्षा लंकार तामैं सवकी या
नायकास्वामी विना और सवौरु तिनही
इत्यादि वस्तु पुन प्राचीन कवित कुंज
गलीमे अचानकस्याम गह्यौ मन काम
कीवेल विचारे पीरी परी पिंडुरी पहरी पि त्रीयां
अंगुरी निसधार नलोचन धारे वारिकी
कुंभ ली पं बेर वनी वेलनी सी तो सी तिनकी उपमान
उवारे आवनहार पिया उरमे दरवारि

नौ
वैधौं म[blot] केसरवारे ५६ वानी पीरी है
गई नायका पीडुरी पहरी को पनलगी
नैनन मे जो जल की धारा है तिनको मे
गुरीनसो उधारत है का पो [illegible] तहे वरु
नी नैनन के वार तिन पे जल की बूंदै मो
तीन के सम है ३ रूमे दर मैं जो आवन
हार आवन वारो पिय है मेसर के वार न
को हारन को बंदनवारा वंधी है कवित्त
वध सषी सो सषी की उक्ति करि उसेता
रूपकालंकार करि मुग्धा नायका वर्नही
प्रीत नही है तऊ जोवन आये नायकऊ
रघर मै वसे गो आलमी उछाह को हेर
नारि छवि वति आछा सर्पन ३ सोहा
वानन पहु चे कान लो घरि पह लेगि
रजाह वानी कवित्त विवद्ध वक्र जाचक
को बोहे क्रि करि सयेनानि सपो क्री [illegible] झात्यंताति
लेकार सो है अपने पचकका न है जिन रूपेक से
परने आन च [illegible] वे को चाहे है सो पहले पूरव पर औ
मना ६

स०

१५२ इत्यापनीमसुजानेहै इत्यादिवस्तुव्योग

153 पुनः प्राप्तामेषन ३ दोहा तेरेमुषकी

जोरिकोतेरोईमुषआहि वाती तेरेमुष

कीजोरीकोकासामान्यको कविनिबध

सषीकोप्रोढोक्तिमत्वन्नपालेकारकरि

वेटूमाकमलतेरेमुषवरावरनहीइ

त्यादिवस्तुव्योग ष्पणकविनिबद्धवक्ता

अलंकार है कोप्रोढोक्तिकरिअलेकार ३ दोहा

नैनवानमेंजामुद्दग्रंमकुटीवेर्कमा

नं धानननसुधांनिकामहरिनांकेवसतु

वपान ५७ वाती नैनवान इत्यादिक

विनिवधवक्ताकोप्रोढोक्तिउपमालेका

रतासोंकाव्यलिंगअलेकारव्योगप्रा

नकोवसकरवोनैनवानइत्यादिसोंहो

तहै विहारीत ३ दोहा देषोजागनवैसी

कुंउतं गउरी चेसांकरलगीकपाटकिलदेआवत

जातिभजकोजानेविरुवादि ५८ वाती

दोहाकविनिवद्धवक्ताकोप्रोढोक्तिवि

153A भावनालेकारहै खुलेकपाटविना
आवनोकारनविनकारजउरेयाही
तेअसंभवालेकारहैपरदछवनि का
जीकेअतिम्हो मैकाजीहोतहोयनहो
असंभवअलेकार पुनविहारी तुरत
तुरतकैसेतुरतमुरतनैननतुरैजीव
डोडीहै गुनरावरेकहेकनौडीडीव पे
वानी ईहांकविविवधवक्ताकीछोहोकि
करिडोडीनेअनिकोकहनोसवैधांत
सयोक्तिकरिअनुमानालेकारहै वि
हारीसोहाकोनंगुनैकाचोकहौतुरत
विसारीनाहै वरावरीज्यो लेनहै राव
रावरराहि ६० वानी वरावरीएकपे
एकतुरतंआपकेजीपलेनहै वरा
कैसहैवरराहहैकुपणगामीहै ईहांक
विविधवक्तानायकानाकीछोहोकि
वारर जीवलेनहै वाररकोनामजी
वनहै जीवजनलकोसेनहै सोजी

१०

१५५ बोलतहै ऐसहीजी बोलेनेके विरोधी

154 किवाजीवनसे नेकेकार ननहीं ऐ

लेतहैयालेउपमविभावनालेकार

तासोंउत्प्रेक्षालेकार अंग मानोजमुहै

इत्यादि पुनः बिहारी दोहा पहविरोधी वेला

मलाहन्न नहिंपैरहकौनेकिरीपांवहेसोध पाहन किरीपा क्रियाभी

नावचढाये जिनकीनेपारपयोध ६१

वालीईहांकविनिवहवस्याकोईवैल

वसिध्यसोकहेहैवहुकर पांवहेमुह मुद्राप्रस्त

अलेकार जिनापढेजोगपत्रफैलाको तपरविशे

जिनावनोहेतासोंकाव्यलिंगकोगर्वि हेरेत्रिक सेताप ॥

वाविरहहनेकाजविभावनाजानीये

रसकप्रियाउ सवैया भालगुहीगुन

लालललटैलपटीलरमोतिनकीसु

धुरेनी ताहिविलोकतं आरसीलैक

रआरससोंइकसारसनेनी केसव

कान्हदुरेदेरसींपरसीउपमामतिने

अतिपैनी सूर्य मेंडलमेंसासिमंडल

154A ऐंधाधसी मनुनाहि त्रिवेनी ६२ वार्ता
ईहां तुमोता सेंकार सो अनुक्रम अले
कार योग अनसेके वर्नेनले पुनः वि
हारी दोहा उनको हित उनही बसें को
ऊकरो अनेक चिरत काकगोलकर नेत्रका डेला
योद्धह देरहे त्रिपराक ६३ वार्ता ईहांक
विविध दुखका की यो हो सके कदि ह होन
अलंकार तासो अनुक्रम विधा का म
लिंग योग इति अर्थ सत सुख के बार
हमेर अण ग्रकार्थ ग सुख को दु
दोहा सुदर रलसन सुवास सुन अर
नवरन सु विलासु जोर मेरे कुमलान
को लोचन ते रेवाले ६४ वार्ता जोर सों
मरे हृदय को कुमलानहे सुवास की दौ
र सुखनु विवासु गंध राखीये तो अर्थ
नहीं अवनै याने ण रसनकु औरसु दर
की दौर चार लसन की दौर सो हसनय
सन की दौर हा हराखीये तो जीनेनक

मूलसेपरध्वनिहोयसोतेअर्थसंक्र
रोकृनतेएकध्वनितिरिकृसीसोनेतुअप
मविमल द्दिपाव रा क्ति करिअर्थस
क्ति करिकमलसेक्येगर्भेसेजानोपे अ
पध्वनिमेरकोगननी रोहा ध्वनि
अविवक्षितवाच्याकेभेदहोयतंजान
अर्थांतरसंक्रमितहैअत्यंततिरस्कृ
तमान ध्वनी एहे भेदअविवक्षित
वाच्यध्वनिकेहैं॥ पुनःपरमेअरपुन
वाक्यमेहोतहैएचार कहेलक्षनामूल
केभेदवहेतिर चार वानी एईहै भेदप
दमेंहोतहैअरोवाक्यमेंहोतहै सोलक्ष
नामूलअविवक्षितवाच्यध्वनिकेए
चारभेदकहेहैं पुनः विवक्षितान्यपर
वाच्यहैअभिधामूलवषान अमेल
लक्ष्मभेदहैमललक्ष्मभ्रमान वानी
हूजोअभिधामूलविवक्षितान्यपरवा
च्यजोध्वनिहैताकेहू भेद अमेलल

155A

क्रमसेललक्ष्यक्रम ७ पुनः पदमे औरु
वाक्यमै औ पदको इकठे समघटना औ वर्न
प्रवेधमाहि पहिलीको इहवेस वानी
पहिली जो असंललक्ष्यक्रमयोग ध्वनि
है सो छहप्रकारकी है पदमे १ औ वाक्य
मे २ औ पदके एकठे समे ३ औ घटना
औ जगुन आदिकी रचना है तामे
४ औ वर्न माधुर्ज आदिके जितावने
हार तामे ५ औ प्रवेधमे ६ इसवीस
वाक्यको नाम प्रवेध है पांसे होन है पां
छहप्रकारकी असंललक्ष्यक्रम ध्वनि है
चारि पेरपि स्थूलजो डेरस पेरमपे
सोहा संललक्ष्यक्रम मेकहे शब्दसक्तिजे
मूल पदमै अरथ पुनं वाक्यमे चार होत
अनुकूल ७ वानी और अभिधामू
लविवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनिको सो
दूजो भेद है संललक्ष्यक्रम ताके द्वै भेद कहे
शब्दसक्तिले वस्तुयोग १ शब्दसक्ति

सं०
१५६ तेश्रलंकारजोगराईहै भेदपद मेहोत
156 है श्रोइरो वाक्यमेहोतहै याप्रकार वा
रि भेद भये रस पिछलेकहे सर्वमिल
के चौदह भेद भये पुनः श्रर्थ संकीर्ने
मूलहै सेलत्यक्रम माह ताके बारह
भेद है कवि जाने मन माह +वाती से ल
त्यक्रम ध्वनि के भेद मे जो श्रर्थ संकु
डुवधुनि है ताके बारह भेद है सो पद
मे भी होत है वाक्य मे भी होत है प्रबंध
मे भी होत है यो इनके छतीस भेद भये
श्रोरु उभयशक्तिमूलको एकहि भेद
है यो सो मिलसे तीस भेद भये चोर
ह पिछले सर्व मिलके इकावेना एकु
भेद भये पुनः इक्कावन सों गुनें जो
इक्कावनकोकोइ संसिनं मरसहंगहो २६०१
त है भेद एकु ध्वनि के जो ये वाली एजो ध्व
नि के इकावेना एकु भेद है इन सर्व को
जो इकावेना है सो मिलाय के प्यारे मा

सो पद१ वाक्य२ प्रबंध३ मैं छतीस भेद ह्वै होत ॥
उभयशक्ति जो मूल है एकै भेद उ होत ॥ +६॥
कहे भेद संख्या कि एक एक मधि कर१ चार ॥
सब भेद याके करे जाके ज्ञान उदार ॥

रेगुनेतवएकध्वनिकेद्रुकवेजाभेर
हैकैइतनीसंख्याध्वनीकोहोतहै
सप्तिएकनमस्तूप वेरीरसछहद
गहोय भ्रककीउलटीगनहे ५६०८
हैहजारछौसोएकभेरहोतहै पुनः
दोहा जैसेकरसेसूक्ष्मइकभेरएचार
वारहैसोसंसतिनमपुरसहइगकोगु
नेविचार वार्ता भ्रवतीन भेरसेकर
ध्वनिकेभोराकभेरसेसहध्वनिको
इनचारिभेरनसोंगुनकेसर्वध्वनो
केजेहै भेरनेचौगुनेकीजोपे नवद
तनीगननीहोतहै पुनः वेरकोमवि
धंमुखंबंसप्तिहोतगुनेयहफेर इक्षा
वनसोभनैसरवेरगगंनसहिहेर
वार्ता वेरचारकोमकीवेरी विधमु
षचारिषभ्रकासकीफेरचैरी सप्ति
एक१०५०५ दसहजारचारसोवा
रएतनेभेरहोतहै चौगुनेकीपेने
गानकास

केरइनसोसुवइकवेजाभेदजोडी
येलवृमेतपोचसरपोचवेदचारग
(सूत्र) गन~~[illegible]~~कमहिएकइतनेभेदहोतहै
१०४५५ दसहजारचारसोपचवेजा
भेदहोतहै दोहा मेगन्यसेलटेकम
हिरसभावध्वनिमाह जानतहेसम
सुकविवरभेसेनाहि ७६ वार्ता ध्व
पा सेलतेकमभेगजोध्वनिहैताकेवि
भेरसध्वनिहैयो भावध्वनिहै रसध्व
निमेंकटैसोरसध्वनि भावध्वनिमे
कटैसोभावध्वनि सोतलसमीरधीर
इत्यादिरसकेउदाहरनेसवरसध्वनि
जानीये भावध्वनिजहांभावनिरूपन
कीयोहै देवतादिमेरतजहांत्यादिहो
यनिरंग इत्यादिउदाहरनेसर्वभावनि
जानीये विहारी दोहा दुसहविरहदार
नदसारहोनच्योरउपाय जातजान
जियराबोयेविपकीबातसुनाय ११ वार्ता

157A

इहाँ बिनात्रास से चारी सषी के मन मै
त्रास भाव्या है यो ते भावध्वनि जहो उत्त
म रस निकृष्ट रस सें सो भेद होयगो
सो धीर रस ध्वनि ही है मध्यम काव्य नही
कोई सषी का काकु की कहानी उपचारी इ
त्यादि मे काकु की कथा मे हास रस निकृ
ष्ट तो सो उत्तम श्रृंगार रस प्रगट सो यो
ते रस ध्वनि मध्यम काव्य न ही यथा को
ई या को भी भाव ध्वनि ही कहत है ८
निषी हरिचरनदास कृत सभाप्रका
से उत्तम काव्य निरूपनो नाम प्रथम प्र
काश: १ अथ मध्यम काव्य लक्षने दो
मध्यम सो जहाँ वाच्य ते व्यंग चमत्कृत
ना ह व्यंग लसे जहाँ गौन व्यंग्य व प्रका
र लषा है १ वानी वाच्य मर्थ ने चमत्का
री व्यंग न होय जहाँ न होय मध्यम काव्य
गौन का अप्रधान व्यंग जहाँ लसत
है सो अष्टप्रकार को है दोहरा है ०

स०
१५८
158

हिलै इलतरंगं पुननाम अरु सुंदर फेरि
लै दिग्धनु लाउधौंन अरौ वाच्या सिध्यैग
सुहेरि॥२ अरु स्फुटकाक्काह्लिं पुन अरौर
अगरहं सुधार सोइ लतरंगं रसादिको
शृंगार रसादि विचार अथ इलतरंगक:
दोहा ललित अलिकं कहि छौंन अ
तिलोचन चार विसाल मन मुसक
पंसुलेन हो अवलर लोक सुवाल॥४
वाली जो मन को मुसकाय के लेत हु
ती इहां शृंगार अंग करुनारसनि
कुहू सो ध्वनि में है सो इअंगी जो रस
ध्वनि में निकरे सो अंगी उत्तम रस सो
निकृष्ट रसनि करै सो मध्यम काव्य
जहां उत्तम रसनि कृष्ट रस मैं सो नि
करै तहां उत्तम काव्य इलनो येर॥४॥
पुनः दोहा हसन वाल दीपत नरस
नविकसत नमनो अनारं हेरै मदन
को मन वरनं परे अौवने लौ॥५

मड

158A

वार्ता ईहां हासरस अंग वीभत्सरस वि
कृष्ण सो ध्वनि मैं सोई अंगी है याते ईहां
इतराग अंग जानीये बिहारी दोहरा
पलन पीक अंजन अधर धरे महावर
भाल आज मिले सु भली करी भले बने
हो लाल ६ वार्ता ईहां हास्यरस अंग
प्रधान शृंगार है याते रस ध्वनि जानीये
इतराग नहीं भयो क्यों ईहां न कृष्णरस
मैं सो उत्तम रस निकस्यो याते रस ध्वनि
मध्यम काव्य नहीं ६ अथ भाव के अंग र
स को उ. दोहा अंक भरे अनुनय करे रमै कुशानद
रमावे फाग औसो पिय पत जके करे रति
मासो राग ७ वार्ता अनुनय मनावनो
फाग की क्रीडा आप करत है तो सो करा
वत है ईहां संसार मिथ्या जान भगवान
की प्रतिमा सें मन लगायो है ईहां भंगा
र निर्वेद अंग जल हास्य भाव को अंग निर्वे

स०

१५९

159

दसोंगीहे ईहांइतरांगहे रसवतंग्र
लेकारभीजानीये रसभावकोपेग
नहोरसहोयसोरसवंत छेयस्वतंह
स्मादिकोउदाहर्नदीयेग्रपकवनहोय
श्रोयागंपकेमनमेंएकलेकारहेछ
निकेचेरनहीं ऋणएकुंदलवन छ
निनेनीकोवाच्यजहनाहएकुंदरजा
न ३ सोहा नवजोवनलेकामनीपिय
तनकामविलासप्ररनसखिमधुजौ
मिनीवाढेमिलेहुलास ८ वानी लेन
वजोवनहेपियकामवेष्टाहे प्ररनस
खिहे मधुचेत्रमासहे पामेमिलेतेग्रा
नेदवाढेगो केरिश्चेधेरीरागनमेमिले
गी तोछेसो-प्रानेदनहीहोयगो पिय
तनकामविलास केरकामचेष्टाहोय
गीनहीं प्रावीनदोहा इतिमुग्धमीन
तन्यासरेगउतनिपकुचचारे५ हीर

159A

जुगवरेजी जियेलोपेदिनदुलैसं ९ वार्ता
नायककोमुषनोजलसकेपीनतहूयेस्याम
रंगहोय उनतियकेकुचनकोआरसहोय
हीराकवि जुगवर श्रीजीजियेलोश्रीरादि
नदुलैसहे श्रोटज्योवनमेंगलितज्योवन
मेंयहसुषनही यहश्रेगयौलेवाचश्रर्ष
सुरर हे श्रेगचमत्कारीनही यौनेश्रसुंद
श्रेग श्रोटवडोज्योवनगलैमनमिथलज्यो
वन विहारी दोहा त्रापपहरपटउटेवि
योवेरीअसयरनाम दगचलायघरको
वलीविराकीयेषनस्याम १० वार्ता तुम
हमारेघरआवोगे इतिश्रसुंदर श्रपने
रिमलदन ध्वनिमेंजहोसरेहसोताहे
सेरिग्धप्रकार उदाहरन दोहा इतेसषी
गनहे लषिनउनआवनवलरोम देषक
होललचानदेरीजावहुमनेधाम १ वार्ता
इतिसषीदेषलहे उलवलमहआवनहे
ईहोसहेळमकिचहीआपनेधामकिंवा

स०
१६०
160
Pa

नायककेधामसखिंकाजिकुंजधाम कोई
कारनतेमेरोघरसूनोहै बिवानुमारोकिं
वानिकुंजधामपहुँचारोचाहीये प्रावी
न दोहा मानलस्योनहिमाननीपचिह्न
रोपहुवार नवहितज्योजब पियकसोर
कन्याकहैवार १२ वाली एककअवर देवार
कह्यो सोरकअवर हैवारकहाकसोहा
होकह्योमानमननकरैननकह्योओरि
प्रेसजानीये दोहा आगनवैठीचामनी
डीलमकोमनचोर नाहलिख्योललचा
यजवलियरेख्योनअओर १२ वाली जब
पियनेतियकीतरफरेख्योनवतियनेत
अओररेख्यो नअरेषेसून्यघरवनायोकि
वासूर्यहेयहवनायोसेरेह अणनुल्यप्र
धानलछन दोहा ताहनुल्यप्राधानपुर
कविगनकहतवनाय काव्यअंगजहराक
सेकवितामाहलखाय १५ अणउराहनं
दोहा अलोकियेतियकेनकोलीनोआय

160A

मनाय सका बिहारी कहत हैं सखि मै
सहे मिसे सो न सुहाय १५ वार्ता आप सु
नाय लियो उलो किया तुमारो जो आप
हन नहीं सहो जाय सो तो कलह सोत
न को सुहात है इनके घर में सुख न रहै
तो भलो जैसो भूपी सें सीधवे रहे १५ विहा
री दोहा चलत चलत लों ले चले सब
व सुख संग लगाय ग्रीषम वासर सिसि
र निस पिय मो पास बसाय १६ वार्ता
बडे दिन बडी रात ग्रीषम ई रितु बाच
न की ई है तुल्य प्रधान नहीं ई हां तो च
मत्कार है अवधपहली तो छोटी ला
गी अब विरह सो बडी भई अपवाद
सिधंगलं० दोहा अर्थ सिद्ध में घेग
ताध्व निजु लहेह हृदय वाचा सिधं
ग जु कहत है को विरह सुक विवनाय
१७ वार्ता अर्थ की सिद्ध में जहां ध्वनि ये
ग ना अंग ना स्रकोपा है सो उदाहरन दोहा

वाच्यार्थजी
है पध्वनि गं
गोल

स॰
१६१ करनप्रकासमुदिसनकोरहीजोनक्ष
161 त्रिजागहैप्रजापतेरोंरपतिकेरिवस
राकाग१० वार्ता दिसनकोप्रकासकर
तहेयसेतजोनजागरहीहेपरवाच्य
तेरोजसरवागीसमहेपरह्याकीसि
द्धकोकरतहे सावागीसमहेतोजो
जागरहीहेअतिप्रेवडोप्रतापहे क
विप्रिपाउ॰ दोहा वृषभवाहनी अंगगउ
रवासुकिलसतप्रवीन शिवसंगसो
हेसर्वदासिवाकरायप्रवीन १९ वार्ता
वृषभवाहनीइतशिवावखानीहेकि
वाप्रवीनरायहे शिवाकेसीहेशिवके
आधेअंगमेंरहतिहै पातेवृषभवैलसो
हेवाहनजाकोकाहेकोसवोधनरेकें
कविकहतहेहे अंगरदिगउरविषेवा
सुकिनागलसतुहेयोप्रवीनहेशी
वकेअंगमेंसर्वदासोवतहेरायप्रवी
नकेसीहेवृषभजोधर्मताकोलिये

161A

हैयेगविषेउरकहियेवहनुयाकेवाहु
किफलकीमालाहैफेरप्रवीनहैउन
प्रवीनाहैजोथै. वृषप्रवाहनीइत्यादि
वाक्यार्थ लोकीसिद्धकोछिवापरकरत
है छिवापार्वतीकेसमानहैपरयोग
पोतेवृषप्रवाहनीइत्यादिवाक्यार्थीसि
द्धकरी ईहांशिवानकहनेतोयोजायो
जातोछिवावाक्यासिद्धयोगजानीये १९
अस्फुटलछन दोहरा सोअस्फुटजो
प्रसा प्रसा
सुकविकोनीठनीठसुलषान दोहरा
प्रहग है स्वगते तप
हेप्रसिंग्पहिवसिंहहूहस्यालिजाल
२० वाली अस्फुटमेंकलिहलासोंयोग
जात्योजातहैपोतेमध्यमकाव्यहै तेज
वतरवारपकरेहैतववहुतुसत्रुकोसिं
हारकरेहैस्वर्गमेविवाहहोतहैसुगसो
सिंहकोहूहस्यतछूटेहैसिंहकेरहस्य
तियेवीवाहनहीहोतहैपरअस्फुट
हेपकूकेपातक हुलियोहैवनायके

सं०
१६२ इत्यादिकछुथोरोहय घोडकोसरन
162 लिषीछविनिसेनुमहय गीवहोपनुरस
कहाजानोइत्यादि २० अथकाकाछि
पलदन३ • दोहा छविनिकरेसुरये
रसोकाकाछिपलषाय पावसमेंनहि
अथहै कीनमररसिककहाय २१ वार्ता
रसककहाय नै आवेगोआवेगोनिषे
याषामूषन दोहा रसिकअपूरवहे
पियाबुरोकहेनहिकोय वार्ता बुरोकहे
है अथपायगलदने दोहा अगहय
रगटसुपुलनिकरेछविनिजिहठौर
मालमहावरलालहेग आपेचलेहु
ठोर २२ वार्ता अगहयपैप्रगटही छवि
होतहै परनारीपासले आपे छवि
जाहर विहारी दोहा पलनपीकछे
जनअधरधरे महावरमाल आजगि
लेहुमलीकरीचलेवनेहोलाल २३
२२ वार्ता परनायकापाससोआपेथ

हस्पर्श अपसेहेपतें आवो पेरलट
नउसाहर्न छप्पे जहां रसादिको अं-
ग रसादि हृतरोग सुकहोपन करन
गुविविधविलासहासडीनमनहिल
हियल ध्वनिनेनीकोवाध्यकहींगुरर
कहावन बेजननेनीवासंबरीवल
केजफिरावन ध्वनिमाहजहोसेरे
हसोवहसेदिध कविकुलकहन
ललचायनाहिरे घनगुजवनवका
मिनझेवर वहन २५ वार्ता जहांरस
आदिककोअंगरसआदिकहोय त
हांइनरोगअंग आरपरनेभावको
अंगजहो भावहोय तहांपीइनरोग
अंगनायकाकहनहे ज्योंडीनसहास
विलासकरनहुनेसोअवनहीपाय
न ईहाकरनारसकोअंगसिंगाररु
सहे करनारस ध्वनिमेसो ईस्रोगी
सै कामहिंगारहेसोअंगहै जोव

स०

१६२ हांध्वनिते वाच्यार्थनीकोहोय तहां
असुंदरसषीकहतहैं षंजनतेनीज्यो
वासहैसोषरीहैतुमचलोकेसीहैवह
कमलकोफिरावतहै केजफिरावतमे
ध्वनियह ज्योतुमनहींचलोगेतोवह
फिरजायगी सोयहवाच्यार्थसोध्वनि
सुंदरनहीं वाच्यउपमासयेनतुरहै
औजहांध्वनिवैसेलेसेहोययहध्वनिहै
कयहध्वनिहै नहांसेरिघमेग सषी
सषीवचन जबनायकनायकाकीन
रफनायकललनायकेदेषतहै नव
नायकाकेवरकोदेषतहै दोहा रोऊअ
केआसनहै अकासत्योहै तुमश्री
वोमेरेवरमेमिलायकोबाधकेकोपन
हो घरस्योहै अपवारिनहैअबहो
मतआवोयहसेरेहै ४६ पुनलदन
उदाहरन छप्पै वहेतुल्यइधाम्यवाव्य
अरहयोगतुल्यजह गौषादिनिमि

163A

सिसिर रागगौपियविदेसनह अस्पु
टधवनिहं अब्धाक्षि समर सुरवधउत्ता
हत काकुन औ है पीवं अधर अंजन
अगरटगत पुनवाच्यासिधोगनुअंग
ताअर्थसिद्धमेधोनिस्टहन लषवेरि
पाछिके धुंसपर अं सिनतेगनपद्धे
सत २५ वानी वाच्यार्थ औ कोगराज
होतुल्यहोय नहोतुल्यप्राधान्यवोग
गीषममे दिनवडो सिसरमें रातवडी
है हां अर्थ वोगरोतु सामान्य है याते
तुल्यप्राधान्यवोग औजहां ध्वनिके
वाच्यहोइ कोगु नहोय ताअस्पुटव्यं
ग समर विषे सुरवदृ अपकृष्ट राउत्ता
हत आनेर होत है कोगयह समर में
सुभटमारे जाहंगे तिनको हम वरहै
याते अपछरनिको आनेरयह अस्फुटजा
हरनहीं औ काकस्वर मेरपिपन औ है
...रमेरसो औ है आवेगे अधर मेजेन

सं॰
१६४ 164 अधरमेअंजनलगोहै पोलेओर
नायकापासतेआपेहोपोलेअगद
जोगजाहर है ओजनहोअर्पकीसिद्ध
मैछलनिजोगतापावैसोवाचासिद्ध
नयोगवैरीजेहैसत्रुतिनकेजेहैप
हेअरपकावेरपछुतिनकेछुसपर
कानासकरवैपरतेरोषडेगअस
नवजहै हेसनतुरन्मनपहेंड ईहोवै
रपछुकेछुसपर ईहोपरवनसेसत्रु
जानीपेपहछलि पानेअसनसेग
नपहेंडइयारिवाचाअर्पकीसिद्धकी
परवनसेवेरपनकोजोराजाषगसो
कारनहै याहीतेबडेगवजेसमहेरा
जाईइसमहे यहवाचासिद्धगयोग
ईहोजोअसनहेंडपरनकहहैतौभी
असनहेंडकोपनीतहोतौ असनहें [illegible]
डपरवाचासिद्धगयोग सोहा तुलो
जोगतोआरिसेतुपमायोगसहोते

164A

गुनीभूतसोव्यंगहैकवितिकियेउपो
न २६ वार्ता तुल्यजोगतात्रादिनेअ
लंकारहैतिनमेंउपमाव्यंगसोंहोतहै
नहोउत्तमकाव्य औजहांउपमाव्यंगसो
नहींहै कवननेउहांउपमाकोप्रकास
कीयोहैनहोउपमाकेप्रकासकीयेतेगु
नीभूतव्यंगहोतहै याहीतेउपमासो
काव्यसुद्धनहीदीपकादिकसोंहै सोई
दोहामेंकहतहैं दोहा दीपकादिकहिं
नहो [उत्तम] ललितकाव्यसोहोय उपमासोल
लितनहिंकसोसुकविमतिजोय
२७ वार्ता दीपकादिअलंकारिकेकाव्य
सुद्धहोतहै उपमासोंसुद्धनहीं यथा
मघन दोहा गजमदसोंनपतेजसों
सोभालहतअपार वार्ता गजमदसों
राजाकीउपमाव्यंगहोतहै नवहिं
दीपकहीसोकाव्यकोलालितहै उप
मातेनहीं उपमातियेगुनीभूतके

स०
१६५ ग होय सो है अर्थक्लिष्ट सो चारुता छै
165 पी करे परगास गुनी अस सो ऊगके
कविता होत निवास २८ वाती का
व्य कौ जो चारुता सुंदरता है छिपी हुई
ता को अर्थ सो किं वा एव सो प्रकास क
रे तहाँ गुनी भूत व्यंग होय सो हा
सार्थ
थ्यान मित्र मुष देषके करि पीछे गह
काम पहल लेष की बात सुन च हो गया
पने धाम २९ वाती मित्र सर्थ मित्र प्रीत
वैरे मं सलेष न कहत ते लो गी नायक को अर्थ
जान पर लोप का साकि एमध्यम काव्य
भयो सो हरा तिरन यम ध्यम काव्य को
लक्षण सु कवि सहु लास १ रोस भाष
का समे यह स्य उभयत्र उल्लास ३० इति
श्री हरिचरनदास कृते सभा प्रकासे
मध्यमकाव्य वर्ननं नाम सप्तमोल्लासः
८ अथ अधमकाव्यलक्षण सोहा
अथ जे काव्य मे व्यंग की रहे न ही जि
A

165A हवाह शब्दैचित्रपुनकहतहैवाकेचि
त्रमुसराह वाली अंगकोअपेहानहो
यकछुअंगतोहोय ताकेहैअेरएकश
ब्दचित्रहूजोअरण्यचित्र अथशब्दचि
त्र सोहा हरमुकुंदकेपुरकोहूरकरैमु
गहर अंगमुदंगतरंगगंजुतगंगकरो
दुखदूर अवाली जाकेअंगकोमुदंग
कामलोदंगहेतरंगोकेसंजुगतऐसी
जोगंगाजीसोमेरेदुखकोहूरकरोकेसी
गंगाजीहे जोअपनीसेवकलाकरकेइ
ष्टदेरमाकोओकपुरकोओोकुंदकली
नकोजोहेगरूरगर्वसोहूरकरतहै
ईहाडेवरतनावध्वनिपीतिकरहे
तकूकविकीडीलग्रनुप्रासहीकीरच
नामेहेयांतग्रधम याहीतेयामेध्वनि
कीचाहनहीरहे अथअर्थचित्र सोहा
मतिमुकताकोहारहेसेषवालमिहै
पाति सोहतनविमुसनीरसोरतनो

स० १६६ कररसपाति र्द्ववारी रतनाकर जो है
166 समुद्र सो विष्णु के सरीर सो सोभत है वि
ष्णु को सरीर के सो है मन ओ मुक्ता सो ती
इन को हार है जामें ओ सब को वास है
जिस के पान हाथ में ओर सब प्रमता की
षान है समुद्र के सो है मन ओ मीतीन को
जामे हार सम्ह है ओ तेष जे है तिन को
वास जिस के पान कहीये पानी में है ओ
रस जो है जलता की षान है र्द्वाचर्षी वि
त्रे है जाहि र रसन है ही उपमा शब्द की स
मता सो है अर्थ की समता सो नहीं क
वित मधुर विहारयो में सजीव पने के
व लव सरेषा में न केवल सनो ही को वि
चारसों हरि कवि अपनी धरन मार सै
नन सो वारि लके नोही रेषा सेन मैन
के मार सों आसमा न ही में गानि ज लेर प्रेथ
विहारी के नो धारी है जल ले रग नि ले ही
तव मार सों सुनर कहा लों तेरी की जी

कजावा

ऐसराहि चलेतौहीसोजहाजकेन
हाजपरवारसो ५ वालीकोऊलुनर
कोलुनिकरहे ऐसेघरघहारहेष्यो
है ऐजीवकेसहलनिहारसोहे ऋौनके
लवसनिहारसो ऋषकेलकेवसनही
ऋसोपर्वतसेहेष्यो ऋोरतोकोमोऐस
जीवऋौनकेलवसरेष्योनकेलनाक
सेजोहोसहैतोकोनाय सोऐतोहीको
विचारपोलेहीसजीवघरहेनकेलव
सकेतोपृथ्वीसेननकोजनकेयारको
धारनहे केतोकोकोजनकेयारसोवो
झलहेष्योहे फोजनकोसर्वभारउठाव
तहे केतोजलरगन ऋासमानसेबरह
रीहे जलरपेधनकोगनवालवाऋाषि
केतेनेईजलरगनधारीहेसरीरजोसा
रहेतेरोनिससोजलरसोघुगनवाल
केतोजहाजतेरईसोंचलतहेकेसमुद्र
मेजहाजचलतहे जहाजकेजावाजो

स० १६७
167
6

उत्कृष्टपेहोतहै औजहांजनहांज इहां
हे अपी चित्रचित्रहै याते अधमकाव्य
कोई चित्रकाव्यकेमेरमेअनर्गलकरे
हेजोरसमयकाव्यकोकाव्यमानेहै
रसमयजोकाव्यहैसोईकाव्यहै सोहा
केजछत्ररथबंधपुनमात्रगतादिक
ज्ञान चित्रकाव्यकविलानकोफँदासो
पहचान पवानो कमलबंध छत्रबंध
रथबंधमात्रागतइत्यादिचित्रकाव्यक
वितांकेफंदाहै आगेअलंकारोंमेचि
त्रकाव्यकछुकहेंगे सोहा रचनाजोक
विवचनकीकाव्यताहविरधार औरे
सहेपुनहोतहैकाव्यसुकविसुविचार
वालेकविकेवचनकीरचनाकोकाव्य
कहतहै यहभीकाव्यकोलक्षनहै सो
रसयुतजोकाव्यकहीयेसोऔरसका
व्यनहीकहावे औरसभीकाव्यहोत
हेजोपेकछुरसनहीतिकरैचौलेभी

कवि वाङ्: निर्मिति काव्य

167A काव्यकहावतहै नीरसकाव्यको उदा
हर्न कविकी सीलो दोहा श्री विश्वेश्वर
वेलमें रामनते हरिनाम (नदी) नवापारस
रवारमें श्वपचजन (तानु) वहि पाराम १ वार्ता
रस्वारके देसविषे नवापार नामा ग्राम
है ताके निकट ही वहीया नामा जो ग्रा
म है सोइ ग्रामारो श्वपचजन है पवित्र
कोवासमो श्वपचजन कहावे कवी की
नवी शिलतहै दोहा है चिरा विछुपरास
हरजहा नार निसरकार कोमहल्लकउ
नरवसे छपराने (शहर) लेबार २ वार्ता सार
नसरकार परगनानामे चिरानछप
राकोई सहर हे छपराने उत्तरकी तर्फ
कोस लेबार ग्राम वसत है दोहा श्री
सुकदेव नमैनहा वैश्णवानगुनषान
कौ हरि कवि मानुलवहै वहे सुविषारान
२ वार्ता श्री सुकदेवको पुत्र वैश्णवनसो
हर्षित ... मानलनामा वहेविषा.

र०
१६८ कोरुनीहै सोहा आधकोस लेआरते
168 ग्रामचैनगुरुचारु परगन्नागोवान्हो
हरिकविचार १० वार्ता रईहोंरसको
वाहवि ईनही निरसकाव्यकहावेहै पोतरस
वलकाव्यकोलछननहीं इत्यिथोर
विचरननरासकुनेसमातकालेच्छ
धसकाव्यवरननोनाम नवमो प्रसेख्वा
स: ९ अथगुनवरननचे सोहा जोरस
कीउत्कर्षतारचनासोंगुन सोय जो
पांडित्यता
वमाहस्योस्रता विस्तारि सोहोय
१वार्ता अछरकीरचनासों जोरसकी
उत्कर्षतासो हिगुनकहावे उत्कर्षता
दृष्टता विग्यताचातुर्जता १अथमा
धुर्जलछन सोहा कसोमलगिहैव
कोमल
नेजहरहेतेनुसानुस्वार विनटवर्ग
रैषलघुजहोसोमाधुर्ज उदार २ वार्ता
ककारतेलेकेमकारपर्यंत सर्वअछ
रलघुहोवे औअनुस्वारसहृस्वहोवे

168A

टवर्गजामेंनहोवे रकारश्रोषकारलघु
होवे सो माधुर्जगुन उसाहरनं दोहा क
रि मेंजनप्रेजनदियेषेजनगेजनमेंन
वानी इहांअनुस्वारलहनवरनहै टव
र्गनहीहै करिमेंरफलघुहै षेजनमेंष
कारलघुहै याप्रोजगुनललहन दोहा
संजोगीअक्षरजहांरहेसुवेगोसमास
रेफबहुतनपुनि टवर्गसंयगुरसो ओज
विलास २ वानी रेफरकारकोनाम ट
वर्गतेअरिलेके जारीअक्षरहोय शका
रश्रोषकारसंयोगुरज्यामारीहोय सोओ
जगुन दोहा लुपट व डूं घनघटसमक
कैसमर्दनमेंन वानी लुपटनोहै सर
मैतिनकेजुहैवा टकेसघनोकीघटाके
समान घेरकेसवररकसकरडेसोअनु
नकीसे..कोमर्दनहैजामलतहै इहां
संजोगीअक्षरहै वह घदमैं होहासोंप्र
...सौवडोहै कर्कसमर्दनपोमे

१६९ 169

रपकोजोगहै औपकारआदिमारीहर
हैपोनेओजगुन आपउसारगुन सं
ोहा होनसुनेतेशब्दकीजाहिरअ
प्रतीत सबगुनमेजोरहतहै सोउसा
रपहरीन ६ कवित चाहिनेरहत
मेस्त्रीपालिंगोरदेषबेकीराजसिंहन
रकोकरनजोबषानहै छुटजानिके
रमेकपाटनेकोनाह छुतमागकोउ
स्यमालहै षलजहानहै एकबारजा
वैनोकहा हुरनेरसपालसोईनरदेतरव
न.कोउमानहै राघवर सायनकोसाथ
कुतुवायनकोपारसकोजानेवहुकोर
समानहै ५ कानी राजसिंघपिताको
नामलाकोउतवहारर सिंह राजाकसे
कोकपाटकिवारसोछूटजानेकोअर्थ
सुलजातहै औमालविषमा कोउरै
नहानदेषतहै जोनरएक.बा कर
सिंहराजापासजातहै सोई

...: ग्वादिकजानै
...लवादिकमवदनवधानै
...गुरुन्ते ... लघ्वादिकल
घुअंतलहि स... दिकलघ्वंतअं
लघ्वादिकगुरु... र ...भिन्न
...सव आदिअंतगुरुहसुजान
...विचारि उरवदै समाउतकहु ॥

169A

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४	२३३
...कादि	०	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
लघ्वादि	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४
गुर्वंत	०	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
लघ्वंत	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४
गुर्वादि अंत	०	१	०	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४
लघ्वादिअंत	१	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
गुर्वादिलघ्व	०	०	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५
लघ्वादिगुर्व	०	०	१	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५

इतिदलपतिमर्कटी अथ मात्रापाताल

1	२	३	४	५	६			
१	२	३	५	८	१३	[illegible]		
१	४	६	१०	४०	१[illegible]	१४[illegible]		
१	२	५	१०	२०	३८	[illegible]		
०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	गुरु
१	३	२	११	३०	[illegible]	१०६	२०१	लघु

170

अथ दस पंक्ति मात्रा मर्कटीय प

मपंक्ति रेका दि द्वितिय मे सूची ग

य वि दु इकरा क पूर्व पुगव कुरि जिस

चौथी पे गत राक राक पुनि पूर्व जुगल

रि पंच इति तीय समान करी चौथी के

सम करि सतई दि बिंदु उक बिंदु पुनि इ

कयु कुरै परव पुगल अठ इ हि राक इक

राक अरु पूर्व पुगल रै वृद्धि कालि। सून्य

सुन्य इकरा क व कुरि पूरव युगल के नव

मी दसमी करे म ते म कं री जिसे के गुरि

गेषमोंकरउसरामुचडीत १३ वाली
विकसीघोटेकर्मे इसमेरेगेषमोंषीत
करो १४ होरू बेरंईङुगजें बेगविर
संवतसरकेविचारे सावनपुरुखैसो
हसीरहोगेषसविचार १५ वाली बेर
चार हेहुइक गजपठ भेषइक संवत
१८१४ केविषुऊवार सविचार विचा
रकेसहत इतिश्रीहरिचरनदासकी
कृतेसभाप्रकाशेस्वप्नोल्लासः १०
संवतु १९१२ मितिकार्तीकवदी ३ अमी
शनिश्चरवारसमाप्ते शुभंभू

290

290

स°

२२१ इसी
रइकोग्यानहरैसत्रुनकोमानहरैबिरर
कुमारहै ॥ वार्ता परमेसरकेछेसको
किवाकह्योहैवेसकोनरनसर्थ वितर
नराचीयोमेजाकी करनराजानामउ
पमाहै मानोपुन्यकोमरपदै कौरही
रसंवेह पारावारसमुद्र जैसेसिंहहो
चीकेज्ञानहरनहै वैसोराजासत्रुविको
मानगर्वहरनहै यहबिररकुमारको
है ॥ दोहा वहीविरघनिंकुसकानंव
हवैसोकृपानिधान राधाग्रचलविहा
रिकोवसोहियेवहध्यान १२ वार्ता श्री
राधाजीकेसेगजोग्रचलविहारीकृस्न
हैतिनकोध्यानमेरेमनमेंवसो वैसो
ध्यान वहीविरघनसौंवहीकुसकान
सौंवैसोईकृपाकोनिधानजैसोविहार
सेहै १२ दोहा दूरकरनकुविकलैगति
मनरपालकुसंगीन राधाहरिमुदे

अनी औ कृपानी चेरवानी सावधानी है
८ वार्ता चितानचे सेना दोहा ननसंक्रा
न सुक्रम जहां न न पसिद्ध मेजान अनुस
ता पीसु है न हों अनु सर्व के हिय मान ९
वार्ता पीछे लानी नक वितकर आकुम
भी जानी ये चोथा कवित की चोपी नुकमे
तीन तरह के ननको उत्साह है दोहा थे
सेनाल तनपति में जो उड विचसंसिघो
त नृप व्हार र को सुजस उत्साह है गुन
होत १० वार्ता उडतारे पोनप्रकास यो
में भी प्रकार गुन जानी ये कवित वेसंप
रसे सको फैर निवितर विमाहि उपमाक
रत की सु होत निरधार है विघावा नगु
न वान कार जेमें सावधान नृपति वहार
र को पुन्य अवतार है सुजस सचार तिज को
धर्म को समाचार कौ रहार को सिंगार औ सु
[illegible] चार है कोप कर के हर मोह

कोदेवनतेकौ प्रमानदेतहै सर्वकल्या
णकरहेतहै रसायनकेजेसाधुहुये
उपायहैतिनकोनहीराषत कारनक
रसौसमगोहेकीकरीहमसमनेस
वरोभर कवित छलवलजाकेआगे
दुर्जनकोरविजातनेजसमल्लेजा
कोराजनहिनेसको धुन्यनीतपापिके
उपायकोपायअवनीकोदुष्टनकोमारि
केउतारयोजारिसको भारीराजवारे
मेपवाहतहै औरजाहिप्रजनकोपाल
करहेनासबकलेसको कानसिंघनाहि
जैसेलीजीयेगनेसनोमनेहुंघकोजेनाम
सोंवहादरनरेसको ६ वातो समसरे
वरोवर उपायोउवायो बडेराजाजाकी
औरसहायचाहतहै ६ कवित आयुध
विवधमानेजेहुकोउछाहजाहेजुमेद
[illegible]रिविकीधरनिबल्लिचालकी सिल
[illegible]हिरोमहलनाहर जिनहरकरी

हौसननकसूरनरपालकी सेगरमेके
ल्लिके सिंघारे है पिसनके मारे बिन
मरेलहिंधावकरपालकी मएनवहा
रलिहारीसेनारेहधरेजमकीजमा
लकरामानकियेपालकी १ बाली
अनेकसमुनिको अोजुधकोउछाहउ
स्साहहैजिसको पथ्वीपैचलचाल
हलाचलीकीकरीहै मिलहासिलेषा
नेकरिकेधरनहे करूरघोटेराजाकी
तरवारकीधोकको पायके कासुन
केमारेबिनमरगये १ कबित सन
ननमानककिलोयेहुजनेरनिको चहे
धोरकीरनबिलानसमनानीहै लोनो
करिबेकोरनकेनकोचलनमनछाड
केगरूरहूरमाजेयथिमानीहै वैरी
हियेमालनबहांदरबेरे सबलोगैले
जगमाहितेरीसुजसकहानीहै मैसे
रूपरानीनैमीरानैन

क०४५ विलासकेहावनहैनसैनेसुबंधेवानो
लेवनावै मागधरीनेलाहै नेनमोसुजहा
नेविराजसैनजनावै मिन्नमोतनाहिमिलो
चवखोपुनचकचकोहरिगेहचलावेसोक
रनोकीलोगयहपामितिनाहिसकोचवके
मनीत्र्यावे ४८ कानीकोकष्णसूकोविला
सकोवेहावैहै छोडेतेविकवानाकोवि
लासकोदेहावैकोभ्रौउठावैहै दूरकरे
है नरुनकुचाप्रोनेलनेहलुनिकोसुष
देहै भ्रमरवेलोअवरअकासकोनीसे
वसंवनहै ओतरानीकानीलेवसकोप
हरनहै ओभ्रगकीछवीसोजनविराजे
जहंगनहै मिलेहेपहेरवी ओजागरी
ननोहि ओपहिहजारजननकोरनोओर
हौ रहैनहिपावे महिमानी ओजहाले
विराजनहै सोमनहै तीनहाओ नामप
नहीरोननहै सेनहिमाननको

य [illegible] हनेहाराषतहै दीपकके पछे
[illegible] रिगुरनाके अर्थके लिये लघुकी
मे [illegible] किके समविकीने सुक[illegible]हेतुरर
जो [illegible] मगीनातादीपककोहितवही
है [illegible] गोदिखावहीचरने औरसलिग
[illegible] किगुरुहमधुरदे औमेसनलसो
[illegible] सहे हैं [illegible] धनसे लनके क
रहाथचारीविचरनहै कादीलनचाह
नहे औधनद्रस्त्रीकेहाथविचरनहै दृष्टी
हाथमेलकेचलरहे [illegible]नेयाकवी
[illegible]रकुलदीपकहै [illegible]नारेकुलमेदीप
[illegible]कीनरहलोई है या [illegible]
[illegible]हीलाताविधानहै [illegible]पटने जो
कुलदीपकसेकवीनेतिनकी [illegible]मेपर
दीनविचारी [illegible] दीपकउपमा [illegible]
नवउ [illegible] [illegible]
[illegible]

149A

गे । कोउ तीव शब्द दिगाजै पै । लटहै । पै । तु
रहै । प्रनीकं । पे । गनाकें । पढ़ै । पे । पै । श्रु तुम
न सो । नहीं । प्रावैगो । कोउ नाहैं । जि नावैगौ ।
वारिवाह मेघपरसत है । जो । पानी परै है ।
तापर अंकुर्यसो लागैहै । जोगी कहै । सो पद
नहीं जागौ जो । पगो । ऐसे । प्रसंगमै तो लट
सो जो तिक कौ बोधहै जापगो पर । जो जो
तिक हैं पगो । सो अंजननाही । सो होयगो । श्र
तु मानसो नहीं होयगो । मेघपरसत है । ईहा
जोगी के कों बोधनपों पैर । ष पनै श्र पैक
रे । अंजननाही सो लगे गो । ऐसे ई प्रतीत
कदिगाजन नौकी दिसा जा नेगे । पै तु रहे है
प्रनीकं । पे । गनाकी । पढ़ै । श्रपी तु मान सो
नहीं । ग्रावैगो । औ । वारिवाह [illegible] गर
मेघ अंजननाहोयगो । ऐसे जा [illegible] सो रस
श्रषाके जनरा विचार हमारे व [illegible] नरासु
व करिके ऐसतंजो वनके उपजै है रिवा
नजहो गुरु कारन सिहारी लोचन सो नेत

कब॰ गेग्रहनेहसोपूरनसरसनेहीरुचकारी
गेहरषेहितलेसकनीतारसबगुननेहेध
नकेकरचारी जेकुलदीपकहेकविते
कुलदीपककीपदहरीलसुधारी २२ वार्त्ता
जेकविकुलदीपकहेतकेसहे जिनोंने
कुलसेवहुविषदीपककीरीतलवनाईहे
किंवाग्रहलवकरीहे कविकोजोवननेदेष
तरोसक्रोधनाही उपजे दीपकोजोवन
केवारनकेरोसनप्रकास उपजेहे कवि
नकोवानजोजगुनआदिकोषानिहे
चौवनीजीनगुनीचोगुनीहे जोपननेव
कोंच्याछेलगेलोपनसोजो निसिधानिलो
लोभ च्याछेलागेहे ग्रहनेह प्रीतगोनेह
नेल नासोपूरनहे चरहेगहे दृषा
कवि सोमिग्रारनहीवनेच्योसरू
नकोका वीरनको रुचचाहकरावनहे
च्योसूरनकोगंधनको नेही रुचकारीको
प्रकासकारी सम्पनोहे कुंवरनिरसो